वार्षिक रिपोर्ट

1978-79

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नवम्बर 1979

कार्तिक 1901

PD 5H

प्रकाशन विभाग में श्री विनोद कुमार पंडित, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा दि कैक्स्टन प्रेस प्रा० लि०, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली में मुद्रित।

विषय-सूची

कृतज्ञता-ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, शिक्षा तथा समाज कल्याण के मंत्री द्वारा परिषद् के कार्यों में गहरी रुचि लेने के लिए अत्यन्त कृतज्ञ है। परिषद् उन सभी विशेषज्ञों के प्रति कृतज्ञ है जो उसकी समितियों में रह कर अपना बहुमूल्य समय उसके कार्यों के लिए देते रहे हैं और अन्य कई प्रकार से परिषद् की सहायता करते रहे हैं। परिषद् उन सभी संगठनों व संस्थाओं और विशेषरूप से राज्य-शिक्षा-विभागों के प्रति भी कृतज्ञ है, जिन्होंने उसके कार्यकलापों को चालू रखने में सहयोग दिया है। परिषद् यूनेस्को, यूनीसेफ, यू० एन० डी० पी० और ब्रिटिश काउंसिल की भी कृतज्ञ है, जिन्होंने सहायता प्रदान की है।

I

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की भूमिका एवं संरचना

स्कूल स्तर की शिक्षा के सुधार के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम के प्रथम चरण की शुरुआत के रूप में भारत सरकार ने कुछ संस्थान सन् 1954 में स्थापित किए। उनके कार्यों और स्कूल सुधार के समस्त कार्यक्रम की समीक्षा के बाद यह तय किया गया कि इन संस्थानों को एक स्वायत्त संगठन के अधीन एक साथ कर दिया जाना चाहिए। इस प्रकार 1 सितम्बर, 1961 को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का जन्म हुआ जिसने इन संस्थानों के कार्य भार को सम्भाल लिया। प्रारम्भ से ही इसने बड़ी सक्रिय भूमिका निभाई है और

समय-समय पर नई-नई चुनौतियों को स्वीकार किया है तथा बदलती हुई राष्ट्रीय जरूरतों और अभिलाषाओं के प्रकाश में इसने अपने को विकसित अथवा रूपान्तरित किया है।

संस्था की विवरणिका के अनुसार, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के उद्देश्य हैं—शिक्षा विशेषकर स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय को नीतियों और प्रमुख कार्यक्रमों को लागू करने की दिशा में सलाह तथा सहायता प्रदान करना। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, परिषद् निम्नलिखित कार्यक्रम और गतिविधियां चलाती है :

(क) शिक्षा के सभी क्षेत्रों में शोध कार्य करना अथवा करवाने के लिए सहायता प्रदान करना, उसे बढ़ावा देना और उनमें समन्वय करना।

(ख) सेवा-पूर्व और सेवा कालीन प्रशिक्षण, विशेषकर उच्च-स्तर के प्रशिक्षण आयोजित करना।

(ग) शैक्षिक अनुसंधान में लगे हुए संस्थानों के लिए विस्तार सेवाओं का, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण का और स्कूलों के लिए विस्तार सेवाओं का आयोजन करना।

(घ) सुधरी हुई शैक्षिक विधियों और अभ्यासों को विकसित करना अथवा उन पर प्रयोग करना।

(ङ) शैक्षिक जानकारी को एकत्र कर सम्पादित करना और फिर उसे प्रचारित-प्रसारित करना।

(च) स्कूल शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए बने कार्यक्रमों को विकसित करने अथवा लागू करने में राज्यों या राज्य-स्तर के संस्थानों की सहायता करना।

(छ) शैक्षिक कार्यक्रमों को विकसित करने में यूनिसेफ, यूनेस्को जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों और अन्य देशों के राष्ट्रीय संस्थानों को सहयोग प्रदान करना। अन्य देशों के शैक्षिक कर्मचारियों को अध्ययन एवं प्रशिक्षण की सुविधाएं देना।

(ज) 'विकास के लिए शैक्षिक नवाचार का एशियाई कार्यक्रम' (एपीड) के राष्ट्रीय विकास दल के सचिवालय के रूप में कार्य करना।

भूमिका और कार्य व्यापार

राष्ट्र के शैक्षिक विकास में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि इसके उद्देश्य और इसकी अद्वितीय स्थिति इससे ऐसी ही अपेक्षा करते हैं। स्कूल स्तर पर समुचित शैक्षिक सामग्री व प्रयोगों को विकसित करके और उनकी जांच परख करके, अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों को आयोजित करके तथा

शैक्षणिक समस्याओं पर शोध की व्यवस्था करके, यह परिषद् शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रभावी रीति से लागू कर पाती है। गत वर्षों में परिषद् ने अपनी अलग ही महत्वपूर्ण स्थिति बना ली है और शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता विकसित कर ली है।

आज के संधि काल में, जबकि देश में शैक्षिक प्रणाली के कायाकल्प के लिए संयुक्त प्रयास हो रहे हैं, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो उठी है। अपने कार्य व्यापार के अन्तर्गत परिषद् ने नई स्कूल शिक्षा पद्धति की जरूरतों के अनुसार पाठ्यपुस्तकों के निर्माण और पाठ्यक्रमों के संशोधन का कार्य-भार हाथ में लिया है। इसने अनौपचारिक शिक्षा के प्रयोगात्मक कार्यक्रमों को भी हाथ में लिया है, ताकि प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के निमित्त प्रमुख मार्ग के रूप में अनौप-चारिक शिक्षा को अपनाने के लिए पर्याप्त अनुभव प्राप्त हो सके। स्कूल शिक्षा के व्यव-सायीकरण के कार्यक्रम के निमित्त पाठ्यक्रमीय और अनुदेशीय सामग्रियों के विकास के लिए किए जाने वाले सर्वेक्षणों को करने में इसने राज्यों की सहायता की है।

अपनी शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) के माध्यम से शिक्षा क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार को परिषद् ने सक्रिय रूप से बढ़ावा और सहारा दिया है। शैक्षिक आवश्यकताओं से सम्बद्ध अनुसंधान करने के लिए परिषद् व्यक्तियों और संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। दूसरों के अनुसंधान कार्यों को बढ़ावा देने के साथ-साथ, परिषद् शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अपने आप महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य करवाती है। शोध कार्य के क्षेत्र में प्रतिभावान व्यक्तियों को आकर्षित और प्रोत्साहित करने के लिए परिषद् फेलोशिप की योजना चलाती है। राष्ट्रीय परिषद् उत्तम पाठ्यपुस्तकें लिखवा कर प्रकाशित करती है। यह प्राथमिक एवं सेकण्डरी कक्षाओं के लिए सस्ते विज्ञान-किटों का और शिक्षण सामग्री तथा प्रयोगशाला के उपकरणों का उत्पादन करती है। नए पाठ्यक्रम के संदर्भ में ये कार्यक्रम और भी सशक्त विधि से चल रहे हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् प्रशिक्षण और विस्तार के कार्यक्रम चलाती है जिनसे अध्यापकों को नवाचार के नए-नए प्रयोगों को अपनाने में सहायता मिलती है। ये गतिविधियां परिषद् के प्रमुख कार्यों में आती हैं। राज्य स्तर पर परिषद् प्रमुख व्यक्तियों को प्रशिक्षित करती है ताकि इस प्रशिक्षण का कई गुना प्रभाव पड़ सके। परिषद् के विभिन्न संघटकों द्वारा प्रशिक्षण और विस्तार तथा अनुसंधान और विकास के क्षेत्रों में किए जाने वाले कार्यों का विवरण इस रिपोर्ट के प्रासंगिक अनुभागों में मिलेगा।

स्कूल शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय परिषद् पाठ्यपुस्तकों, अभ्यास पुस्तिकाओं, शिक्षक दर्शिकाओं, सहायक पठन सामग्री, शोध-प्रबन्धों और पत्रिकाओं आदि का निर्माण और प्रकाशन करती है। यह शैक्षिक सर्वेक्षण भी करती है जिसके परिणामों से स्कूलों की स्थापना में सहायता मिलती है।

शैक्षिक जानकारी (सूचनाओं) का विकीर्णन परिषद् का एक प्रमुख कार्य है। इस गतिविधि के अन्तर्गत परिषद् चार पत्र प्रकाशित करती है जो विभिन्न स्तर के पाठकों के लिए, विभिन्न विषयों से सम्बद्ध हैं। 'इण्डियन एजुकेशनल रिव्यू' मुख्य कर शिक्षा शास्त्रियों और शोध कर्त्ताओं के लिए प्रकाशित किया जाता है और इसमें शोध अनुसंधान विषयक सामग्री दी जाती है। 'जर्नल ऑफ इण्डियन एजुकेशन' शिक्षकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए नवाचार सम्बन्धी सामग्री प्रकाशित करता है। 'स्कूल साइंस' में विज्ञान और स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित सामग्री दी जाती है जो मुख्य कर विज्ञान के अध्यापकों और छात्रों के लिए उपयोगी होती है। 'प्राइमरी टीचर' का प्रकाशन हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में होता है और यह प्राथमिक अध्यापकों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है।

स्कूल शिक्षा के सुधार से सम्बद्ध कार्यक्रमों को सीधे अपने ही हाथों करने के साथ-साथ परिषद् देश की ऐसी पेशेवर संस्थाओं की सहायता भी करती है जो स्कूल शिक्षा से सम्बन्धित कार्य करते हैं। वित्तीय सहायता की इस योजना को परिषद् कई वर्षों से चला रही है। विभिन्न व्यावसायिक शैक्षिक संस्थाओं को वर्ष 1978-79 के दौरान दी गई वित्तीय सहायता का विवरण परिशिष्ट 'क' में दिया गया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् भारत सरकार और अन्य देशों की सरकार के मध्य द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए एक माध्यम (एजेंसी) के रूप में भी कार्य करती है। इस प्रकार यह अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप समस्याओं के विशेष शैक्षिक अध्ययन के निमित्त प्रतिनिधियों को विदेश भेज कर और विकासशील देशों के प्रतिनिधियों के लिए यहां प्रशिक्षण और अध्ययन की व्यवस्था करके शैक्षिक विचारों का द्विपक्षी आदान-प्रदान बनाए रखती है। इस काम को यूनेस्को और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय माध्यमों के तत्वावधान में भी किया जाता है। परिषद् विविध अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियों/सभाओं में भाग लेने के लिए अपने अधिकारियों को भेजती है और विदेशी अतिथियों को अपने यहां बुलाती है। इस प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों के विवरण यथा स्थान दिए गए हैं साथ ही परिशिष्ट 'च' में भी दिए गए हैं।

संरचना एवं प्रशासन

अपनी भूमिका को सामर्थ्य के साथ निभाने और अपने उद्देश्यों को पुरअसर तरीके से प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के मोटे तौर पर पांच प्रमुख संघटक हैं :

(क) सचिवालय जो समन्वय के कार्य करता है और प्रशासन की सुविधाएं जुटाता है।

(ख) दिल्ली स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान जिसमें अनेक विभाग/एकक हैं जो स्कूल शिक्षा के सुधार के लिए महत्वपूर्ण शैक्षणिक कार्यक्रमों के विकास के काम करते हैं।

(ग) अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय जो अध्यापक शिक्षा के नवाचार कार्यक्रमों का विकास करते हैं और उन्हें चलाते हैं।

(घ) दिल्ली स्थित शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र जिसे क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय का दर्जा मिला हुआ है और जो दूर से शिक्षा देने की प्रणालियों तथा अन्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों से सम्बद्ध है।

(ङ) राज्यों के मुख्यालयों में स्थित क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालय जो राज्यों के शिक्षा विभागों और संस्थाओं के साथ सम्पर्क सूत्र बनाए रखते हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का सगठनात्मक ढांचा चार्ट 1 में दिया गया है। परिषद् के लिए निर्णय लेने की जो कार्य प्रणाली है उसके अन्तर्गत अनेक समितियां आती हैं (चार्ट 2)। सर्वोच्च निकाय परिषद् है जिसके अध्यक्ष केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री हैं। उपाध्यक्ष केन्द्रीय शिक्षा राज्य मन्त्री हैं और सभी राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के शिक्षा मन्त्री, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय के सचिव, हर क्षेत्र के विश्वविद्यालयों से चार उप-कुलपति और विख्यात शिक्षक एवं शिक्षाविद इसके सदस्य हैं। परिषद् के सदस्यों की सूची परिशिष्ट ग 1 में दी गई है। परिषद् की बैठक वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य होती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का प्रशासन एक लघु शासी निकाय द्वारा होता है जिसे कार्यकारी समिति कहते हैं। यह समिति अनेक स्थायी समितियों और कार्यक्रम सलाहकार समिति के माध्यम से अपने कार्य करती है। विभिन्न समितियों के सदस्यों की सूचियां परिशिष्ट ग-2, ग-3, ग-4, ग-5 और ग-6 में दी गई हैं। इन समितियों द्वारा वर्ष के दौरान लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय परिशिष्ट घ-1, घ-2 और घ-3 में दिए गए हैं।

परिषद् के सभी कार्यक्रमों की देखभाल और विभिन्न कार्यक्रमों के लिए मार्ग-दर्शी रेखाओं एवं प्राथमिकताओं का निर्धारण करने के लिए कार्यक्रम सलाहकार समिति है जो एक शैक्षणिक निकाय है। कार्यक्रम सलाहकार समिति द्वारा निर्धारित मार्ग-दर्शन को ध्यान में रख कर ही अन्य विभिन्न समितियों और मण्डलों द्वारा परिषद् के कार्यक्रमों पर विचार किया जाता है। सर्व प्रथम विचार तथा अनुमोदन कार्य राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के प्रत्येक विभाग/एकक के विभागीय सलाहकार मण्डल को करना होता है। परिषद् के अन्तर्विभागीय समन्वय के प्रयोजन से अनुमोदन के द्वितीय स्तर पर, उसे शैक्षणिक समिति/समन्वय

चार्ट-1

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की संरचना

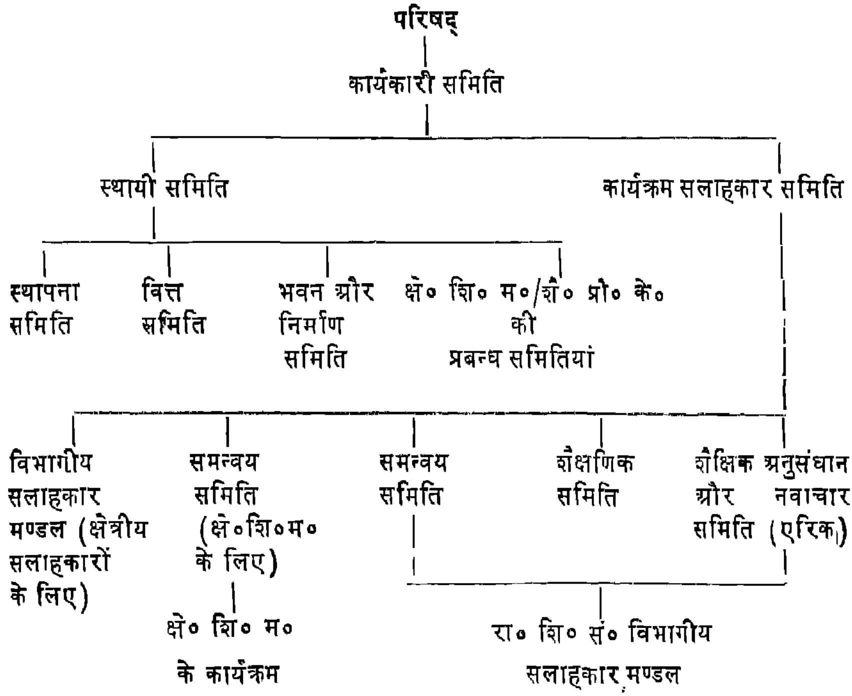
रा० शै० अ० और प्र० प०

- **सचिवालय**
  - स्थापना अनुभाग
  - कार्यक्रम अनुभाग
  - भर्ती अनुभाग
  - क्षे० शि० म० एकक
  - परिसर एवं कल्याण अनुभाग
  - समिति एवं संसद अनुभाग
  - सामान्य अनुभाग
  - क्रय अनुभाग
  - चौकसी (सतर्कता)
  - जन सम्पर्क
  - लेखा शाखा
- **संघटक एकक**
  - क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अजमेर भोपाल भुवनेश्वर मैसूर में स्थित
  - शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र
  - क्षेत्रीय सलाहकार के कार्यालय
    - अगरतला
    - अहमदाबाद
    - इम्फाल
    - इलाहाबाद
    - कलकत्ता
    - गौहाटी
    - चण्डीगढ़
    - जयपुर
    - त्रिवेन्द्रम
    - दिल्ली
    - पटना
    - पुणे
    - बंगलौर
    - भोपाल
    - भुवनेश्वर
    - मद्रास
    - श्रीनगर
    - हैदराबाद
  - राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान
    - (शैक्षणिक विभाग)
      - स्कूल शिक्षा विभाग
      - विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
      - सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
      - अध्यापक शिक्षा विभाग
      - शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा-आधार विभाग
    - (सेवा/उत्पादन विभाग)
      - पाठ्यपुस्तक विभाग
      - शिक्षण साधन विभाग
      - प्रकाशन विभाग
      - कार्यशाला (वर्कशाप) विभाग
    - (एकक/प्रकोष्ठ)
      - राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एकक
      - सर्वेक्षण एवं आधार सामग्री प्रक्रिया एकक
      - नीति, नियोजन एवं मूल्यांकन एकक
      - पुस्तकालय तथा प्रलेखन एकक
      - शिक्षा व्यवसायीकरण एकक
      - परीक्षा सुधार एकक
      - परीक्षा अनुसंधान एकक
      - प्राथमिक पाठ्यचर्या विकास प्रकोष्ठ
      - पत्रिका प्रकोष्ठ

नोट : क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालयों के पतों के लिए परिशिष्ट ख देखिए।

चार्ट-2

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की कार्यविधि



समिति/शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति जांचती है। अनुसंधान कार्यक्रमों की जांच शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) करती है। यही समिति बाहर से प्राप्त अनुसंधान प्रस्तावों तथा परिषद् के अपने अनुसंधान प्रस्तावों को वित्तीय सहायता के लिए स्वीकृत करती है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के शैक्षणिक विभागों के कार्यक्रमों पर डीन (शैक्षणिक) की अध्यक्षता में शैक्षणिक समिति विचार करती है और सेवा/उत्पादन विभागों के कार्यक्रमों पर डीन (समन्वय) की अध्यक्षता में समन्वय समिति विचार करती है।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के लिए भी एक समन्वय समिति है जिसके अध्यक्ष डीन (शैक्षणिक) हैं। प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय की एक प्रबन्ध समिति है जो कि अपने क्षेत्र की राज्य सरकार और वहां के विश्वविद्यालयों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखती है। राज्य सरकार के प्रतिनिधि इस समिति के सदस्य होते हैं और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय जिस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध होता है, उसके उपकुलपति इसके अध्यक्ष होते हैं।

क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालयों के कार्यक्रमों के बारे में परिषद् को सलाह देने के लिए एक सलाहकार मण्डल डीन (समन्वय) की अध्यक्षता में काम करता है। इस मण्डल में राज्य सरकारों के प्रतिनिधि होते हैं। राज्य स्तर पर एक सलाहकार समिति क्षेत्रीय सलाहकार को सलाह देती है। इस समिति के अध्यक्ष सम्बद्ध राज्य के शिक्षा विभाग के सचिव होते हैं।

वर्ष 1978-79 के दौरान परिषद् के मुख्य कार्यकारी निम्नलिखित थे—

निदेशक	: डा० शिव कुमार मित्र
संयुक्त निदेशक	: डा० अतीन्द्र नाथ बोस
सचिव	: श्री वी० आर० द्रवीड़, आई० ए० एस० (10 अगस्त, 1978 तक) श्री विनोद कुमार पण्डित, आई० ए० एस०

डीन

अनुसंधान	: डा० आर० सी० दास
शैक्षणिक	: डा० आर० सी० दास
समन्वय	: डा० अतीन्द्र नाथ बोस

2

नई दिशाएं

परिषद् ने वर्ष 1978-79 के दौरान अपने कार्यक्रमों की प्राथमिकता मुख्यतः सामाजिक महत्व और समग्र आर्थिक विकास के राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए तय की। ये कार्यक्रम इन उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर बनाए गए—सबको शिक्षा के समान अवसर, शिक्षा को आर्थिक विकास से घनिष्ठ रूप से जोड़ना, प्रारंभिक शिक्षा के उन्नयन को आधार रूप में ग्रहण कर समुदाय शिक्षा की व्यवस्था, जनसंख्या वृद्धि के नियंत्रण की वांछनीयता और नैतिक मूल्यों तथा राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ाने की आवश्यकता।

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की दिशा में परिषद् का प्रयास ऐसे कार्यक्रमों को विकसित करने का रहा, जो आबादी के उन शोषित वर्गों की सहायता करते हैं जो शिक्षा से वंचित रहे हैं और जिन्हें शिक्षा की सुविधाएं अवश्य प्रदान की जानी चाहिए चूंकि आर्थिक और सामाजिक कारण उन्हें औपचारिक शिक्षा प्रणाली तक नहीं पहुंचने देते या शिक्षा पूरी करने के पहले ही उन्हें स्कूलों से छुड़ा देते हैं, इसलिए उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनौपचारिक शिक्षा को अपनाना जरूरी है। परिणामस्वरूप परिषद् ने अनौपचारिक शिक्षा की विभिन्न विधियों में प्रयोग किए। ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में, लड़कियों में और अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों में शिक्षा के उन्नयन के लिए विशेष कार्यक्रमों के विकास पर विशेष बल दिया गया।

इस बात को ध्यान में रखकर कि ऐसे शैक्षिक कार्यक्रमों के विकास की जरूरत है जो विशेष वर्गों और विशेष क्षेत्रों की खास जरूरतों के लिए प्रासंगिक हैं, परिषद् ने विकेन्द्रीकृत पाठ्यक्रम प्रतिपादन का प्रायोगिक कार्यक्रम जारी रखा। प्रारम्भिक स्कूल शिक्षकों के सहयोग से प्रासंगिक पाठ्यक्रमीय सामग्री को विकसित करने के साथ-साथ परिषद् ने एक ऐसा कार्यक्रम भी चलाया है जिसके अन्तर्गत संभावित शिक्षकों की सहायता ऐसी पाठ्य सामग्री के निर्माण में की जाती है जो क्षेत्रों और वर्गों के लिए विशिष्ट है और जिसे अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में इस्तेमाल किया जा सकता है। इस प्रकार से विकसित किए गए अधिगम के 'एपीसोड' प्रारंभिक स्कूल के बच्चों के दैनन्दित अनुभवों से सम्बद्ध होते हैं।

प्रारंभिक शिक्षा के उन्नयन के लिए समुदाय की सहायता जरूरी होती है। इसीलिए समुदाय-शिक्षा के समुचित कार्यक्रमों के विकास की दिशा में परिषद् ने अपने प्रयोग जारी रखे। इसका उद्देश्य यह है कि किसी विशेष क्षेत्र में ऐसी शैक्षिक सेवाएं उपलब्ध कराए रखना जो विभिन्न आयु वर्गों की विभिन्न शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

परिषद् के सम्मुख विशेष प्राथमिकता वाला एक काम यह है कि ऐसे कार्यक्रमों का विकास किया जाए जो आर्थिक विकास के कार्य को शिक्षा के साथ घनिष्ठता और अधिक प्रभाव से जोड़ सकें। स्कूल पाठ्यक्रम के अनिवार्य उपादान के रूप में 'सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्य' के प्रवेश से सम्बद्ध कार्य जारी रहा। अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में चलने वाला अनुदेशीय कार्यक्रम इस बात पर जोर देता है कि विद्यार्थियों में ऐसी कुशलताएं बढ़ाई जाएं जो उनकी वर्तमान आमदनी को तो बढ़ाएं ही, साथ ही समुदाय के धन्धों में भी विविधता ला दें। एक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में इस बात का अध्ययन किया गया है कि सेकंडरी स्कूलों में 'सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्य' के अन्तर्गत एक प्रमुख गतिविधि के रूप में खाई जाने वाली खुम्बियों की खेती की क्या सम्भावनाएं हैं। इसी प्रकार परिषद् के एक अन्य संघटक ने जुलाहों की शिक्षा को जारी रखने के पाठ्यक्रम के विकास के लिए एक सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया।

शिक्षा के व्यवसायीकरण के क्षेत्र में परिषद् ने अनुसंधान और विकास कार्य जारी रखा। विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में कोर्सों के विकास के लिए इसने नर्सिंग कौंसिल ऑफ इण्डिया और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् जैसी अनेक संस्थाओं के साथ सहयोगी योजनाएं बनाईं। शैक्षिक और व्यावसायिक क्षेत्र में समुचित चुनाव के लिए छात्रों की मदद करने के वास्ते सेकण्डरी स्तर पर व्यावसायिक खोज के कार्यक्रम को हाथ में लिया गया। सर्वेक्षण करने के लिए, विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में समुचित पाठ्यक्रमों का विकास करने के लिए, शिक्षकों के नवाचार प्रशिक्षण के लिए, और कार्यक्रमों की प्रभावान्विता की जाँच करने के लिए राज्यों को सहायता दी गई।

शैक्षिक प्रक्रम में शिक्षक की महत्ता को समझते हुए परिषद् ने स्कूल शिक्षकों की योग्यता को बढ़ाने की दिशा में पहले की तरह अपने प्रयास जारी रखे। परिषद् ने राज्यों और उनके शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों को उनके अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों के उच्च विकास में सहायता दी है। यह सहायता विशेषकर राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा बनाए गए ढाँचे के आधार पर दी गई है। अध्यापकों के लिए सेवा कालीन प्रशिक्षण के बृहद् कार्यक्रमों के आयोजन में परिषद् ने राज्य सरकारों और राज्य शिक्षा संस्थानों आदि के साथ सहयोग किया। अध्यापक-शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए किए जाने वाले प्रभावकारी उपायों की दिशा में परिषद् ने राज्य अध्यापक शिक्षा मंडलों की भी मदद की। रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा स्थापित अनवरत शिक्षा केन्द्रों ने शिक्षकों की व्यावसायिक आवश्यकता के अनुरूप कार्यक्रमों को जारी रखा। ये केन्द्र एक ऐसे तन्त्र की सुविधा प्रदान करते हैं जिससे शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण विकेन्द्रीकृत आधार पर किए जा सकें। साथ ही वे अध्यापकों को इस बात के अवसर भी देते हैं कि केन्द्र में उपलब्ध शिक्षण-अधिगम के साधनों की जरूरत पड़ने पर वे लाभ उठा सकें। इस योजना की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि खर्च को रा० शै० अ० और प्र० प० तथा राज्य सरकारों के मध्य बराबर-बराबर बाँट लिया जाता है। इससे इस योजना में राज्य सरकारों की रुचि और प्रतिभागिता बराबर बनी रहती है।

समीक्षाधीन वर्ष में एक प्रमुख परिवर्तन यह हुआ कि पाठ्यक्रम विकास का अभिगम बदल गया। यह बोध होने पर कि शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का प्रमुख माध्यम बनना होगा तथा इसी के परिणामस्वरूप जीवन स्तर सुधरेगा, पाठ्यक्रम की परिकल्पना बदल गई है। परिषद् ने पाठ्यक्रम को विभिन्न उन्नतिपरक विचारों के इर्द-गिर्द विकसित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। परिषद् ने पाठ्यक्रम को बच्चे के परिवेश, उसके परिवार और उसके समुदाय से सम्बद्ध कर दिया है।

अब नए पाठ्यक्रम में इस प्रकार के विषय आते हैं—खेतों की सुधरी हुई उपज, गांवों में बिजली पहुंचाना, शहरों की गन्दी बस्तियाँ, लघु उद्योग-धन्धे, वन रोपण, भू-क्षरण, भूमि सुधार, जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा आदि। पाठ्यक्रम में इस बात पर जोर दिया

जाता है कि इस प्रकार के समस्या मूलक विषयों को बच्चे समझ सकें और उनको निपटाने की सामर्थ्य ला सकें।

प्रमुख सामाजिक समस्याओं के बारे में रा० शै० अ० और प्र० प० की चिंता इन बातों से प्रकट होती है—जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा के बारे में सामग्री-निर्माण, आर्थिक गतिविधियों द्वारा उत्पादकता-वृद्धि की जरूरत, तथा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का प्रोत्साहन। छात्रों और शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय एकीकरण शिविरों का आयोजन हुआ ताकि उनके मन मस्तिष्क में सांस्कृतिक विविधता के मध्य देश की एकता के भाव पनप सकें।

शैक्षिक कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने की जिम्मेवारी मूलतः राज्य सरकारों की है। इसलिए राज्य सरकारों के शिक्षा विभागों तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् एवं राज्य शिक्षा संस्थान जैसी राज्य स्तर की संस्थाओं के साथ राष्ट्रीय परिषद् ने स्कूल शिक्षा के सुधार के लिए महत्वपूर्ण शैक्षणिक कार्यक्रमों के उन्नयन एवं कार्यान्वियन की दिशा में सहयोग करना जारी रखा। इन कार्यक्रमों में इस प्रकार के विषय शामिल थे—पाठ्यक्रमों का सुधार, अध्यापकों और प्रमुख जानकार कर्मचारियों का प्रशिक्षण, उन्नत किए गए पाठ्यक्रम के संदर्भ में पाठ्य सामग्री का निर्माण आदि।

अधिगम के नए कौशलों के निर्माण की दिशा में परिषद् ने अपने प्रयोग जारी रखे। परिषद् का शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र शिक्षा के प्रचार-प्रसार के आधुनिक माध्यम खास कर दूर से शिक्षा प्रदान करने की प्रणालियों की सम्भावना की खोज करता रहा है। अधिक प्रभावकारी शिक्षण-अधिगम के सस्ते देशी शैक्षणिक साधनों के निर्माण के लिए शिक्षण साधन विभाग ने राज्यों की सहायता की। विज्ञान शिक्षण की एक ऐसी वैकल्पिक और समाकलित प्रणाली ढूंढ़ ली गई है जिसमें बच्चे के परिवेश में उपलब्ध साधनों का इस्तेमाल किया जाता है। अन्य परिणामों के अलावा इससे यह पता चलता है कि प्रभावकारी विज्ञान शिक्षण के लिए मंहगी प्रयोगशाला की ही जरूरत हो, ऐसी कोई बात नहीं है। इस प्रणाली को बड़ी सफलता के साथ होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम में दिखाया गया है जिसे राष्ट्रीय परिषद् ने सहायता दी है। इस परियोजना का उद्देश्य विद्यार्थियों को अन्वेषणात्मक पद्धति से विज्ञान पढ़ाना है। इस परियोजना ने सोलह ग्राम-स्कूलों से शुरू कर अब पूरे होशंगाबाद जिले को अपने अन्तर्गत कर लिया है। टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, दिल्ली विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा राज्य के महाविद्यालय जैसे प्रमुख संस्थान इस परियोजना में भाग ले रहे हैं।

4

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य और शिक्षा का व्यवसायीकरण

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य और शिक्षा का व्यवसायीकरण स्कूल शिक्षा और आर्थिक विकास को परस्पर जोड़ने का कार्य करते हैं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में ऐसी कुशलताएं बढ़ाना है जो सामाजिक रूप से संगत हैं और जो बाद में समाजोपयोगी तथा उत्पादक नागरिकों के निर्माण में सहायता करती हैं। ईश्वर भाई पटेल समिति ने सिफारिश की है कि शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम में, महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन में संस्तुत समाजोपयोगी उत्पादक कार्य को महत्वपूर्ण दर्जा देना चाहिए और जहां तक सम्भव

हो, स्कूलों के विभिन्न विषयों की पाठ्य सामग्री को उससे सम्बद्ध होना चाहिए। इस कार्यक्रम की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि यह शिक्षार्थी और समुदाय की मूल आवश्यकताओं को स्कूल की गतिविधियों से सम्बद्ध करती है। इसका उद्देश्य बच्चे को काम की दुनिया से परिचित कराना और उसे अकेले या सामूहिक रूप से हाथ के काम करना सिखाना है। इसके द्वारा बच्चों में श्रम का आदर बढ़ेगा और अपने पैरों पर खड़े होने और सहयोग करने जैसे वांछित सामाजिक मूल्य उनमें पनपेंगे।

समीक्षाधीन वर्ष में, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का एक माडल पाठ्यक्रम बनाने के लिए और पाठ्यक्रम बनाने की विधि तथा परिकल्पनाओं के स्पष्टीकरण के लिए एवं विभिन्न गतिविधियों के आयोजन में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए, कई कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कोर्सों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का स्तर निरूपित करने के लिए चुने गए स्कूलों में एक अध्ययन भी किया गया।

शैक्षिक सुधार की एक अनिवार्य विशेषता शिक्षा का व्यवसायीकरण है। यदि हायर सेकण्डरी शिक्षा को सामाजिक रूप से संगत और आर्थिक रूप से विद्यार्थी के लिए सार्थक बनना है तो इसे राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों में समाकलित होना पड़ेगा। राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों में अन्य बातों के साथ बेरोजगारी और नीम बेरोजगारी की समाप्ति, ग्रामोत्थान की सुविधाएं और घरेलू व छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन शामिल है। समुदाय के सीधे उपयोग की कुशलताओं में विद्यार्थी को प्रशिक्षित करके, व्यवसायीकरण का कार्यक्रम राष्ट्रीय विकास के महत्वपूर्ण कार्यों को उल्लेखनीय सहयोग प्रदान करता है।

परिकल्पनाओं के स्पष्टीकरण के लिए, समुचित पाठ्यक्रमीय और अनुदेशीय सामग्री के विकास के लिए और शिक्षकों तथा प्रशासकों के नवाचार के लिए अनेक कार्यक्रम इस वर्ष के दौरान आयोजित किए गए। कृषि, उद्योग, वाणिज्य, चिकित्सा जैसे विविध क्षेत्रों में 84 कोर्सों की जरूरत महसूस की गई जिनके माध्यम से व्यवसायीकरण कार्यक्रम मध्यवर्ती कर्मचारियों को प्रशिक्षित कर सकता है।

विशेषज्ञों के सहयोग से रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा व्यवसायीकरण पर बनाए गए प्रपत्र में जोरदार सिफारिश की गई है कि व्यवसाय सम्बन्धी सभी कार्यक्रमों का नियोजन रोजगार की सम्भावनाओं की आधार सामग्री के आधार पर होगा। इसीलिए 'शिक्षा के व्यवसायीकरण एकक' की एक प्रमुख जिम्मेवारी राज्यों को उनके कार्यक्रम नियोजित करने में सहायता देने के लिए माडल सर्वेक्षण कराने की है। कृषि, वाणिज्य, उद्योग, स्वास्थ्य और गृह विज्ञान के क्षेत्रों में व्यवसाय की सम्भावनाओं का एक अध्ययन आन्ध्र प्रदेश में किया गया था। इस अध्ययन की रिपोर्ट और सिफारिशें राज्य सरकार को भेज दी गई थीं। यह परियोजना समुचित व्यवसायों की पहचान में राज्य की मदद करने के लिए ली गई थी ताकि सेकण्डरी के बाद के स्तर पर व्यावसायिक कार्यक्रम शुरू

किया जा सके। पाठ्यक्रमों को बनाने के लिए राज्य ने समितियां गठित कर ली हैं ताकि शैक्षणिक सत्र 1979-80 के दौरान ही नए कार्यक्रम शुरू किए जा सकें।

चुने गए हायर सेकण्डरी स्कूलों/जूनियर कालेजों/कालेजों में शैक्षिक सत्र 1977-78 के दौरान कर्नाटक और गुजरात ने व्यावसायिक कार्यक्रम शुरू किए। कर्नाटक ने 21 व्यवसायिक कोर्स चुने और 13 चुने हुए जूनियर कालेजों में 1030 छात्रों को भर्ती किया। जबकि गुजरात ने 30 संस्थाओं में 3000 छात्र मुख्यतः वाणिज्य और गृह विज्ञान के कोर्सों में भर्ती किए। कर्नाटक के सभी कोर्स दो वर्षों तक चलने वाले हैं, जबकि गुजरात के कोर्स एक से तीन वर्षों तक चलेंगे। शिक्षा के व्यवसायीकरण एकक ने इन दो राज्यों में मूल्यांकन अध्ययन इसलिए किए थे ताकि ये राज्य अपने संस्थानों द्वारा अनुभूत कठिनाइयों को समझ सकें और उन कठिनाइयों से पार पाने के रास्ते ढूंढ़ सकें। कर्नाटक में दो मूल्यांकन और गुजरात में एक मूल्यांकन पूरा किया जा चुका है। इन मूल्यांकन अध्ययनों की रिपोर्ट और एकक की टिप्पणियाँ सम्बद्ध राज्यों को तथा भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय को भेजी गई थीं। स्थिति को सुधारने के लिए कर्नाटक ने कई कदम उठा लिए हैं और आशा की जाती है कि कोर्सों को और भी आकर्षक बनाने के लिए अगले सत्र में ये राज्य नए कदम उठायेंगे।

इस वर्ष के दौरान कई परिसंवाद आयोजित किए गए।

योजना आयोग के आग्रह पर शिक्षा के व्यवसायीकरण विषय पर दिल्ली में एक दो-दिवसीय परिसंवाद आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न राज्यों के 40 व्यक्तियों ने भाग लिया। परिसंवाद में व्यवसायीकरण की सामान्य विचारधारा, उसकी प्रकृति, जिन राज्यों में व्यावसायिक कार्यक्रम शुरू किए जा चुके हैं उनके सामने आने वाली कठिनाइयों और इस परियोजना को सफलतापूर्वक लागू करने के तरीकों पर विचार-विमर्श हुआ।

कर्नाटक में तीन दिनों का एक परिसंवाद राज्य के व्यवसाय सम्बन्धी संस्थानों के आगे आने वाली समस्याओं पर विचार विमर्श करने के लिए आयोजित किया गया। इस परिसंवाद में जूनियर कालेजों के चालीस अध्यक्षों और व्यवसाय संबंधी कोर्स पढ़ाने वाले शिक्षकों ने भाग लिया। इस परिसंवाद की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि इसमें राज्य के भविष्य के नियोजकों द्वारा विशेष वार्ताएं दी गई जिनमें कई समस्याओं की समीक्षा की गई। इन समस्याओं के विषय थे—कोर्स की कमियाँ, कोर्स के व्यावहारिक पक्ष का सुधार, नौकरियों के अवसर और व्यवसाय संबंधी शिक्षा पाने वाले छात्रों को नियुक्त करने के लिए सरकार द्वारा किए जाने वाले कार्य। विचार-विमर्श से पता चला कि जिन लोगों के पास सही किस्म की शिक्षा और प्रशिक्षण हैं, उनके लिए नौकरियों के सुअवसर अवश्यमेव हैं। यह भी पता चला कि सम्पूर्ण पाठ्यक्रमों को इस प्रकार से निर्मित करने की आवश्यकता है कि नियोजन की पूर्ति शैक्षणिक विषयवस्तु को नष्ट किए बिना ही हो सके। यह बात भी प्रकाश में आई कि यदि कुछ प्रशासनिक रुकावटों को दूर कर दिया जाए, तो कोर्सों के लिए

अपना समर्थन देने में नियोजकों को खुशी होगी।

उत्तर प्रदेश में रा० शै० अ० और प्र० प० के क्षेत्रीय सलाहकार के आग्रह पर 'शिक्षा के व्यावसायीकरण' पर एक परिसंवाद आयोजित किया गया जिसमें 30 लोगों ने भाग लिया। भाग लेने वालों में भूतपूर्व उपकुलपति, विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, राज्य असेम्बली के सदस्य, शिक्षकों की यूनियनों के नेता और राज्य अधिकारी शामिल थे। इसमें एक दिलचस्प अनुभव यह रहा कि राष्ट्रीय परिषद् और अखबारों के प्रचार के बावजूद प्रतिभागियों को व्यवसायीकरण के बारे में सही जानकारी नहीं थी, बल्कि उनकी परिकल्पना कुछ और ही थी। उन लोगों को देश के आर्थिक विकास की आज की परिस्थिति में व्यवसायीकरण की आवश्यकता के बारे में कायल करवा पाना सचमुच ही बहुत कठिन था। कार्यान्वियन के निमित्त सरकार के पास भेजने के लिए एक व्यापक रिपोर्ट तैयार की गई।

वर्ष के दौरान एक अन्य प्रमुख गतिविधि थी—कर्मचारीगण के लिए नवाचार प्रशिक्षण। तमिलनाडु सरकार के आग्रह पर छः नवाचार कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। हर कार्यक्रम में 50 संस्था-अध्यक्षों ने भाग लिया। ये कार्यक्रम कोयम्बटूर, तिरुचिरापल्ली, रामनाथपुरम, कन्याकुमारी, तिरुनेलवेली और तंजावूर में किए गए। इनका उद्देश्य उन स्कूलों की विविध समस्याओं को समझना था, जिन्होंने व्यवसायीकरण के कार्यक्रम चला रखे हैं। ये समस्याएं हैं—अंशकालिक शिक्षकों की नियुक्ति के बारे में, पर्याप्त उपकरण और समुचित शिक्षण सामग्री की व्यवस्था, पाठ्यचर्या की अच्छाइयाँ-बुराइयां, नियुक्ति की परेशानियां, नौकरियों के अवसर और प्रशासनिक समस्याएं। यह पाया गया कि अधिकांश हेडमास्टरों को व्यवसायीकरण कार्यक्रमों के बारे में बहुत कम पता था और कइयों का विचार था कि व्यवसाय सम्बंधी कोर्सों को चलाने के लिए अलग ही स्कूल बनाए जाने चाहिए। एक दिलचस्प प्रेक्षण यह था कि कोर्सों को शहरी केन्द्रों की अपेक्षा ग्रामीण इलाकों में ज्यादा सफलता के साथ चलाया जा रहा है। विकास की एजेंसियों का सहयोग वहाँ शहरों और कस्बों की अपेक्षा ज्यादा आसानी से मिल रहा था।

जिलों का शैक्षिक सर्वेक्षण करने के लिए नियुक्त अधिकारियों का नवाचार कार्यक्रम तमिलनाडु, त्रिपुरा और हरियाणा में किया गया। तमिलनाडु का कार्यक्रम मद्रास में आयोजित किया गया जिसमें 40 अधिकारियों ने भाग लिया जिनमें मुख्य शैक्षिक अधिकारी भी थे। इसी तरह का एक कार्यक्रम अगरतला में और एक गुड़गाँव (हरियाणा) में भी हुआ। इन नवाचार कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य सर्वेक्षण अधिकारियों को 'शिक्षा का व्यावसायीकरण एकक' द्वारा तैयार की गई प्रश्नावलियों का इस्तेमाल सिखाना और आधार सामग्री एकत्र करने की विधियों में प्रवीण करना था। परिणामस्वरूप तमिलनाडु ने छः जिलों में, त्रिपुरा ने एक जिले में और हरियाणा ने दो जिलों में सर्वेक्षण कार्य पूरा कर लिया है।

5

पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें

यदि शिक्षा को सामाजिक दृष्टि का एवं उन अनिवार्य समान मूल्यों का स्रोत होना है, जो विविधता से भरे असमान समाज को एक बनाए रखते हैं, तो जनता की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने की दृष्टि से विकसित किया गया पाठ्यक्रम बहुत जरूरी है। इसलिए इस बात में आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि इस वर्ष के दौरान परिषद् का खास जोर नई शिक्षा प्रणाली के लिए पाठ्यक्रम-विकास, पाठ्यपुस्तकों का निर्माण तथा सम्बन्धित सामग्री के क्षेत्र की ओर ही रहा। पाठ्यक्रम-विकास के लिए किए गए परिषद् के कार्यों की

पुष्टि इन प्रकाशनों से होती है—'एजुकेशनल आब्जेक्टिव्ज एट दि प्राइमरी स्टेज—ए डेवेलपमेंटल एप्रोच' और 'इफेक्टिव यूज आफ स्कूल करीक्यूलम'। ('प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक लक्ष्य—एक विकासात्मक दृष्टि' और 'स्कूल-पाठ्यक्रम का प्रभावी उपयोग')

शैक्षिक लक्ष्यों वाली पुस्तक प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के उन विकासात्मक उद्देश्यों की विस्तृत सूची प्रस्तुत करती है जिन्हें काम शुरू करने के पहले शिक्षकों को भली प्रकार हृदयंगम कर लेना चाहिए। शिक्षक के उपयोग के लिए इसमें एक नमूने का विश्लेषण भी दिया गया है जिससे इन उद्देश्यों के संदर्भ में पाठ्यक्रम का वैचारिक विश्लेषण किया जा सके। इस पुस्तक से यह अपेक्षा है कि यह शिक्षक को यह समझने में मदद करेगी कि स्कूल पाठ्यचर्या (जिसे भ्रमवश पाठ्यक्रम समझ लिया जाता है) प्राथमिक स्तर पर प्रमुख विकासात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में समुचित रूप से सहायक नहीं होती। इसलिए शिक्षक को स्कूल की और स्कूल के बाहर की गतिविधियों द्वारा विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बच्चे को और अधिक अधिगम-अनुभव कराने पड़ सकते हैं।

'स्कूल पाठ्यक्रम का प्रभावी उपयोग' का निर्माण एक परियोजना द्वारा हुआ जिसे परिषद् का स्कूल शिक्षा विभाग चला रहा था। परियोजना का उद्देश्य शिक्षकों की प्रभावकारिता को सुधारना था। इस दृष्टि में शिक्षा के उद्देश्यों के संदर्भ में पाठ्यक्रम का वैचारिक विश्लेषण, शिक्षण अधिगम की नीतियों का विकास और विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए शिक्षण कौशल शामिल था। पाठ्यक्रम के एक महत्वपूर्ण अवधारक के रूप में बच्चे के विकास की विभिन्न स्थितियों में उसकी प्रकृति का महत्व रेखांकित किया गया। इसी प्रकार इस बात की वांछनीयता पर भी जोर दिया गया कि पाठ्यक्रम को बच्चे के परिवेश और समुदाय के इर्द-गिर्द ही होना चाहिए। परियोजना में यह भी शामिल था—कक्षा की और उसके बाहर की गतिविधियों का प्रेक्षण, पाठ्यक्रम का वैचारिक विश्लेषण, बच्चे का अध्ययन और शिक्षकों के उपयोग की समुचित पुस्तकों का निर्माण। इस कार्य में दो विभाग लगे थे—(क) सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग, तथा (ख) विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग। वर्ष 1978-79 के दौरान उनके द्वारा किए गए कार्य का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

सामाजिक विज्ञान

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग ने पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या के विकास और निम्नलिखित विषयों में शिक्षण-सामग्री के निर्माण में उल्लेखनीय कार्य किया है: इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाज विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, हिन्दी (मातृ भाषा और द्वितीय भाषा के रूप में), अंग्रेजी, संस्कृत, ललित कलाएं, नैतिकता और योग। स्कूल शिक्षण से सीधे संबंधित पाठ्यक्रमीय कार्यक्रमों के अलावा

विभाग ने पाठ्यपुस्तकों में देने के लिए जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा, स्त्रियों की स्थिति तथा नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर पाठ्य सामग्री विकसित की है।

विद्यार्थियों के लिए सहायक पुस्तकों और अभ्यास पुस्तकों तथा शिक्षकों के लिए हैंड बुक्स, गाइड बुक्स, सोर्स बुक्स और विभिन्न विषयों में रीडिंग्स आदि के निर्माण में भी विभाग लगा रहा।

जुलाई 1978 में आयोजित एक राष्ट्रीय कार्यगोष्ठी में इस प्रश्न पर विचार-विमर्श हुआ कि पाठ्यपुस्तकों में जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा पर पाठ्य सामग्री किस प्रकार दी जाए। इस कार्यगोष्ठी में शिक्षाविदों, समाज विज्ञानियों और जनसंख्या-वृद्धि की शिक्षा एवं परिवार कल्याण के क्षेत्रों के फील्ड वर्कर्स ने भाग लिया। जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा पर एक सोर्स बुक विकसित की गई। इसमें पांच भाग हैं जिनमें इन विषयों को लिया गया है—जनसंख्या विस्फोट और उसके विविध पक्ष, जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा के कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के तरीके, विभिन्न स्कूली विषयों के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा का शिक्षण, जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा की जनसांख्यिकीय रूपरेखा, संदर्भ ग्रन्थ सूची और पारिभाषिक शब्दों की सूची।

गांधीवादी जीवन मूल्यों के प्रसार के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में कौन सी सामग्री दी जाए यह तय करने के लिए बने एक कार्यकारी दल की तीन बैठकें हुई जिनमें गांधीवादी जीवन मूल्यों की सूची तैयार की गई और उसे पाठ्यक्रम में देने योग्य बनाया गया। गांधीवादी जीवन मूल्यों के संदर्भ में वर्तमान स्कूल पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों के विश्लेषण का काम भी शुरू किया गया। कार्यकारी दल अपनी रिपोर्ट तैयार कर रहा है जिसमें आंध्र प्रदेश, गुजरात, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र की वर्तमान स्कूल पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का गांधीवादी जीवन मूल्यों के संदर्भ में विश्लेषण दिया जाएगा। स्कूली छात्रों की दृष्टि से गांधी लिखित साहित्य की ग्रन्थ सूची और गांधी पर लिखित पुस्तकों की सूची भी तैयार हो रही है।

विभाग का ध्यान इस बात की ओर भी गया है कि छात्रों में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। कार्यकारी दल की एक बैठक नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के लिए जुलाई 1978 में आयोजित की गई। इस महत्वपूर्ण शैक्षिक समस्या, विशेषकर इन मूल्यों की आधुनिक जगत में संगति पर विभिन्न समितियों और आयोगों की सिफारिशों पर कार्यकारी दल के सदस्यों ने विचार-विमर्श किए। कार्यकारी दल ने सिफारिश की कि छोटे बच्चों के मन में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बैठाने के लिए रा० शै० अ० और प्र० प० को ऐसी सहायक पुस्तकों का निर्माण करना चाहिए जो इस दिशा में सहायक हों। ऐसी पुस्तकों के निर्माण का कार्य शुरू कर दिया गया है।

विज्ञान और गणित

स्कूल शिक्षा की नई पद्धति के अनुसार विज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन को अन्तिम रूप देने के कार्य पर ही विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग का प्रमुख जोर इस वर्ष के दौरान रहा। एक प्रमुख कार्यकलाप कक्षा IX के लिए विज्ञान की एक ही पुस्तक विकसित करने का था। यह पुस्तक ईश्वर भाई जे० पटेल समिति की सिफारिशों के अनुसार सेकंडरी स्तर (विज्ञान विकल्प 1) पर विज्ञान के संश्लिष्ट कोर्स पर आधारित है।

सेकण्डरी विज्ञान परियोजना पर होने वाला काम जारी रहा। इस परियोजना के अन्तर्गत कक्षा IX - X में कार्यकलाप अभिमुख शिक्षण होना है जिसमें शिक्षकों के लिए निदर्शन प्रयोग तथा बच्चों के लिए प्रयोगशाला के कार्यकलाप, घरों पर किए जाने वाले कार्यकलाप और पूरक पठन सामग्री शामिल है। कक्षा IX के लिए आवश्यक सामग्री एक कार्य गोष्ठी में शिक्षकों और साधन प्रयुक्त व्यक्तियों द्वारा विकसित की गई थी जिसे विभाग में सुधारा गया। इस सामग्री को नौ स्कूलों में जांचा जा रहा है। इन स्कूलों से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखा गया और कार्यान्वियन में होने वाली कठिनाइयों और उन्हें दूर करने के उपायों पर शिक्षकों से विचार-विमर्श किया गया। कक्षा IX के लिए बनी सामग्री इतनी सुधरी हुई होगी कि उसे हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में निकालना सम्भव होगा ताकि उसका परीक्षण और भी अधिक स्कूलों में हो सके।

वर्ष के दौरान सामाजिक विज्ञानों, भाषाओं, विज्ञान और गणित में प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों और सहायक पुस्तकों की सूची परिशिष्ट छ में दी गई है।

प्राथमिक स्कूलों में पोषण/स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता की अग्रगामी योजना के कार्यान्वियन का काम भी विभाग ने जारी रखा। यह परियोजना कलकत्ता, कोयम्बटूर, जबलपुर, बड़ौदा और लुधियाना के क्षेत्रीय केन्द्रों में चालू है। हर केन्द्र ने अपने यहां की क्षेत्रीय भाषा में एक शिक्षण पैकेज बनाया है जिसमें छात्रों के लिए पाठ्यचर्या, पाठ्य सामग्री (कक्षा II से V तक के लिए) और शिक्षक-प्रशिक्षण स्कूलों के लिए शिक्षक संदर्शिका, शिक्षण के साधन, पाठ्यचर्या और शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए सन्दर्भ सामग्री शामिल है। यह कार्यक्रम शिक्षक-प्रशिक्षकों, पर्यवेक्षकों और प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों के नवाचार के बाद प्रयोगात्मक स्कूलों में शुरू किया गया था। सर्वेक्षण और अनुभवों के बाद यह शिक्षण पैकेज सुधार कर दुबारा बनाया गया है।

वैज्ञानिक रुचि के विभिन्न विषयों पर सहायक पुस्तकें तैयार करने का काम भी विभाग ने किया।

6

अध्यापक शिक्षा : प्रशिक्षण और नवाचार

अध्यापक शिक्षा का सुधार रा० शै० अ० और प्र० प० का एक प्रमुख कार्य रहता आया है। जिन तीन दिशाओं में यह कार्य होता रहा है, वे हैं—अध्यापकों की सेवा-पूर्व और सेवा कालीन शिक्षा का नव-परिवर्तनकारी कार्यक्रम जो क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के माध्यम से होता है, अध्यापक शिक्षा की समस्याओं का अनुसंधान और वर्तमान संस्थाओं के अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों में सुधार लाने के लिए राज्य सरकारों के साथ सहयोग। वर्ष

1978-79 के दौरान जो मुख्य कार्यकलाप शुरू किए गए, उन्हें नीचे दिया जा रहा है :

सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम

सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम क्षेत्रीय स्तर पर अजमेर, भुवनेश्वर, भोपाल और मैसूर स्थित क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित होते रहे। इन महाविद्यालयों में निम्नलिखित कोर्स चलते हैं।

विज्ञान तथा कलाओं में चार-वर्षीय कोर्स

चूंकि इन महाविद्यालयों में जुलाई 1976 से ही चार-वर्षीय कोर्स समाप्त कर दिए गए थे, इसलिए केवल अंतिम वर्षीय कोर्स ही चलाए गए। केवल मैसूर में विज्ञान का चार-वर्षीय कोर्स चल रहा है। इन महाविद्यालयों में प्रवेश लेने वालों की संख्या 1978-79 के दौरान इस प्रकार है :

अजमेर	बी. एससी. बी. एड. (फाइनल वर्ष)
भोपाल	बी. एससी. बी. एड. (फाइनल वर्ष)
भुवनेश्वर	बी. एससी. बी. एड. (फाइनल वर्ष)
भुवनेश्वर	बी. ए. बी. एड. (फाइनल वर्ष)
मैसूर	बी. ए. बी. एड. (फाइनल वर्ष)
मैसूर	बी. एससी. बी. एड. (चार वर्षीय कोर्स)

एक वर्षीय बी. एड. कोर्स

सभी क्षेत्रीय महाविद्यालय विभिन्न विषयों में एक-वर्षीय बी. एड. कोर्स चलाते हैं जिसमें कोई भी स्नातक प्रवेश ले सकता है। हालांकि इस कोर्स की अवधि वही है जो देश के अन्य भागों में प्रचलित है, फिर भी क्षेत्रीय महाविद्यालयों के प्रशिक्षण कार्यक्रम की कुछ अपनी ही नवीनता और प्रायोगिकता वाली विशेषताएं हैं। उदाहरण के लिए शिक्षण अभ्यास की विधि के रूप में लम्बी अवधि वाली इंटर्नशिप, आंतरिक मूल्यांकन और समाकलित कंटेंट-कम-मेथड कोर्स। प्रशिक्षार्थियों को कार्य-अनुभव और समाजोपयोगी उत्पादक कार्य जैसे क्षेत्रों में भी नवाचार से युक्त किया जाता है। सन् 1977-78 से प्रारम्भिक शिक्षा पर एक विशेषीकृत बी. एड. कोर्स शुरू किया गया है।

विभिन्न कोर्सों में प्रवेश लेने वालों की संख्या नीचे दी जा रही है

	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
विज्ञान	114	69	113	92
भाषाएं	159	77	72	—
वाणिज्य	39	32	15	—
कृषि	8	5	—	—
बी. एड. (प्रारम्भिक)	—	39	—	18
	320	222	200	110

एम. एड. कोर्स

अजमेर, भोपाल तथा भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय एम. एड. की उपाधि के लिए एक एक-वर्षीय स्नातकोत्तर कोर्स शिक्षा विषय में चलाते हैं। अलग-अलग महाविद्यालयों में अलग-अलग विशेषज्ञ कोर्स चलते हैं। 1978-79 के दौरान निम्नलिखित प्रविष्टियां रहीं—

महाविद्यालय	विशेषज्ञता	प्रवेश
अजमेर	विज्ञान शिक्षा	32
भोपाल	प्रारम्भिक शिक्षा	10
भुवनेश्वर	पाठ्यक्रम-निर्माण शैक्षिक प्रशासन और शैक्षिक मापन	32

एम. एससी. एड कोर्स

गणित, भौतिकी तथा रसायन विज्ञान विषयों में शिक्षण के प्रणाली-विज्ञान के साथ एक दो-वर्षीय स्नातकोत्तर कोर्स मैसूर का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय चलाता है। 1978-79 में इस कोर्स में 77 लोगों ने प्रवेश लिया। भुवनेश्वर का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय जीव-विज्ञान विषय में शिक्षण के प्रणाली-विज्ञान के साथ स्नातकोत्तर कोर्स चलाता है। 1978-79 में इस कोर्स में 20 लोगों ने प्रवेश लिया।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के सेवाकालीन डिगरी शिक्षा के कार्यक्रम

बी. एड. (ग्रीष्म स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स)

सेकंडरी स्कूलों के अप्रशिक्षित रह गए अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए चारों क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, बी. एड. की डिगरी प्रदान करने वाले ग्रीष्म स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स चलाते हैं जो नौकरी करने वाले शिक्षकों के लिए हैं। शिक्षकों को दो लगातार ग्रीष्म अवकाशों में प्रशिक्षित किया जाता है और दोनों अवकाशों के बीच के सत्र में भी पठन सामग्री पत्राचार द्वारा भेजी जाती है। कोर्स की समाप्ति के बाद वे विश्वविद्यालय में बी. एड. की डिगरी के लिए परीक्षा देते हैं। यह कोर्स अत्यन्त लोकप्रिय है और 1978-79 के दौरान इस कोर्स में प्रवेश लेने वालों की संख्या इस प्रकार है—

अजमेर	212
भोपाल	245
मैसूर	250
भुवनेश्वर सैकंडरी	260
एलीमेंटरी	103

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के अन्य सेवाकालीन कार्यक्रम

किसी क्षेत्र की आवश्यकताओं के आधार पर या राज्य सरकारों के आग्रह पर क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अल्पकालिक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। वर्ष 1978-79 के दौरान कार्यान्वित किए गए कुछ कार्यक्रम संलग्नक I में दिखाए गए हैं।

सदैव की भांति, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों ने राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों तथा राज्य शिक्षा संस्थानों के महत्वपूर्ण केन्द्रीय कर्मियों और शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के कार्यक्रम किए। वर्ष के दौरान आयोजित किए गए महत्वपूर्ण सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में से कुछ को संलग्नक II में दिखाया गया है।

शिक्षा की राष्ट्रीय नीति के कार्यान्वयन के लिए अध्यापक शिक्षा को एक प्रभावकारी उपकरण बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अध्यापक-शिक्षा विभाग ने अध्यापक शिक्षा के सुधार को अपना लक्ष्य बनाया है। विभाग ने अध्यापक शिक्षा पर अनुसंधान कराए। पाठ्यक्रमीय और अनुदेशीय सामग्री विकसित की, विभिन्न राज्यों के साथ सहयोग

करके विकासात्मक कार्यक्रम किए और नव परिवर्तन तथा प्रयोगों को बढ़ावा दिया। वर्ष के दौरान जिन प्रमुख कार्यक्रमों को विभाग ने कार्यान्वित किया, उनमें ये भी हैं :

(क) शिक्षण-कौशल पर मल्टी मीडिया किट के विकास पर कार्य, माइक्रो-टीचिंग की परिकल्पना वाली पाँच फिल्मों में से एक तैयार है।

(ख) एक अग्रगामी परियोजना का कार्यान्वयन यह देखने के लिए कि नौकरी में लगे हुए शिक्षक की सामान्य योग्यता को सुधारने में माइक्रो-टीचिंग का उपयोग कहां तक उचित है।

(ग) प्रशिक्षण संस्थाओं के शिक्षक-प्रशिक्षकों द्वारा बनाए और जांचे गए नव-परिवर्तनकारी विचारों पर सेमिनार रीडिंग्स के आयोजन।

(घ) माइक्रो-टीचिंग पर राज्य शिक्षा संस्थानों एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों के कर्मचारियों का नवाचार।

(ङ) हरियाणा में अध्यापकों की जरूरतों के पूर्व विधान के लिए कार्यविधियों का विकास।

अध्यापक-शिक्षा विभाग राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के सचिवालय का काम भी करता है जो अपनी समितियों के माध्यम से कार्य करती है। उसकी शैक्षणिक समितियों की बैठकें इस वर्ष आयोजित की गईं। अन्य बातों के साथ-साथ इन समितियों ने जो सिफारिशें की हैं, वे पाठ्यक्रमीय रूपरेखा के कार्यान्वयन से सम्बद्ध हैं। वे हैं—अध्यापक शिक्षा का सम्बद्धीकरण, मानसिक और शारीरिक रूप से अक्षमता वाले बच्चों के विशेष स्कूलों के लिए अध्यापक शिक्षा की जरूरतों के पाठ्य-कमीय-रूपरेखा-सर्वेक्षण पर आधारित शिक्षण सामग्री और पाठ्यपुस्तकों का निर्माण, आदि। इन सिफारिशों के अनुवर्ती कार्य के रूप में विभाग ने विकास और प्रशिक्षण के कार्यक्रम शुरू कर दिए हैं।

शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा-आधार विभाग व्यावसायिक मार्ग-दर्शन और परामर्श का एक नौ-महीने वाला डिप्लोमा कोर्स नई दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में चलाता है। यह कोर्स शिक्षकों के लिए तो है ही साथ ही सेवा कालिक शिक्षकों/शिक्षक प्रशिक्षकों/परामर्शदाताओं आदि के लिए भी है। यह छात्रों को शैक्षिक और व्यावसायिक रुचियों को चुनने में मदद देने वाले स्कूलों में नौकरी करने वाले परामर्शदाता और मार्ग-दर्शक कर्मियों को तैयार करने में सहायता करता है।

संलग्नक I

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों द्वारा आयोजित सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम

अजमेर

1. सेकण्डरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए पत्राचार-सह-सम्पर्क कोर्स ।
2. भूगोल पढ़ाने के प्रणाली-विज्ञान पर संगोष्ठी ।
3. हिसाब-किताब (बुक कीपिंग) और व्यापारिक-व्यवहार (कमर्शियल प्रैक्टिस) की पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा के लिए कार्यगोष्ठी ।
4. उपलब्धि अभिप्रेरण को बढ़ाने पर कार्यगोष्ठी ।
5. रसायन विज्ञान के +2 स्तर के पाठ्यक्रम के कठिन विषयों के अभिज्ञान और समाधान के लिए कार्यगोष्ठी ।
6. प्रारम्भिक कक्षाओं में गणित पढ़ाने की शिक्षण-सामग्री के नियोजन और निर्माण के लिए कार्यगोष्ठी ।
7. प्राथमिक स्तर के गणित की शिक्षण-सामग्री पर कार्यगोष्ठी ।
8. अनुसंधान की तैयारी पर कार्यगोष्ठी ।
9. माइक्रो-टीचिंग पर कार्यगोष्ठी ।

भोपाल

1. सेकण्डरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए पत्राचार-सह-सम्पर्क कोर्स ।
2. मध्य प्रदेश के जनजातीय स्कूलों में काम करने वाले अंग्रेजी के अध्यापकों के लिए संवर्धन कोर्स ।
3. शिक्षण के रचनात्मक तरीकों पर कार्यगोष्ठी ।
4. एम० एस० और गोआ के प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए जनसंख्या, सुरक्षा और स्वास्थ्य शिक्षा पर कार्यगोष्ठी ।
5. पत्राचार के पाठ लेखन में प्रशिक्षण के लिए भौतिकीय विज्ञान, जीव-विज्ञान और गणित के अध्यापक शिक्षकों के लिए कार्यगोष्ठी ।
6. कृषि शिक्षण और नव परिवर्तनों पर कार्यगोष्ठी ।
7. सेकण्डरी स्कूलों के पुस्तकाध्यक्षों के लिए पुस्तकालय-प्रबन्ध पर कार्यगोष्ठी ।

8. वाणिज्य अध्यापकों के लिए कार्यगोष्ठी ।

9. ग्राफिक आर्ट्स और माडेलिंग पर कार्यगोष्ठी ।

भुवनेश्वर

1. सेकण्डरी स्कूलों के शिक्षकों और अध्यापक-शिक्षकों के लिए आठ विषय तत्वों में पत्राचार-सह-सम्पर्क कार्यक्रम ।
2. पढ़ाई के बीच में ही स्कूल छोड़ जाने वालों की जरूरतों के निमित्त विविध धंधों में छ: महीने की अवधि वाला व्यावसायिक कार्यक्रम ।
3. भौतिकीय विज्ञान, जैविक विज्ञान और गणित में बिहार के केन्द्रीय व्यक्तियों के लिए नवाचार ।
4. प्रौढ़ शिक्षा के नियोजन और क्रिया की नीतियों पर संगोष्ठी ।
5. उड़ीसा के कृषि शिक्षकों के लिए सेवाकालीन कोर्स ।
6. प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए शैक्षिक अनुसंधान के तत्वों पर कार्यगोष्ठी ।
7. जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा (पोर्ट ब्लेयर) ।
8. प्राथमिक शिक्षा में नव परिवर्तनकारी अभ्यास (मिर्जा, असम) ।
9. समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के शिक्षकों का प्रशिक्षण ।
10. एम०एड०/बी०एड० के लिए पाठ्यचर्या के विकास पर कार्यगोष्ठी ।
11. शैक्षिक तकनीकी पर नवाचार कार्यक्रम ।
12. सेकेण्डरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए अंग्रेजी भाषा का शिक्षण (शिलाङ) ।
13. सेकेण्डरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए अंग्रेजी भाषा का शिक्षण (जोरहट, असम) ।
14. बच्चे की खेल सामग्री पर कार्यगोष्ठी ।

मैसूर

1. तमिलनाडु के हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अध्यक्षों को प्रशिक्षित करने के लिए केन्द्रीय व्यक्तियों का नवाचार ।
2. केरल के शिक्षकों के लिए भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और गणित के साधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण ।
3. कर्नाटक के शिक्षकों के लिए +2 स्तर पर प्रश्न बैंक की कार्यगोष्ठी ।
4. कर्नाटक के सेकेण्डरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए जीव विज्ञान में वस्तुतत्व-सह-प्रणाली-विज्ञान में कार्यगोष्ठी ।

5. दक्षिणी क्षेत्र के सेकेण्डरी स्कूलों के शिक्षकों के लिए पत्राचार-सह-सम्पर्क कार्यक्रम के पाठों का संशोधन।
6. प्रारम्भिक शिक्षकों के लिए सम्पर्क कार्यक्रम (पहली टोली)।
7. माइक्रो-टीचिंग पर संगोष्ठी।
8. पांडिचेरी के मिडिल और हाई स्कूलों के अध्यक्ष के लिए प्रशासन और पर्यवेक्षण की तकनीकों का कोर्स।
9. प्रारम्भिक शिक्षकों के लिए सम्पर्क कार्यक्रम (दूसरी टोली)।
10. आंध्र प्रदेश के लिए पत्राचार-सह-सम्पर्क कार्यक्रम के वास्ते पाठों के निर्माण की तकनीकों में केन्द्रीय व्यक्तियों के लिए नवाचार कार्यक्रम।
11. कर्नाटक में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं पर संगोष्ठी।
12. नांजनगुड के प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिए दृश्य-श्रव्य-शिक्षा पर कार्यगोष्ठी।
13. परिवेश अध्ययन पर कार्यगोष्ठी।
14. माइक्रो-टीचिंग पर नवाचार-संगोष्ठी।
15. कक्षा XI की भौतिकी की पाठ्यपुस्तकों की अध्यापक दर्शिका के निर्माण पर कार्यगोष्ठी।
16. कक्षा I से X तक के लिए शारीरिक शिक्षा में पाठ्यक्रम का मसौदा बनाने के लिए कार्यकारी दल की बैठक।
17. कर्नाटक के भूगोल शिक्षकों की कार्यगोष्ठी।
18. गणित में कार्यगोष्ठी।
19. अध्यापक शिक्षकों को संगोष्ठी रीडिंग का पुरस्कार देने के लिए चुने गए लेखों पर विचार-विमर्श।
20. पत्राचार शिक्षा पर संगोष्ठी।
21. सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन सामग्री पर संगोष्ठी।
22. हिन्दी में शब्द भण्डार तैयार करने पर कार्यगोष्ठी।

संलग्नक II

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों द्वारा आयोजित सेवा कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम

(क) विज्ञान

1. रा० शै० अ० और प्र० प० ने भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और गणित में 37 ग्रीष्म विज्ञान संस्थान आयोजित किए और इन संस्थानों में 1744 शिक्षकों को प्रशिक्षित करके उन्हें हायर सेकेण्डरी स्तर पर पढ़ाने के योग्य बनाया।

2. परिवेश अध्ययन में सेवाकालीन अध्यापक-शिक्षा के कर्मियों के प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परियोजना पर कार्य जुलाई 1978 में शुरू किया गया। दो अंग्रेज विशेषज्ञ—मिस्टर आर० एफ० मॉर्गन और मिस्टर आर० मैंशी—इस परियोजना से सम्बद्ध रहे। स्लाइड, आडियो टेप और प्रशिक्षण की दूसरी सामग्री विकसित की गई। साधन व्यक्तियों की प्रशिक्षण संगोष्ठी/कार्यगोष्ठी दिसम्बर 1978 में हुई। इसके बाद कोयम्बटूर में पूर्वी क्षेत्र की दो क्षेत्रीय कार्यगोष्ठियाँ हुईं।

3. विज्ञान क्लबों/कार्य कलापों के लिए प्रयोगों की तैयारी में और स्कूलों में विज्ञान क्लब शुरू करने के बारे में, विज्ञान क्लब प्रवर्तकों के प्रशिक्षण के लिए श्रीनगर में एक कार्यगोष्ठी हुई।

(ख) सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी

4. अंग्रेजी के शिक्षकों के लिए गहन कोर्स

केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय संगठन के लगभग 80 अंग्रेजी शिक्षकों के लिए दो दस-दिवसीय गहन कोर्सों का आयोजन परिषद् ने मसूरी में 29 मई से 8 जून, 1978 तक और कलिमपॉङ में 16 से 25 अक्तूबर 1978 तक किया।

5. अंग्रेजी में नवाचार कोर्स

आंध्र शिक्षा समाज द्वारा चलाए जा रहे 5 स्कूलों के प्राथमिक और मिडिल स्तर के शिक्षकों के लिए अंग्रेजी में छ: दिनों का एक नवाचार-कोर्स आयोजित किया गया।

6. भाषा प्रयोगशाला का प्रशिक्षण कार्यक्रम

कलकत्ता के अंग्रेजी संस्थान की भाषा प्रयोगशाला में भाषा प्रयोगशाला का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 15 से 23 दिसम्बर 1978 तक आयोजित किया गया।

7. प्रौढ़ शिक्षा में नवाचार कार्यक्रम

दिल्ली के संघ शासित क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे शिक्षकों व पर्यवेक्षकों के लिए एक नवाचार कार्यक्रम 19 से 28 फरवरी, 1978 तक आयोजित किया गया।

8. भूगोल में नवाचार कार्यक्रम

भूगोल के शिक्षकों/अध्यापक शिक्षकों को केन्द्रीय भूमिका निभाने में सक्षम करने के लिए दो दस-दिवसीय नवाचार कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पहला कार्यक्रम कर्नाटक राज्य के लिए मैसूर के क्षे० शि० म० में 19 फरवरी 1979 से शुरू हुआ और दूसरा कार्यक्रम केरल राज्य के लिए त्रिवेन्द्रम में 13 से 22 नवम्बर, 1978 तक हुआ। इन राज्यों के 70 शिक्षकों ने कार्यक्रमों में भाग लिया।

9. ग्रीष्म संस्थान

निम्नलिखित विषयों में 62 ग्रीष्म संस्थान आयोजित किए गए : अंग्रेजी-15, हिन्दी-14, संस्कृत-4, इतिहास-9, भूगोल-5, अर्थशास्त्र-9 और राजनीति विज्ञान-6।

(ग) अध्यापक-शिक्षक

10. एलीमेंटरी और सेकण्डरी अध्यापक-शिक्षकों के लिए सेमीनार रीडिंग्स में एक राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सात सेकण्डरी अध्यापक-

शिक्षकों और दस एलीमेंटरी अध्यापक-शिक्षकों को पुरस्कृत किया गया।

11. सम्भावित अध्यापकों की सामान्य शिक्षण योग्यता को विकसित करने के लिए माइक्रो-टीचिंग तकनीकों के प्रयोगों में एक छः-दिवसीय नवाचार कार्यक्रम मैसूर में आयोजित किया गया। विभिन्न राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के 49 व्यक्तियों ने प्रशिक्षण से लाभ उठाया।

12. पूर्वी राज्यों के सेकण्डरी अध्यापक-शिक्षकों के लिए माइक्रो टीचिंग में एक क्षेत्रीय प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हुआ।

(घ) शैक्षिक मनोविज्ञान और मार्ग-दर्शन

13. जबलपुर के शैक्षिक मनोविज्ञान और मार्ग-दर्शन के महाविद्यालय में उत्तरी एवं पश्चिमी क्षेत्रों के जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान (मार्ग-दर्शन और शिक्षण) में एक नवाचार कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम ने जिला शिक्षा अधिकारियों को शैक्षिक मनोविज्ञान के नए विकासों से नवाचारित किया। शैक्षिक कार्यक्रम के नियोजन, आयोजन और प्रशासन में तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण में जिला शिक्षा अधिकारियों की भूमिका पर विस्तार से विचार-विमर्श हुआ।

14. शैक्षिक मनोविज्ञान के साम्प्रतिक विकासों में राज्य शिक्षा संस्थान के कर्मियों को नवाचारित करने के लिए और प्राथमिक श्रेणियों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के सुधार के लिए नीति निर्धारण करने के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान (अधिगम और विकास) में एक नवाचार कार्यक्रम आयोजित किया गया।

15. शैक्षिक और व्यावसायिक मार्ग-दर्शन में डिप्लोमा कोर्स के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। नौ महीने का यह प्रशिक्षण कोर्स उन लोगों के लिए था जो स्कूल परामर्शदाता के तौर पर काम करने की तैयारी कर रहे थे। 1978-79 के दौरान इस कोर्स में 23 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित किया गया।

16. मेघालय के कैरीयर मास्टरों और स्कूल शिक्षकों के लिए शिलॉङ में कैरीयर मास्टरों का एक प्रशिक्षण कोर्स आयोजित किया गया।

(ङ) मापन और मूल्यांकन

17. मद्रास के लायोला महाविद्यालय के शैक्षणिक सदस्यों के लिए शिक्षण-प्रणालियों एवं मूल्यांकन तकनीकों पर एक नवाचार कोर्स आयोजित हुआ।

18. शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर पर मूल्यांकन-अभ्यासों के सुधार के निमित्त नीति विकसित करने के लिए शैक्षिक मूल्यांकन में एक अखिल भारतीय प्रशिक्षण कोर्स शिमला में जून 1978 में आयोजित किया गया।

(च) व्यावसायीकरण

19. व्यावसायिक कार्यक्रमों को शुरू करने वाले स्कूलों के सामने आने वाली समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए तमिलनाडु में मार्च 1979 के दौरान छः नवाचार कार्यक्रम आयोजित किए गए।

20. पाठ्यपुस्तक लेखकों और समीक्षकों के लिए एक नवाचार-सह-प्रशिक्षण-कार्यक्रम पटियाला में 25 से 29 अक्तूबर, 1978 तक आयोजित किया गया।

21. इसी प्रकार का एक कार्यक्रम हैदराबाद में मार्च 1979 से आयोजित किया गया।

7

अनुसंधान, नव परिवर्तन और सर्वेक्षण

अनुसंधान और नव परिवर्तन

परिषद् का एक महत्वपूर्ण कार्य अनुसंधान है। परिषद् शिक्षा की विभिन्न शाखाओं में अनुसंधान के कार्यकलाप को चलाती है उन्हें सहायता देती है, बढ़ावा देती है और यथासंभव रीति में उनमें समन्वय स्थापित करती है। परिषद् की शैक्षिक अनुसंधान तथा नवाचार समिति, जिसे प्राय: 'एरिक' नाम से जाना जाता है, परिषद् के सभी विभागों तथा संघटक एककों से प्राप्त अनुसंधान प्रस्तावों और परियोजनाओं पर विचार कर उन्हें अनुमोदन प्रदान करती है। परिषद् के बाहर के व्यक्तियों और संस्थाओं की

अनुसंधान परियोजनाओं को अनुदान उपलब्ध कराना भी एरिक का ही काम है। वित्तीय सहायता के लिए परिषद् के पास आए अनुसंधान प्रस्तावों का मूल्यांकन करने के लिए इसने एक मानक प्रक्रिया अपना रखी है। नई प्रतिभाओं को अनुसंधान की ओर प्रेरित करने के लिए एरिक की ओर से स्नातकोत्तर और डाक्टरोत्तर स्तर की कई फेलोशिप भी दी जाती हैं। परिषद् की शैक्षिक अनुसंधान तथा नवाचार समिति (एरिक) द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों में से एक है—शैक्षिक अनुसंधान के लिए प्राथमिकता वाले उन क्षेत्रों को छांटना जिन्हें रा० शै० अ० और प्र० प० की वित्तीय सहायता की आवश्यकता हो सकती है। हालांकि इस प्राथमिकता का यह अर्थ नहीं है कि इनके कारण अन्य संगत प्रस्तावों पर विचार ही नहीं किया जाएगा, फिर भी परिषद् को सहायता के लिए चयन की विधि अपनानी पड़ी है क्योंकि एरिक के साधन सीमित हैं।

शिक्षा के इलाके में प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में से एक है—चौदह वर्ष की उम्र तक के सभी बच्चों को अनिवार्य तथा मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था करने से सम्बन्धित संवैधानिक निदेश की पूर्ति। अनुसंधान और नव परिवर्तन, जो शिक्षा की परिधि में समाज के कमजोर वर्गों, विशेषकर अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों की लड़कियों और बच्चों को ले आने में मदद करेंगे, प्रोत्साहित किए जा रहे हैं। इस कार्यक्रम में अनुसंधान निवेश कई प्रकार का है: स्कूल न जा पाने वाले बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए एक संभावित रीति-नीति के रूप में अनौपचारिक शिक्षा के प्रयोग; स्वयं-शिक्षा के तरीके और व्यवस्था उत्पन्न करना; शिक्षा की ऐसी नई रीति-नीति का विकास करना जो शिक्षकों और कक्षाओं के इस्तेमाल पर निर्भर नहीं करती खास कर उन इलाकों के लिए जहां स्कूलों की स्थापना कर पाना आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं है; सम्भाव्य सामाजिक और शैक्षिक हस्तक्षेप जो वंचना के प्रभावों को कम कर देंगे; विकासोन्मुख शैक्षिक रूपरेखाओं की तैयारी जिससे कि शिक्षा को आर्थिक विकास के कार्यक्रमों से जोड़ा जा सके और मानवीय साधनों के अधिकतम विकास पर जोर दिया जा सके; विशिष्ट पाठ्यक्रम पर कार्य जिससे कि विभिन्न वर्गों के लोगों की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके; ऐसी प्रणालियों का विकास जिनसे बच्चों को अधिक से अधिक सिखाया जा सके।

ऊपर बताई गई बातों से उन महत्वपूर्ण समस्याओं की जानकारी मिल जाती है जिनको तुरन्त सुलझाना है, इनके बारे में अनुसंधान करने से शिक्षा-प्रक्रम की समझ और भी बढ़ेगी। आगे गिनाई जा रही बातों की समस्याएं भी स्कूल शिक्षा की प्रणाली की प्रभाव अन्विता को सुधारने की दृष्टि से किसी भी तरह से कम महत्वपूर्ण नहीं हैं—कक्षा, शिक्षक की प्रभाव अन्विता, सेवाकालीन शिक्षा, शैक्षिक प्रशासन और पर्यवेक्षण, शिशु विकास और अधिगम प्रक्रम, पाठ्यक्रम का विश्लेषण और विकास, नैतिक और धर्म निरपेक्ष शिक्षा के विषय तत्व और तरीकों के विशिष्ट संदर्भ में परिवर्तनशील संस्कृति और मूल्य। इनको भी

समर्थन दिया जाएगा किन्तु किसको कितनी सहायता की आवश्यकता है, यह सापेक्ष प्राथमिकता पर निर्भर करेगा ।

पूरी हो चुकी अनुसंधान परियोजनाएं

संलग्नक I और II में क्रमशः 25 विभागीय और 15 बाहर की पूरी हो चुकी परियोजनाओं की सूची दी गई है । उनके सार तत्व को 'एरिक' की दूसरी रिपोर्ट में प्रकाशित किया जा चुका है । इस वर्ष के दौरान कुछ अनुसंधान परियोजनाएं पूरी हुई हैं जिनकी संक्षिप्त रूपरेखा नीचे दी जा रही है ।

विभागीय परियोजनाएं

1. क्रमनिर्धारण पर अनुसंधान

विषयों में स्तरों का तुलनात्मक क्रम कैसे निर्धारित किया जाए, यह परीक्षा-सुधार की एक महत्वपूर्ण समस्या है । इसी पर इस अध्ययन में खोज की गई ।

किसी विषय में उसके कोर्स तत्व, पढ़ाने के तरीके, उत्तर पुस्तिकाओं में अंक देने की परम्परा और परीक्षा परिणाम को लेकर तथा छात्रों की रुचियों और परिवर्तनशील प्रेरणाओं के बारे में भी, एक आंतर्भूत कठिनाई, की धारणा प्रतीत होती है । हायर सेकण्डरी स्तर पर पाठ्यक्रमीय विषयों के स्तरों की विभिन्नता का अध्ययन करने की कोशिश इस परियोजना में की गई है ।

सेंट्रल बोर्ड आफ सेकण्डरी एजुकेशन की 1975 की हायर सेकण्डरी परीक्षा में बैठने वाले छात्रों के एक बड़े और प्रतिनिधि वर्ग पर यह अध्ययन किया गया । किन्हीं विषयों के जोड़ों को लेने वाले सभी छात्रों के औसत क्रम निर्धारण को लेकर और किसी विशिष्ट विषय (अंग्रेजी), जो सभी जोड़ों में समान था, में अंक प्रदान कर, विषयों के स्तरों की तुलना की गई ।

2. विज्ञान-कोर्सों के शिक्षण-अधिगम-मूल्यांकन प्रक्रम में निष्पादन-आधारित प्रशिक्षण की प्रभाव अन्विता का विज्ञान शिक्षकों द्वारा एक अध्ययन

शिक्षण-अधिगम-मूल्यांकन प्रक्रम को सुधारने के प्रयास से पता चला है कि शिक्षकों को स्पष्ट रूप से यह बताने की जरूरत है कि वे सीखने वालों से कितनी योग्यता की अपेक्षा करते हैं, वे परिस्थितियाँ कौन सी हैं जिनमें अधिगम होता है, और छात्र से जिस निष्पादन-स्तर को बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है वह कौन सा है । इन्हीं तीन पक्षों को आजकल 'निष्पादन-आधारित शिक्षण' कहा जाता है ।

शिक्षकों, क्षेत्रीय सलाहकारों, अध्यापक-शिक्षकों, पाठ्यपुस्तक लेखकों और मूल्यांकन-मापन के विशेषज्ञों की टोलियों ने तीन विभिन्न कार्य गोष्ठियों में अनुसंधान सामग्री विकसित की। इस साहित्य को 'निष्पादन आधारित शिक्षण संदर्शिकाएं' नाम दिया गया। कक्षा IX के लिए भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के कुल कोर्स को पांच शीर्षकों के अन्तर्गत प्रतिवेदित किया गया--(क) परिकल्पना, सिद्धांत, व्यवहार और कौशल के रूप में वस्तु तत्व का विश्लेषण। (ख) प्रवेश आचरण। (ग) आचरणिक उद्देश्य और हर उद्देश्य के लिए अधिगम-अनुभव। (घ) छात्र की स्वयं-मूल्य निर्धारण की चेक लिस्ट जिससे पता चले कि छात्र क्या जानता है, नया शब्द भंडार, नए सिद्धांत और नियम, और उनका दैनंदिन जीवन में व्यवहार। (ङ) हर आचरणिक उद्देश्य के लिए स्वयं-मूल्यांकन।

3. हाई स्कूलों में कोशिका शरीर क्रियात्मक प्रदर्शनों के लिए पादप-जीवद्रव्यकों के वियोजन की तकनीकों का मानकीकरण और सरलीकरण

यह अन्वेषण कार्य जीव द्रव्यकों के अध्ययन की तकनीक को सरल करने के विचार से किया गया था ताकि हाई स्कूल के छात्र हायर सेकण्डरी स्तर पर जीव विज्ञान के कोर्सों में अन्वेषण के प्रयोग कर सकें। तकनीकों को विस्तार से पादप विज्ञान की शोध पत्रिकाओं में और शैक्षिक पत्रों में प्रकाशित किया जा चुका है। इस अध्ययन पर आधारित प्रयोगों को हायर सेकण्डरी स्तर के लिए रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा विकसित जीव विज्ञान के प्रयोगात्मक कोर्स में भी शामिल किया जा चुका है।

4. विभिन्न स्कूल-विषयों में छात्रों की उपलब्धि पर पठन का प्रभाव तय करने के लिए अध्ययन

कक्षा I के लिए सात और कक्षा II के लिए तीन पठन परीक्षण विकसित किए गए। इन परीक्षणों को हिन्दी की 12 विभिन्न बोलियों वाले क्षेत्रों में 250 बच्चों पर जांचा गया। कठिनाई और विवेक मूल्यों को लगाकर परीक्षणों को संशोधित किया गया। आगे चलकर सात हिन्दी भाषी राज्यों के 22 बोलियों वाले क्षेत्रों के कक्षा I के 4100 छात्रों और कक्षा II के 4500 छात्रों पर ये परीक्षण किये गए। आधार सामग्री को संगणक द्वारा विश्लेषित किया गया और पता चला कि परीक्षण स्वीकारात्मक और उच्च सह-सम्बन्ध दिखाते थे। पठन योग्यता और उपलब्धि के मध्य सह-कारण 0.76 से 0.96 तक था। अन्य स्कूल विषयों में उपलब्धि पर पठन-योग्यता का प्रभाव जानने के लिए भी अध्ययन किया गया। मुख्य परिणाम थे विभिन्न स्कूल विषयों और सामान्य शैक्षणिक उपलब्धि में छात्रों की उपलब्धियों और पठन योग्यता के मध्य स्वीकारात्मक और उल्लेखनीय सह-सम्बन्ध, शहरी बच्चों की तुलना में ग्रामीण बच्चे पठन योग्यता में कमजोर निकले, बच्चों की पठन योग्यता तय करने में उनके परिवार के धन्धे की कोई उल्लेखनीय भूमिका नहीं होती, लड़कों और लड़कियों की पठन योग्यता में अन्तर न के बराबर होता है।

रा० शै० अ० और प्र० प० के बाहर की पूरी हो चुकी परियोजनाएं

1. मध्य प्रदेश के रीवा जिले में विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक अनुकूलता, सामाजिक महत्वाकांक्षा और निष्पादन

इस अध्ययन से यह पता चला कि अनुसूचित जाति के छात्रों ने सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं और कार्यक्रमों का पूरा लाभ नहीं उठाया। निम्न शैक्षिक विकास का उत्तर-दायित्व घरेलू परिवेश और सामाजिक प्रतिबन्धों को जाता है। इन्हीं के कारण उपलब्ध सुविधाओं का बहुत कम उपयोग हुआ। पढ़ाई पूरी किये बगैर ही स्कूल छोड़ जाने वाले पिछड़े वर्ग के ही नहीं, दूसरे वर्गों के भी थे। अनुसूचित जाति के बच्चे प्रारम्भिक स्तर से ही स्कूल इसलिए छोड़ देते हैं कि उन्हें बाहर नौकरी या धन्धा मिल जाने की उम्मीद होती है। इसके विरुद्ध स्कूल उन्हें प्रोत्साहित नहीं कर पाते। यह विचार कि स्कूलों में न भेजने के पीछे बच्चों के माता-पिता की अनिच्छा ही होती है, कुछ ही अंशों तक सच है। अनु-सूचित जाति के छात्रों में मिलने वाला निम्न अनुकूलन इस कारण है कि गरीबी और सामाजिक प्रतिबन्ध एक ओर और स्कूलों के खराब कार्यक्रम दूसरी ओर उसे ऐसा ही बना देते हैं। अनुसूचित जाति के छात्रों की तुलना में दूसरे छात्रों में आगे या ऊपर उठने की आकांक्षा कहीं अधिक होती है। इसीलिए अन्य छात्रों की शैक्षिक अनुकूलता, सामाजिक महत्वाकांक्षा और निष्पादन क्षमता कालेज स्तर पर या निचले स्तर पर ही अनुसूचित जाति के छात्रों की तुलना में उच्च होती है।

2. दिल्ली प्रशासन के हायर सेकण्डरी स्कूलों के विज्ञान-शिक्षण पर 'आउटपुट' और 'इनपुट' के सम्बन्धों की जांच का अध्ययन

इस अध्ययन से जो परिणाम सामने आए उनसे पता चलता है कि—

(i) क्षेत्र और जनसंख्या के घनत्व को देखते हुए दिल्ली के हायर सेकंडरी स्कूलों में विज्ञान शिक्षा की पर्याप्त सुविधाएं हैं।

(ii) ग्रामीण इलाकों में लड़कों और लड़कियों दोनों के ही स्कूलों में शहरी स्कूलों की तुलना में प्रति इकाई खर्च अधिक था।

(iii) मानवीय और सामग्री साधनों की दिशा में 'आउटपुट' की मैट्रिसेज 'इनपुट' की मैट्रिसेज से मेल खाती हैं।

(iv) लड़कों की तुलना में लड़कियों का निष्पादन भी अच्छा था, लेकिन लड़कियों ने जीव विज्ञान विषय लिया था जबकि लड़कों ने नान मेडिकल ग्रुप की ओर झुकाव दिखाया था।

(v) आकार और कोर्स को देखते हुए खर्च समान था।

(vi) ग्रामीण इलाकों की तुलना में शहरी इलाकों के छात्रों ने अच्छा परिणाम प्रस्तुत किया।

(vii) खर्च-आकार के सम्बन्ध को देखते हुए ग्रामीण स्कूलों में विज्ञान शिक्षण मंहगा था और गुणवत्ता में खराब भी।

3. सेकंडरी स्कूल की फाइनल परीक्षाओं में बड़ी संख्या में नकल

इस अग्रगामी अध्ययन ने उन कारकों का पता लगाने की कोशिश की जो फाइनल सेकंडरी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के नकल करने के आचरण से संयुक्त हैं। परीक्षाओं में नकल करने की आदत वाले छात्र सामान्यत: ऐसे परिवारों के होते हैं जो सामाजिक-आर्थिक रूप से गरीब पृष्ठभूमि वाले हैं और जहाँ का वातावरण अरुचिकर है। ऐसे छात्रों के अभिभावक कम पढ़े, लिखे होते हैं। इन कारणों से और अन्य प्रतिबन्धों के कारण छात्र नियमित पढ़ाई से बचना चाहते हैं और परीक्षा पास करने के आसान तरीके के रूप में नकल करते हैं। सामान्यत: ऐसे छात्र ऐसे स्कूलों के थे जो मूल बातों में प्रशासन और कार्यक्षमता की दृष्टि से दूसरे स्कूलों से अलग थे।

4. हायर सेकंडरी संस्थाओं में कार्योंमुख कोर्सों की पहचान—पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर में हुए क्षेत्रीय मांग सर्वेक्षण के आधार पर (प्रथम चरण)

मेदिनीपुर में हुए एक सर्वेक्षण पर आधारित इस अध्ययन से पता चला कि निम्नलिखित क्षेत्रों में कोर्सों की सम्भावना है—फसल उगाना, मुर्गी पालन, दुग्धशाला चलाना, मत्स्य पालन, बहूद्देशीय स्वास्थ्य शिक्षा, सहकारिता का विचार-दर्शन और सहकारी भंडार, सिलाई कटाई, पिच बोर्ड माडेलिंग, अध्यापन शिक्षा, बढ़ई गीरी, लुहारी, मुद्रण, प्रकाशन, जिल्दसाजी, संगीत और नाट्य कला, सिलाई, बुनाई और कढ़ाई। इससे यह भी संकेत मिला कि द्वितीय चरण में इन कोर्सों को चलाने की जरूरत पड़ेगी—उद्यान विज्ञान में मिट्टी और पानी का प्रबन्ध, खेती के उपकरणों का रख रखाव, आटोमोबाइलों का रख रखाव।

5. पश्चिम बंगाल में स्थानीय कौशलों का शिल्पविज्ञानी-आर्थिक अध्ययन : हावड़ा और मालदा जिलों का नमूने का सर्वेक्षण

हावड़ा और मालदा जिलों के शिल्पविज्ञानी-आर्थिक सर्वेक्षण से पता चला कि इन जिलों में नौकरी की संभावनाओं की दृष्टि से शिक्षा का व्यावसायीकरण व्यवहार्य है। कुछ परिणामों के विवरण नीचे दिये जा रहे हैं—

(1) हावड़ा

(क) जिन चार प्रखंडों में सर्वेक्षण हुआ वहाँ नौकरी पेशा कर्मियों के धंधेवार वितरण में उल्लेखनीय अन्तर मिलता है।

(ख) अपना धंधा करने वालों में, दोनों टेक्निकल प्रशिक्षण संस्थाओं में दिये गये व्यावसायिक प्रशिक्षण वाले लोगों के सुअवसरों का अनुपात हर जिले में विषम था।

(ग) इन संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे कोर्स मुख्यत: नक्शानवीसों, पिसाई करने वालों या सान धरने वालों के लिए थे या वातानुकूलन और रेफ्रीजेरेशन के थे। ऐसे कोर्स वालों के लिए इन जिलों में नौकरी के कोई अवसर नहीं थे। इस कारण इन संस्थाओं से प्रशिक्षित होकर निकलने वाले लोग नौकरी पाने में कठिनाई महसूस करते थे।

(2) मालदा

(क) इस जिले में 30 प्रतिशत से तनिक कम लोग अपनी खेती करते हैं और एक चौथाई लोग जुलाहे हैं। जनसंख्या का लगभग दसवाँ भाग रेशम-उत्पादन करता है।

(ख) जिले के औद्योगिक कर्मचारियों में सामान्य रूप से औपचारिक शिक्षा की कमी और विशेष रूप से तकनीकी शिक्षा की कमी स्पष्ट है।

इस अध्ययन से यह पता चलता है कि यहाँ पर नौकरी अथवा अपने धंधे की सम्भावना इन क्षेत्रों में दिखती है—कृषि, रेशम उत्पादन, कपड़ा बुनना, फल संरक्षण। इसके लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इन धंधों में प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है।

जिन परियोजनाओं पर काम हो रहा है, उनमें से कुछ (विभागीय) संलग्नक III में और कुछ (बाहर की) संलग्नक IV में दिखाई गई हैं।

इस वर्ष अनुसंधान के लिए बाहर के माध्यमों को एरिक द्वारा दी गई वित्तीय सहायता का विवरण परिशिष्ट ङ में मिलेगा।

सर्वेक्षण

शैक्षिक सुविधाओं के सुनियोजित विकास के लिए आवश्यक है कि बीच-बीच में अपनी उपलब्धियों की समीक्षा कर ली जाए और भविष्य की जरूरतों का पूर्व अनुमान लगा लिया जाए। इसी दृष्टि से यह जानने के लिए कि विभिन्न इलाकों को कौन कौन सी

शैक्षिक सुविधाएं कितनी कितनी उपलब्ध हैं, परिषद् का एक नियमित कार्य अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण कराते रहने का रहा है। ये सर्वेक्षण प्राय: पांच वर्षों के बाद कराए जाते हैं और संयोग से पंचवर्षीय योजना के साथ ही पड़ते हैं। परिषद् ने अभी तक तीन अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण कराए हैं।

समीक्षाधीन अवधि में सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रिया एकक का मुख्य कार्यक्रम प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के कार्यक्रम में सहायक होने वाली आधार सामग्री प्रदान करने के विचार से चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण का काम हाथ में लेने का था। इसके निमित्त एकक ने दो सूचना आलेख विकसित किए—(i) ग्राम सूचना फार्म, और (ii) स्कूल सूचना फार्म जिन्हें देश के सभी ग्रामों और स्कूलों में वितरित करना था। प्रखंड, जिला और राज्य के विभिन्न स्तरों के विश्लेषण प्रकम विकसित किए गए। 'सर्वेक्षण अधिकारियों के लिए मार्गदर्शी रेखाएं' भी तैयार की गई जिनमें सर्वेक्षण के लक्ष्य और उद्देश्य, सर्वेक्षण के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्दों की परिकल्पनाएं और परिभाषाएं, तथा सर्वेक्षण आयोजित करने के विभिन्न विवरण दिए गए हैं। सर्वेक्षण के आयोजन के अन्तर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रचार, जांच के तरीके, आधार सामग्री के विश्लेषण के तरीके, प्रखंडों के मानचित्र और राज्यों के प्रतिवेदन बनाना आ जाते हैं। इन मार्गदर्शी रेखाओं को छाप कर सर्वेक्षण से सम्बन्धित प्रखंड स्तर तक के सभी अधिकारियों के पास भेजा गया।

प्रखंड स्तर के सर्वेक्षण के प्रभारी अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर के दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए। ये प्रशिक्षित अधिकारी जब अपने अपने राज्यों को लौट कर गए, तो उन्होंने सूचना फार्म अपने यहां की क्षेत्रीय भाषा में छपवा लिए। सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रिया एकक के कर्मचारी सभी राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में गए और उन्होंने राज्य के जिला स्तर तक के सर्वेक्षण कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया। इस प्रशिक्षण में सर्वेक्षण के सभी पक्षों—आलेखों के प्रचार से लेकर भरे गए फार्मों की जांच तक—के बारे में विस्तार से विचार-विमर्श हुए।

प्रखंड, जिला और राज्य स्तरों पर विकसित करने के लिए सारणियों को पर्याप्त संख्या में राज्यों को भेजा गया। जब राज्यों में प्रखंड सारणियां बनाई जा रही थीं, तब एकक के कर्मचारी सभी राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में गए और उन्होंने इन सारणियों की नमूने के तौर पर जांच की ताकि कोई गलती न रहने पाए। इसके अलावा एकक के कर्मचारी राज्य सारणियों को अन्तिम रूप देने के लिए भी वहां जाते रहते हैं। अधिकांश राज्यों में प्रखंड और जिला स्तर तक टेबुलेशन का कार्य पूरा किया जा चुका है।

संलग्नक I

पूरी हो चुकी विभागीय परियोजनाएं

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
1.	सर्वे ऑफ प्रॉब्लम्स फेस्ड बाइ दि एशियन टीचर्स एण्ड देयर एटीच्यूड्स टुवर्ड्स इनोवेशन इन क्लासरूम टीचिंग	शै. म. एवं शि. श्रा. वि.
2.	डेवलपमेंट ऑफ साइन्स एण्ड मैथेमेटिक्स कन्सेप्ट्स इन चिल्ड्रेन एट प्राइमरी ग्रेड्स इन इण्डिया	"
3.	ए स्टडी ऑफ सम ऐस्पेक्ट्स ग्राफ दि लोड ग्राफ होमवर्क इन सम स्कूल्स इन देलही	"
4.	सोशल साइकोलॉजी ग्राफ एजुकेशन—एन एनोटेटेड रिव्यू ग्राफ रिसर्च	"
5.	सोशल रिएनफोर्समेंट एण्ड दि स्टडी बिहेवियर ग्राफ दि प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रेन	"
6.	चेंजिंग टीचर बिहेवियर थ्रू फीडबैक	"
7.	रिसर्च ऑन ग्रेडिंग इश्यूज	"
8.	ए स्टडी ऑफ दि इफेक्टिवनेस ऑफ पर्फोर्मेंस बेस्ड इंस्ट्रक्शन इन दि टीचिंग-लर्निंग-एवैलुएशन प्रोसेस ऑफ साइन्स कोर्सेज बाइ क्वालिफाइड साइन्स टीचर्स	" "
9.	ए सर्वे ऑफ स्टूडेंट्स मोस्ट प्रेसिंग प्रॉब्लम्स इन देयर यूनिवर्सिटी लाइव्ज	"
10.	ए स्टडी ग्राफ दि काग्निटिव इफेक्ट्स ग्राफ दि एजुकेशनल टेलिविजन प्रोग्राम्स ब्राडकास्ट बाइ दि देलही टी वी सेंटर	"
11.	स्टैंडर्डाइजेशन एण्ड सिम्प्लीफिकेशन ग्राफ टेक्नीक्स फार ग्राइसोलेशन ग्राफ प्लांट्स प्रोटोप्लास्ट्स फार सेल फिजियोलोजिकल डिमांस्ट्रेशन इन हाई स्कूल्स	वि. एवं ग. शि. वि.

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
12.	एक्सपेरीमेंटल स्टडीज आन डिफरेन्शियल इफेक्टिवनेस आफ माइक्रो टीचिंग कंपोनेंट्स	अ. शि. वि.
13.	थर्ड आल इण्डिया एजुकेशनल सर्वे	स. और आ. सा. प्र. ए.
14.	ए स्टडी टु डिटर्मिन दि इम्पैक्ट आफ रीडिंग आन दि एचीवमेंट्स आफ प्यूपिल इन डिफरेंट स्कूल सब्जेक्ट्स	स्कू. शि. वि.
15.	इनोवेशंस इन एजुकेशन	"
16.	आक्सिलियरी रीडिंग मैटीरियल इन इंग्लिश फार मिडिल स्टेज	पा. वि.
17.	ए डिटेल्ड स्टडी आफ टेक्स्ट बुक्स इन इंग्लिश ऐज ए फारेन लैंग्वेज फार मिडिल स्कूल्स इन दि स्टेट आफ महाराष्ट्र टु डिटर्मिन हाउ फार दि कंटेंट आफ दि टेक्स्ट बुक्स एण्ड इट्स प्रेजेंटेशन टेक्स इंटू एकाउण्ट लेटेस्ट ट्रेंड्स इन दि टीचिंग एण्ड लर्निंग आफ इंग्लिश	पा. वि.
18.	प्राइवेट कॉस्ट्स आफ एजुकेशन इन ईस्टर्न स्टेट्स	क्षे. शि. म. भुवनेश्वर
19.	इफेक्ट आफ माइक्रो टीचिंग अण्डर स्टीमुलेटेड एंड रीयल कंडीशंस एण्ड इट्स रिटेंशन इन रिलेशन टु मैक्रो सिचुएशन एण्ड दि रिजल्टैंट गेन इन ऐटीच्यूड्स	"
20.	मशरूम कल्टीवेशन्स ऐज वर्क एक्सपीरिएंस/वोकेशनल प्रोग्राम	"
21.	इफेक्ट आफ साइमुलेटेड इन्फर्मेशन आन ऐसेसमेंट आफ काग्नीटिव काम्पेटेंस, ए टेस्ट आफ एक्सपेक्टैंसी हाइपोथीसिस	"
22.	ए सर्वे आफ अकुपेशनल एण्ड प्रोडक्टिव रिसोर्सेज एण्ड टीचिंग आफ वोकेशनल कोर्सेज एट + 2 लेवेल इन ए सेट आफ डिस्ट्रिक्ट्स आफ वेस्ट बेंगाल फार दि पीरियड 1980-1995	"
23.	कंजर्वेशन आफ अकुएटिक इकोसिस्टम्स इन एण्ड अराउण्ड भुवनेश्वर	"

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
24.	कांट्रीब्यूशन आफ उड़िया पोएट्स टु दि मेडीवल बंगाली लिटरेचर	क्षे. शि. म. भुवनेश्वर
25.	रिसर्च प्रोजेक्ट इन उर्दू	क्षे. शि. म. मैसूर

संलग्नक 11

पूरी हो चुकी बाहर की परियोजनाएं

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
1.	एजुकेशनल अडैप्टेशन, सोशल एम्बीशन एण्ड पेर्फोर्मेंस आफ शैड्यूल्ड कास्ट स्टूडेंट्स एट दि वैरियस एजुकेशनल लेवेल्स इन दि रींवा डिस्ट्रिक्ट आफ मध्य प्रदेश	श्री योगेन्द्र नारायण मिश्र, गवर्नमेंट कालेज आफ एजुकेशन, रींवा (म.प्र.)
2.	ए साइकोलाजिकल स्टडी आफ ट्राइबल चिल्ड्रेन (विद स्पेशल रेफरेंस टु दि डिनोटीफाइड ट्राइब्स आफ यू. पी.)	डा. आर. एन. पांडेय गवर्नमेंट पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, रामपुर (यू.पी.)
3.	कांस्ट्रक्शन आफ लिसेनिंग काम्प्रिहेंशन टेस्ट इन गुजराती फार प्यूपिल्स आफ क्लासेज VIII, IX एण्ड X टु स्टडी दि इफेक्ट आफ इक्सेरसाइजेज फार इंप्रूविंग इट	डा. बी. वी. पटेल एम. बी. पटेल कालेज आफ एजुकेशन, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर (गुजरात)
4.	ऐन ऐक्शन-रिसर्च प्रोजेक्ट आन अर्ली प्राइमरी एजुकेशन इन देलही	मिसेज मीना स्वामीनाथन डाइरेक्टर, इंडियन एसोसिएशन फार प्रि-स्कूल एसोसिएशन आइ आइ पी ए होस्टेल, रिंग रोड, नई दिल्ली
5.	ए स्टडी टु इनवेस्टीगेट दि रिलेशनशिप बिटवीन 'आउट पुट' एण्ड 'इन पुट' आन साइंस एजुकेशन आफ हायर सेकंडरी स्कूल्स आफ देलही एडमिनिस्ट्रेशन	श्री आर. के. शर्मा प्रिंसिपल, गवर्नमेंट ब्वायज ह'यर सेकंडरी स्कूल, बिजवासन

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
6.	टुवर्ड्स ए टीचिंग प्रोफेशन	श्री जी. रामनाथन प्लाट नं. 64, वेस्ट हाई कोर्ट रोड, बजाजनगर नागपुर
7.	कांस्ट्रक्शन टेस्ट्स ग्राफ मेंटल ऐबीलिटीज	डा. (मिसेज) उषा खिरे डिपार्टमेंट ग्राफ साइ-कोलाजिकल रिसर्च एण्ड टेस्टिंग, दोयाना प्रबो-धिनी, 510, न्यू-सदाशिव पेठ, पुणे
8.	मास कापीइंग इन सेकंडरी स्कूल फाइनल इक्जामिनेशन	डा. जगदीन्द्र मंडल डिपार्टमेंट ग्राफ एप्लाइड साइकोलाजी, यूनि-वर्सिटी कालेज ग्राफ साइंस एण्ड टेक्नोलाजी, कैलकटा यूनिवर्सिटी, एंड ईस्टर्न इंडिया सेंटर फार मास कम्यूनिकेशन्स स्टडीज, कैलकटा
9.	ऐन एजुकेशनल सर्वे ग्रान बस्तर डिस्ट्रिक्ट, मध्य प्रदेश	डा. टी. बी. नाइक चेयरमैन, बोर्ड ग्राफ सेकंडरी एजुकेशन, मध्य प्रदेश भोपाल
10.	ग्राइडेंटीफिकेशन ग्राफ जाब ग्रोरिएंटेड कोर्सेज फार हायर सेकंडरी इंस्टीट्यूशन्स––बेस्ड ग्रान रीजनल डिमांड सर्वे इन मिदनापुर, वेस्ट बेंगाल	लेट प्रोफेसर ए. के. गायेन, इंडियन इंस्टीच्यूट ग्राफ टेक्नोलाजी खड़गपुर
11.	ए टेक्नो-इकोनोमिक स्टडी ग्राफ लोकल स्किल्स इन वेस्ट बंगाल : ए सैम्पुल सर्वे ग्राफ दि डिस्ट्रिक्ट्स ग्राफ माल्दा एण्ड हावड़ा	प्रो. पी. के. बोस एण्ड प्रो. एस. पी. मुखर्जी कैलकटा यूनिवर्सिटी कैलकटा

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
12.	होलीडे कैम्प्स फार दि अंडर प्रिविलेज्ड चिल्ड्रेन	श्री प्रभु चौधरी सेक्रेट्री बाल कुंज, H-216 माडल टाउन, देलही
13.	सेमीनार आन रिसर्च एंड डेवेलपमेंट प्रोग्राम्स इन एजुकेशन	प्रो. ए. सी. देवेगौड़ा इंस्टीच्यूट आफ सोशल एंड इकोनोमिक चेंज बंगलूर
14.	सेमीनार आन ब्रेन डेवेलपमेंट एण्ड इट्स इंप्लीकेशंस आन टीचिंग आफ लैंग्वेज एण्ड लिंग्विस्टिक्स	प्रो. वी. आई. सुब्रह्मणियम इंटर्नेशनल स्कूल आफ द्रवीड़ियन लिंग्विस्टिक्स, केरल पाणिनि मेमोरियल बिल्डिंग, नानैया हाल त्रिवेंद्रम
15.	कांप्रिहेंसिव एरिया डेवेलपमेंट स्कीम, नादकर्णी प्रोजेक्ट	रेवेरेंड एम. जे. विल्सन नादकर्णी प्रोजेक्ट, कट्टकाडा, केरल

संलग्नक III

चल रही विभागीय परियोजनाएं

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
1.	ऐन एक्सप्लोरेटरी स्टडी आन दि इन्टेरेस्ट्स, कन्सर्न्स एंड प्राब्लम्स आफ स्कूल स्टूडेंट्स इन दि फील्ड आफ हैल्थ	शै. म. और शि. आ. वि.
2.	ए स्टडी आफ दि अवेयरनेस एंड रिऐक्शन आफ टीचर्स टुवड्र्स दि इन्ट्रोडक्शन आफ पापुलेशन एजुकेशन इन स्कूल्स	"
3.	ए स्टडी आफ दि नेचर एंड फंक्शन आफ ग्रुप प्रोसेस टु मोटिवेट चिल्ड्रेन	"
4.	ए स्टडी आफ दि ऐटीच्यूड आफ टीचर्स एंड पैरेंट्स टुवड्र्स दि इंट्रोडक्शन आफ सेक्स एजुकेशन इन स्कूल्स	"
5.	स्टडी आफ काग्निटिव डेवेलपमेंट आफ चिल्ड्रेन—2 टु 13 ईयर्स—ए लांगीच्यूडिनल स्टडी	"
6.	ए स्टडी टु टेस्ट दि एफीकेसी आफ दि टेक्नीक आफ ट्रांसेडेंटल मेडिटेशन इन रिलेशन टु ऐकेडेमिक पेर्फोर्मेंस, क्रिएटीविटी, इन्टेलिजेंस ग्रोथ रेट, लर्निंग एबिलिटी, मोटीवेशन, ऐंक्जाइटी, पैरेंट-प्यूपिल एक्सपेक्टेशन, डिस्क्रेपैंसी एण्ड ऐडजस्टमेंट	"
7.	ए लांगीच्यूडिनल इनवेस्टीगेशन इंटु दि प्रोसेस एंड कैरेक्टेरिस्टिक्स आफ ड्राप आउट	"
8.	ए स्टडी आफ दि मोटीवेशन आफ कारेस्पोंडेंस कोर्स स्टूडेंट्स	"
9.	एक्सप्लोरेशंस इन आप्टीमाइजिंग लर्निंग साइंस इन स्कूल	"
10.	रिसर्च आन फर्स्ट जेनेरेशन	"

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
11.	ए स्टडी ग्राफ दि इफेक्टिवनेस ग्राफ टू मेथड्स ग्राफ टीचिंग पापुलेशन एजुकेशन इन स्कूल्स	शै. म. ग्रौर शि. ग्रा. वि.
12.	डेवेलपमेंट ग्राफ लर्निंग मेटीरियल फार नान-फार्मल एजुकेशन इन रूरल एरियाज इन दि एज ग्रुप 11 टु 14 ईयर्स	,,
13.	डेवेलपमेंट ग्राफ क्राइटेरिया फार एलेक्टिंग ए स्ट्रीम एंड कोर्सेज विदिन ए स्ट्रीम एट हायर सेकंडरी स्टेज	,,
14.	टु इनवेस्टिगेट दि इफेक्टिवनेस ग्राफ वोकेशनल एक्सप्लोरेशन प्रोग्राम एट दि सेकंडरी स्कूल लेवेल फार वोकेशनलाइजेशन	,,
15.	टु स्टडी दि इफेक्ट ग्राफ सोशियो-कल्चरल डिप्राइवेशन ग्रान दि एजुकेशनल डेवेलपमेंट ग्राफ रूरल चिल्ड्रेन इन दि एज ग्रुप 6-11 ईयर्स	,,
16.	ए फीजिबिलिटी स्टडी ग्राफ होम इंटरवेंशन प्रोग्राम फार दि सोशली डिसऐडवांटेजेड चिल्ड्रेन इन क्लास I एंड II	,,
17.	सर्वे ग्राफ रूरल टैलेंट सर्च स्कीम	,,
18.	रिव्यू ग्राफ दि स्टडीज इन दि फील्ड ग्रॉफ पॉपुलेशन एजुकेशन	,,
19.	एक्शन-ग्रोरिएंटेड स्टडीज टु डेवेलप नीड-बेस्ड इंस्ट्रक्शनल रिसोर्स फॉर दि एजुकेशनल डेवेलपमेंट ग्रॉफ यंग चिल्ड्रेन इन रूरल एरियाज	,,
20.	डवेलपमेंटल नॉर्म्स प्रोजेक्ट 5½—11 ईयर्स नॉर्मेटिव स्टडी	,,
21.	यूज ग्रॉफ लिविंग ग्रॉर्गेनिज्म्स इन स्कूल (एन इंवेस्टीगेटरी प्रोजेक्ट टु डेवेलप ए हैंडबुक फॉर क्लासरूम टीचर)	वि. ग्रौर ग. शि. वि.
22.	रिसोर्स एंड प्राब्लम्स (ऐन इंवेस्टीगेटरी प्रोजेक्ट टु डेवेलप ए हैंडबुक फार क्लासरूम टीचर)	,,
23.	एक्सपेरीमेंटल प्रोजेक्ट टु डेवेलप नीड-बेस्ड एंड कम्युनिटी-ग्रोरिएंटेड सेल्फ लर्निंग इंस्ट्रक्शनल मैटीरियल्स इन बॉयोलोजी फॉर दि एलीमेंटरी लेवेल रूरल प्यूपिल्स ग्राफ दि फार्मल सिस्टम एंड ड्राप ग्राउट चिल्ड्रेन एट दिस स्टेज	,,

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
24.	इंवेस्टीगेशन्स लीडिंग टु दि डेवेलपमेंट ग्राफ माडेल इंस्ट्रक्शनल मैटीरियल्स फार दि सेकंडरी एण्ड हायर सेकंडरी लेवेल्स इन लाइफ सांइसेज फार गाइडेंस ग्राफ बुक राइटर्स	वि. और ग. शि. वि.
25.	टु डेवेलप दि लेबोरेट्री कोर्स इन फिजिक्स बेस्ड ग्रान 'ग्रोपेन एंडेड एक्सपेरीमेंट' फार सेकंडरी स्टेज	,,
26.	ए कंपेरेटिव रिव्यू ग्राफ साइंस एजुकेशन इन यू० के० एण्ड इंडिया विद स्पेशल रेफेरेन्स टु दि केमिस्ट्री टीचिंग इन सेकंडरी स्कूल्स	,,
27.	इन्फ्लूएंस ग्राफ न्यूट्रीशनल ग्रवेयरनेस ग्राफ मदर्स ग्रान दि न्यूट्रीशनल स्टेटस ग्राफ प्राइमरी स्कूल्स चिल्ड्रेन इन दि यूनियन टेरीटरी ग्राफ देलही	,,
28.	एनालिसिस ग्राफ सम लाज एंड प्रिंसिपुल्स ग्राफ फिजिक्स फार लेवेल्स ग्राफ काग्नीशन ग्राफ दि स्टूडेंट्स (एज ग्रुप 15+ — 18+ ईयर्स) ऐट हायर सेकंडरी ऐंड ग्रंडर ग्रेजुएट लेवेल	,,
29.	इफेक्ट ग्राफ प्रि इंस्ट्रक्शनल डिसक्लोजर्स ग्राफ बिहेवियरल ग्राब्जेक्टिव्ज ग्रान दि साइकोमोटर ऐण्ड रिलेटेड काग्नीटिव ग्राब्जेक्टिव्ज इन फिजिक्स एक्सपेरीमेंट्स एमंग दि सेकंडरी स्टूडेंट	,,
30.	ए स्टडी ग्राफ दि प्राब्लम्स ग्राफ टीचिंग स्पोकेन बंगाली टु दि हिन्दी स्पीकिंग चिल्ड्रेन	सा० वि० एवं मा० शि० वि०
31.	फंडामेंटल रिसर्च ग्रान लैंग्वेज थाट एण्ड कम्यूनिकेशन	,,
32.	ए सोशल साइकोलाजिकल स्टडी ग्राफ लर्निंग हिन्दी एण्ड इंग्लिश ऐज सेकंड लैंग्वेज	,,
33.	पोजीशन ग्राफ हिस्ट्री टीचिंग इन देलही स्कूल्स ऐट दि हायर सेकंडरी स्टेज	,,

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
34.	आइडेंटीफिकेशन ऐण्ड ग्रेडेशन आफ मैप स्किल्स टु बि इंट्रोड्यूस्ड एट दि इंटायर स्कूल स्टेज	सा. वि. एवं मा. शि. वि.
35.	ए ग्रैफिक एनालिसिस आफ दि देवनागरी स्क्रिप्ट ऐज यूज्ड फार रीडिंग एंड राइटिंग हिन्दी	,,
36.	ए नेशनल बेस लाइन सर्वे इन पापुलेशन एजुकेशन	,,
37.	पापुलेशन ऐण्ड एजुकेशन पालिसीज : ए कंट्री केस स्टडी आफ इंडिया	,,
38.	लिंग्विस्टिक एनालिसिस एण्ड डिस्क्रिप्शन आफ दि फोनोलाजिकल वैरीएशंस इन स्टैंडर्ड हिन्दी	,,
39.	कंट्रास्टिव साउण्ड सिस्टम्स आफ हिन्दी ऐण्ड मलयालम	,,
40.	वर्ब फार्म फ्रिक्वेंसी काउंट इन हिन्दी	,,
41.	ऐन इंटेग्रेटेड अप्रोच टु प्राइमरी एजुकेशन	स्कूल शिक्षा विभाग
42.	स्ट्रक्चरिंग प्राइमरी स्कूल करीक्यूलम टु सूट मल्टीपुल क्लास टीचिंग सिचुएशन इन सिंगिल ऐण्ड टू टीचर स्कूल्स इन रूरल एरियाज	,,
43.	रेलिवेंस ऑफ ट्रैडीशनल यूथ डॉरमिटरीज टु नॉन फॉर्मल एजुकेशन इन ट्राइबल एरियाज इन इंडिया	,,
44.	इफेक्टिव यूज ऑफ स्कूल करीक्यूलम एंड देयर सब स्टडीज	,,
45.	ए स्टडी टु डिटर्मिन दि इम्पैक्ट आफ रीडिंग आन दि एचीवमेंट आफ प्यूपिल्स इन डिफरेंट सब्जेक्ट्स	,,
46.	डेवेलपिंग ए हैंडबुक इन रीडिंग फार प्राइमरी स्कूल टीचर्स ऐंड इट्स ट्राइ आउट	,,
47.	इम्प्लीमेंटिंग प्रि सर्विस करीक्यूलम इन रीडिंग इन जूनियर टीचर ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूशंस	,,
48.	प्रिपेरेशन आफ ए ग्रेडेड बिब्लियोग्राफी आफ चिल्ड्रेंस लिटरेचर	,,
49.	टु स्टडी डिफरेंट मेकैनिज्म्स फार आडियो-विजुअल एड्स यूटिलाइजेशन ऐट (ए) टीचर ट्रेनिंग लेवेल (बी) स्कूल्स ऐंड (सी) कालेजेज	शि. सा. वि.

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
50.	ए स्टडी श्राफ दि कण्डीशंस श्राफ रूरल स्कूल्स फार दि डेवेलपमेंट ऐंड यूज श्राफ सिम्पुल टीचिंग एड्स	शि. सा. वि.
51.	एवैलुएशन श्राफ डी. टी. ए. प्रोडक्ट्स एंड प्रोटो टाइप्स	,,
52.	स्टेटस श्राफ श्राडियो-विजुश्रल एजुकेशन इन इंडिया	,,
53.	ए स्टडी श्राफ दि मेथडोलाजी श्राफ टीचिंग वैरियस सब्जेक्ट्स	श्र. शि. वि.
54.	ए स्टडी श्राफ टीचिंग काम्पेटेंसीज इन डेवेलपिंग काग्निटिव प्रोसेस इन प्यूपिल्स	,,
55.	एडजस्टमेंट एंड इफेक्टिवनेस श्राफ बिगिनिंग टीचर्स	,,
56.	ए स्टडी श्राफ सोशल कोहेसन इन एलीमेंटरी, सेकंडरी टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूशंस 'एण्ड इट्स रिलेशनशिप विद पेर्फोमेंस श्राफ दि स्टूडेण्ट्स	,,
57.	ए स्टडी श्राफ दि इन-सर्विस नीड्स श्राफ सेकंडरी टीचर एजुकेटर्स	,,
58.	ए स्टडी श्राफ दि प्राब्लम्स हैविंग ए बीयरिंग श्रान टीचर एजुकेशन फार 10+2 स्टेज विद रेफेरेंस टु महाराष्ट्र	,,
59.	ए स्टडी श्राफ दि रोल एक्पेक्टेशंस श्राफ दि प्राइमरी ऐंड सेकंडरी स्कूल टीचर्स वर्किंग विद कम्यूनिटी विद ए व्यू टु इवोल्व कारेस्पौंडेंस कोर्स फार टीचर एजुकेशन प्रोग्राम्स ऐट बोथ लेवेल्स (प्राइमरी ऐंड सेकंडरी)	श्र. शि. वि.
60.	केस स्टडीज श्राफ टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस (एलीमेंटरी/सेकंडरी)	,,
61.	डेवेलपिंग ए माडेल फार फोरकास्टिंग टीचर रिक्वायरमेंट इन ए स्टेट	,,
62.	डेवेलपमेंट श्राफ टूल्स फार ऐडमिशन टु टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस	,,
63.	डेवेलपमेंट श्राफ टूल्स फार सुपरविजन एण्ड एवैलुएशन श्राफ स्टूडेंट टीचिंग एण्ड श्रदर प्रैक्टिकल वर्क इन कालेजेज श्राफ एजुकेशन	,,

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
64.	इफेक्ट आफ क्लासरूम बिहेवियर ट्रेनिंग (सी बी टी) आन क्लासरूम क्वेश्चनिंग बिहेवियर आफ टीचर्स	अ. शि. वि.
65.	डेवेलपमेंट आफ नार्म्स फार सेकंडरी टीचर एजुकेशन कालेजेज	,,
66.	डिटर्मिनिंग दि आप्टीमम साइज आफ ए सेकंडरी ट्रेनिंग कालेज	,,
67.	प्लैनिंग एण्ड डिजाइनिंग आफ एजुकेशनल रिसर्च : ए हैंडबुक फार टीचर एजुकेटर्स	,,
68.	एन एक्सपेरीमेंटल स्टडी आफ दि इफेक्टिवनेस आफ डिफरेंट स्ट्रैटेजी आफ टीचिंग स्किल्स अक्वायर्ड बाइ दि स्टूडेंट टीचर्स थ्रू दि टेकनीक आफ माइक्रो टीचिंग	,,
69.	ए स्टडी आफ दि रीजन्स फार नान एनफोर्समेंट आफ कंडीशंस आफ एफीलिएशन लेड डाउन बाई दि यूनिवर्सिटीज	,,
70.	स्टडी इनोवेटिव प्रैक्टिसेज इन एलीमेंटरी एण्ड सेकंडरी टीचर एजुकेशन	,,
71.	कम्पाइलेशन एण्ड लिंग्विस्टिक एनालिसिस आफ हिन्दी वोकैबुलरी	पा. पु. वि.
72.	कान्ट्रीब्यूशन आफ थीम्स आफ वैरियस कैटेगरीज इन्क्लूडेड इन लैंग्वेज टेक्स्टबुक्स टुवर्ड्स दि एचीवमेंट आफ इंस्ट्रक्शनल आब्जेक्टिव्ज आफ दि लैंग्वेज	,,
73.	डिफरेंट फार्म्स आफ हिन्दी लिटरेचर इन्क्लूडेड इन हिन्दी टेक्स्टबुक्स फार सेकंडरी क्लास (IX एण्ड X): ऐन इन्वेस्टीगेशन इंटू देयर इफेक्टिवनेस फाम दि स्टैंड प्वाइण्ट आफ इन्स्ट्रक्शनल आब्जेक्टिव्ज एण्ड इंटेरेस्ट आफ चिल्ड्रेन	,,
74.	कम्पेरेटिव स्टडी आफ साइन्स टेक्स्टबुक्स आफ मिडिल एन्ड सेकंडरी क्लासेज आफ सम स्टेट्स	,,
75.	ए स्टडी आफ एवोल्यूशन आफ दि टेक्स्टबुक एण्ड इट्स	,,

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
	रोल इन फार्मल एजुकेशन इन दि कन्टेक्स्ट आफ चेंजिंग सोसायटी (एंशिएंट टु माडेर्न पीरियड विद स्पेशल एम्फैसिस आन पोस्ट इंडिपेंडेंस पीरियड)	पा. पु. वि.
76.	टु स्टडी दि मैटिरियल इन हिस्ट्री टेक्स्ट बुक्स ह्विच (i) ज्योपरडाइजेज नेशनल इंटेग्रेशन (ii) प्रोमोट्स नेशनल इंटेग्रेशन	,,
77.	कम्पेरेटिव स्टडी आफ स्टैंडर्ड्स ऐज रेफलेक्टेड इन दि सिलैबी आफ साइन्स एण्ड मैथेमेटिक्स आफ दि स्टेट्स ह्वेयर देयर इज पब्लिक इक्जामिनेशन ऐट दि एण्ड आफ क्लास X	,,
78.	इम्पार्टेंस आफ इलस्ट्रेशन्स इन ज्योग्रोफी टेक्स्टबुक्स	,,
79.	ए स्टडी इन दि काम्प्रीहेन्सिबिलिटी आफ दि लैंग्वेज यूज्ड इन साइन्स ऐण्ड सोशल साइन्स टेक्स्टबुक्स ऐट प्राइमरी लेवेल	,,
80.	प्रोसीजर्स फार दि डिस्टीब्यूशन आफ नेशनलाइज्ड टेक्स्ट-बुक्स इन इण्डिया	,,
81.	प्रैक्टिसेज ऐण्ड प्रोसीजर्स फार प्रिंटिंग आफ स्कूल टेक्स्ट-बुक्स इन दि स्टेट्स आफ इण्डिया	,,
82.	पालिसीज एण्ड प्रोसीजर्स रिगार्डिंग दि पीरियडिक चेंज आफ टेक्स्टबुक्स	,,
83.	स्टडी आफ प्रोसीजर्स ऐण्ड प्रैक्टिसेज आफ एवैलुएटिंग मैनुस्क्रिप्ट्स एण्ड टेक्स्टबुक्स इन दि स्टेट्स	,,
84.	स्टुडेंट रिऐक्शन टु सम प्राब्लम्स आफ एजुकेशन—ए फालो अप स्टडी	प. सु. ए.
85.	ए कम्पेरेटिव स्टडी आफ दि लेवेल्स आफ ऐकेडेमिक एचीवमेंट्स आफ प्यूपिल्स ऐट इम्प्रूव्ड एक्सटर्नल इक्जामि-नेशंस एण्ड स्कूल एवैलुएशन ऐट सेकंडरी स्टेज	,,
86.	ऐन एक्सप्लोरेटरी स्टडी आफ दि ऐटीच्यूड्स आफ टीचर्स टुवर्ड्स दि स्कालैस्टिक एचीवमेंट आफ क्लास IX ऐण्ड X प्यूपिल्स आफ वैरीइन्ग सोशियो-एकोनोमिक बैकग्राउण्ड	,,

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
87.	एवैलुएशन आफ पर्सनलाइज्ड सिस्टम आफ इंस्ट्रक्शन (केटर प्लान) इन मैथेमेटिक्स ऐट क्लास VII लेवेल	प. सु. ए.
88.	सेरम यूरेट कन्सेन्ट्रेशन्स, इंटेलेक्चुअल स्टाइल ऐण्ड पर्सनैलिटी	प. अ. ए.
89.	रिसर्च एण्ड डेवेलपमेंट इन टैलेंट सर्च	,,
90.	सोशल एण्ड कल्चरल चेंज एण्ड चेंजेज इन दि क्रिएटिव फंक्शनिंग आफ चिलड्रेन	,,
91.	स्टडीज इन साइंस टैलेंट	,,
92.	ऐन एवैलुएशन आफ दि काम्प्रीहेन्सिव इंटर्नल ऐसेसमेंट स्कीम ऐडप्टेड बाइ दि बोर्ड आफ सेकंडरी एजुकेशन, राजस्थान, अजमेर, फार क्लासेज IX, X एण्ड XI	,,
93.	ऐसेसमेंट आफ स्कूल एनवाइरनमेंट	,,
94.	डेवेलपमेंट आफ साइकोलाजिकल टेस्ट्स फार सिलेक्शन आफ पुलिस आफिसर्स	,,
95.	मेजरमेंट आफ ऐफेक्टिव आउटकम्स आफ प्राइमरी स्कूल एजुकेशन	,,
96.	नान वर्बल टेस्ट आफ इंटेलिजेंस	,,
97.	डैवेलपमेंट एण्ड ऐडमिनिस्ट्रेशन आफ सेलेक्शन टेस्ट्स फार दि मैनेजमेंट ट्रेनीज आफ दि स्टील अथारिटी आफ इंडिया लिमिटेड एण्ड देयर फालो-अप	,,
98.	फोर्थ आल इंडिया एजुकेशनल सर्वे	स. और आ. सा. प्र. ए.
99.	कम्प्यूटर बेस्ड डेटा बैंक इन दि एन. सी. ई. आर. टी.	,,
100.	डेवेलपिंग ए लाइब्रेरी आफ आडियो-विजुअल टेप्स	शै. प्रौ. के.
101.	(ए) ए स्टडी आफ दि एक्सटेंट आफ यूटिलाइजेशन आफ स्कूल ब्राडकास्ट्स इन देलही	,,
	(बी) ए स्टडी आफ दि एक्सटेंट आफ यूटिलाइजेशन आफ स्कूल टी वी प्रोग्राम्स इन देलही	,,

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
102.	ए स्टडी आफ प्राइमरी स्कूल टी वी प्रोग्राम्स आफ देहली दूरदर्शन	शै. प्रौ. के.
103.	सोशियो-एकोनोमिक सर्वे फार डेवेलपिंग ए करीक्यूलम फार कंटीनुइंग एजुकेशन आफ वीवर्स	,,
104.	मोनीटरिंग आफ रेडियो प्रोग्राम्स आफ यंग चिल्ड्रेन ब्राडकास्ट फाम ए आइ आर स्टेशन, देलही एण्ड पटना	,,
105.	नेशनल ऐक्टिविटीज इन एजुकेशनल इन्नोवेशंस कम्प्राईजिंग : (ए) इंटर प्रोजेक्ट, इंटर इंस्टीट्यूशन, स्टडी विजिट्स आफ एजुकेशनल वर्कर्स (बी) नेशनल डायरेक्टरी आफ एजुकेशनल इन्नोवेशंस	नी. नि. और मू. ए.
106.	फीडबैक फाम टीचर्स एण्ड स्टूडेंट्स इन दि इम्प्लीमेंटेशन आफ दि 10+2 करीक्यूलम	क्षे. स. दिल्ली
107.	डिटर्मिनेशन एण्ड डेवेलपमेंट आफ स्कीम्स आफ थाट इन साइंस ड्यूरिंग एडोलेसंस	क्षे. शि. म. अजमेर
108.	इकोलोजिकल स्टडीज आफ दि सराउंडिंग अक्वेटिक रेल्म	,,
109.	ए स्टडी आफ दि पर्सेप्शंस आफ सेकंडरी स्कूल लर्निंग एनवायरनमेंट बाइ स्टुडेंट्स, स्टाफ एण्ड ऐडमिनिस्ट्रेटर्स	क्षे. शि. म. भोपाल
110.	टु डेवेलप इंस्ट्रक्शनल मैटिरियल फार दि प्रमोशन आफ क्रिएटिव थिंकिंग एण्ड टु डिटर्मिन इट्स इफेक्टिवनेस	,,
111.	डेवेलपमेंट आफ ऐक्टिविटीज फार दि फिजिक्स सिलैबस आफ क्लासेज IX एण्ड X	,,
112.	प्रोजेक्ट एनवायरनमेंट	,,
113.	कमर्शियल ब्रीडिंग आफ आर्नामेंटल एण्ड एक्सोटिक फिशेज एण्ड स्टडी आन दि प्राब्लम्स आफ देयर मेनटेनेंस	,,
114.	इफेक्ट आफ इन्सेक्टिसाइड्स आन टिशू केमिस्ट्री आफ सम फ्रेश वाटर एडीबल फिशेज	,,

क्रम संख्या	शीर्षक	विभाग
140.	मालेक्यूलर थर्मोडायनैमिक्स एण्ड विसस फ्लो प्रापर्टीज आफ लिक्विड मिक्स्चर्स एण्ड पालीमर सैल्यूशन्स	क्षे. शि. म. भुवनेश्वर
141.	वोकेशनल सर्वे आफ पुरी एण्ड क्योंझर डिस्ट्रिक्ट्स	,,
142.	टीचर्स गाइड टु माडेर्न प्रोज (इंग्लिश)	,,
143.	ए डायग्नास्टिक इनवेस्टिगेशन इंटू फार्मेशन, डेवेलपमेंट एण्ड कंजर्वेशन आफ मैथेमेटिकल कंसेप्ट्स इन स्टुडेंट्स ऐट प्राइमरी लेवेल इन रूरल एण्ड अर्बन एरियाज आफ साउथ इण्डियन स्टेट्स	क्षे. शि. म. मैसूर
144.	रिलेशनशिप बिटवीन लेसन फिनेटिक स्ट्रक्चर्स एण्ड लर्निंग आउटकम्स इन स्कूल साइंस	,,
145.	ए स्टडी आफ काम्पेटेंस इन रीडिंग काम्प्रीहेंसन इन इंग्लिश ऐमंग प्यूपिल्स आफ क्लास X इन दि स्कूल्स आफ मैसूर सिटी	,,
146.	ऐनालिसिस आफ कामन एरर्स इन रिटन इंग्लिश कम्पोजीशन आफ स्कूल लीवर्स	,,
147.	स्टडी आफ दि इन्नोवेटिव प्रैक्टिसेज प्रिवेलेंट इन स्कूल्स इन-दि सदर्न रीजन	,,
148.	आइडेंटीफिकेशन आफ डेफीसिएंसीज एण्ड डिफिकल्टीज इन सेकंडरी स्कूल टीचर्स एण्ड फाइंडिंग वेज एण्ड मीन्स टु हेल्प देम	,,

संलग्नक IV

बाहरी परियोजनाएं जो अभी चल रही हैं

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	एजेंसी/व्यक्ति
1.	ए स्टडी आफ दि मैनपावर नीड्स ऐण्ड प्लानिंग रिगार्डिंग टीचर एजूकेशन	डा० के०के० पिल्लै, डीन, शिक्षा संकाय, अन्नामलै विश्वविद्यालय अन्नामलैनगर (तमिलनाडु)
2.	ए स्टडी आफ दि प्राब्लम्स ऐण्ड नीड्स आफ सेकंडरी स्टुडेंट्स लिविंग इन दि स्लम्स आफ वाराणसी	डा० सूर्यनाथ सिंह, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
3.	ए स्टडी आफ एजुकेशनल बैकवर्डनेस आफ दि शेडयूल्ड कास्ट स्टुडेंट्स ऐण्ड ए नीड ओरिएंटेड प्लान फार देयर डेवेलपमेंट	डा० आर० पी० सिंह, रीडर शिक्षा विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
4.	डेवेलपमेंट एण्ड ट्राइ आउट आफ करीक्यूलम फार मेंटली हैंडीकेप्ड चिल्ड्रेन	डा० एन० एन० शुक्ला एच० जे० कालेज आफ एजुकेशन संशोधन सदन, साउथ ऐवन्यू, खार, बम्बई-52
5.	प्राब्लम्स आफ एजुकेशन आफ दि वीकर सेक्शंस आफ सोसायटी विद स्पेसिफिक रेफरेंस टु दि वीकर सेक्शंस इन बड़ोदा डिस्ट्रिक्ट्स, गुजरात स्टेट	प्रो० ए० एस० पटेल अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग एम० एस० यूनिवर्सिटी आफ बड़ोदा, बड़ोदा
6.	ए स्टडी आफ फैक्टर्स डिटर्मिनिंग यूटिलाइज़ेशन आफ एजुकेशनल फैसिलिटीज बाई मुस्लिम कम्यूनिटी आफ बोरसद टाउन एण्ड देयर एजुकेशनल नीड्स	डा० पूरमभाई पटेल प्रिंसिपल, श्री आ० पी० आनन्द कालेज आफ एजुकेशन, बोरसद

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	एजेंसी/व्यक्ति
7.	ए स्टडी आफ दि पैटर्न्स आफ पैरेंटल प्रिफरेंसेज इन रिलेशन टु ऐडोलेसेंट्स पर्सनैलिटी, एचीवमेंट एण्ड ऐडजस्टमेंट	डा० ए० के० गुप्ता, निदेशक माडेल इंस्टीच्यूट आफ एजु-केशन एण्ड रिसर्च, बी० सी० रोड, जम्मू-180001
8.	प्रोग्रैम्ड लर्निंग ऐज फंक्शन आफ ऐंक्जाइटी अंडर डिफेरेंट मोटीवेशनल कंडीशंस	श्री देवेन्द्र श्रीवास्तव, लेक्चरर दयानन्द सुभाष नेशनल कालेज उन्नाव (उ०प्र०)
9.	टु स्टडी दि इफेक्ट्स आफ नायज आन दि टीचिंग, लर्निंग प्रोसेस, (फोकसिंग आन अटेंशन, कंसेंट्रेशन एण्ड रिटेंशन) विद स्पेशल रेफरेंस टु दि कैलकुलेशन आफ इट्स आप्टीमम रेंज इन दि मेनटेनेंस आफ स्कूल एण्ड डिसिप्लिन	श्री एन० डी० नानदर्डीकर चेम्बूर कामप्रीहेन्सिव कालेज आफ एजुकेशन, चेम्बूर नाका, बम्बई-400071
10.	साइकोलाजिकल डेवेलपमेंट एण्ड लर्निंग इन यंग चिल्ड्रेन इन पावर्टी एण्ड इफेक्ट्स आफ इंटरवेंशन्स	डा० श्रीमती सुशीला सिंघल और डा० श्रीमती प्रभा रामलिंग-स्वामी, ज० ने० वि० नई दिल्ली-110057
11.	चिल्ड्रेन्स जजमेंट्स आफ पर्सनल हैपीनेस	प्रो० रामाधार सिंह, मनोविज्ञान के प्रोफेसर, इंडियन इंस्टीच्यूट आफ टेक्नोलाजिकल, कानपुर
12.	आयडेंटीफिकेशन आफ सेलेक्शन क्राइटेरिया फार नेशनल टैलेंट	डा० कुमारी सुदेश गरवर, रीडर, शिक्षा विभाग, पंजाबी विश्व-विद्यालय, चण्डीगढ़
13.	पालिसी आफ नान डेटेंशन इन आंध्र प्रदेश : ऐन एवैलुएशन रिसर्च	डा० उदय सि० देसाई, मेम्बर आफ फैकल्टी, ऐडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कालेज आफ इंडिया, बेला विस्ता, हैदराबाद-500475
14.	ए स्टडी आफ प्रापर्टीज आफ लर्निंग एन-वायरमेंट आफ एचीविंग क्लासेज आफ राजस्थानस्कूल्स	डा० रामपाल सिंह जयलाल शिक्षा संस्थान, अजमेर

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	एजेंसी/व्यक्ति
15.	ए स्टडी ग्राफ दि यूटिलाइजेशन ग्राफ एजुकेशनल फैसिलिटीज बाइ दि स्लम ड्वेलर्स ग्राफ बंगलोर सिटी इन रिलेशन टु देग्रर एकोनोमिक बैकग्राउण्ड	डा० ए० एस० सीतारामु, इंस्टीच्यूट ग्राफ सोशल एण्ड इकोनोमिक चेंज, बंगलोर-560040
16.	डेवेलपिंग इन्स्ट्रक्शनल स्ट्रटेजीज फार टीचिंग हिन्दी ऐज ए सेकंड लैंगवेज टु दि उर्दू मीडियम स्टुडेंट्स ग्राफ देलही ग्रान दि बेसिस ग्राफ ऐन ग्रायडेंटीफिकेशन ग्राफ वैरीएबुल्स इनवाल्व्ड इन दि डिफरेंट ऐस्पेक्ट्स ग्राफ हिन्दी ऐटेनमेंट ग्राफ उर्दू मीडियम चिल्ड्रेन	श्री जयपाल सिंह 'तरंग' टी० जी० टी० (हिन्दी), जामिया हायर सेकडरी स्कूल, शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली-110025
17.	ग्रेडेड ग्रैमर्स इन द्रवीडियन फार हाई स्कूल क्लासेज	डा० वी० ग्राई० सुब्रह्मणियम केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम
18.	दि ऐटीच्यूड्स ग्राफ दि पैरेंट्स एण्ड स्टूडेंट्स ग्राफ ग्रोरंगाबाद टु दि ऐक्विजिसन ग्राफ इंगलिश : ए साइको-सोशियो लिंग्विस्टिक स्टडी	डा० केशव मुतालिक, मराठावाड़ा विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी कैम्पस ग्रौरंगाबाद (महाराष्ट्र)
19.	दि डाइग्नोसिस ग्राफ लैंग्वेज एरर्स एण्ड ए प्रोग्राम ग्राफ रेमेडियल टीचिंग इन हिन्दी	श्री एल० के० ग्रोड, प्रिंसिपल वनस्थली विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय, बनस्थली, राजस्थान
20.	दि डाइग्नोसिस ग्राफ लैंग्वेज एरर्स एण्ड प्रोग्राम ग्राफ रेमिडियल टीचिंग इन संस्कृत	श्री पी० सी० जैन, उच्च शिक्षा एवं ग्रनुसंधान संस्थान, बी० 20 गणेश मार्ग, बापू नगर, जयपुर
21.	डिटर्मिनेशन ग्राफ कम्यूनिकेबिलिटी इन न्यू हिन्दी पोइट्री फ्राम दि प्वाइंट ग्राफ व्यू ग्राफ इट्स टीचिंग इन दि ग्रपर सेकंडरी एण्ड ग्रंडर-ग्रेजुएट क्लासेज	श्रीमती निर्मिला जैन, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली-110007
22.	ए स्टडी ग्राफ दि इफेक्ट ग्राफ माइक्रो टीचिंग ग्रपान जेनेरल टीचिंग काम्पेटेंस एण्ड	डा० मैथ्यू जार्ज शैक्षिक ग्रनुसंधान ग्रौर ग्रध्ययन विभाग

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	एजेंसी/व्यक्ति
	टीचर ऐटीच्यूड आफ बी० एड० ट्रेनीज इन शिलांग	नेहू, शिलांग
23.	डेवेलपमेंट आफ इफेक्टिव टीचिंग मेथड्स फार स्कूल सब्जेक्ट्स—ए स्टैटिस्टिकल इन-वेस्टीगेशन इंटु दि प्राब्लम्स विद स्पेशल एम्फैसिस आन फैक्टर एनालिसिस	श्री के० एस० गुप्ता, अध्यक्ष शिक्षा विभाग, कलकत्ता विश्व-विद्यालय, कलकत्ता
24.	एलीमेंटरी नान फार्मल एजुकेशन फार नान-एनरोल्ड एण्ड ड्राप आउट चिल्ड्रेन बिलो दि एज आफ 14	डा० डी० बी० चित्रकरमणे, अनु-संधान निरीक्षक, ग्रामीण शिक्षा अनुसंधान केन्द्र चित्रकरमणे हाउस, कर्नाटक गोकरण-581326
25.	डेवेलपिंग ऐन इफेक्टिव माडल आफ नान फार्मल एजुकेशन फार रूरल डेवेलपमेंट्स—ए सिस्टम्स अप्रोच	प्रो० जी० बी० शाह, गुजरात विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय परिसर, उढ़ाना—मेगडाल रोड सूरत-395007
26.	इनवेस्टीगेशन आन नान फार्मल साइंस एजुकेशन एण्ड डेवेलपमेंट आफ इनएक्सपेंसिव रिसोर्स मैटीरियल्स	प्रो० ए० एम० घोष, इंडियन एसोसिएशन आफ एक्स्ट्राकरी-क्यूलर साइंटिफिक एक्टीविटीज 93/1, आचार्य प्रफुल्लचन्द्र रोड कलकत्ता-700009
27.	ए स्टडी आफ दि इफेक्टिवनेस आफ सम इम्पार्टेन्ट मेजर्स ऐडप्टेड फार इन्क्रीजिंग एनरोलमेंट एण्ड अटेंडेंस इन प्राइमरी स्कूल्स इन राजस्थान	श्री बी० एल० व्यास, राज्य शिक्षा संस्थान, राजस्थान उदयपुर
28.	प्रिपेरिंग ए डाक्यूमेंटेड हिस्ट्री आफ दि सेवाग्राम एक्सपेरीमेंट	श्री राधाकृष्ण, गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
29.	इंट्रोडक्शन आफ वर्क एजुकेशन इन प्राइमरी स्कूल्स—ए पाइलट स्टडी	प्रो० एस० सी० दास, निदेशक राज्य शिक्षा संस्थान (उड़ीसा) भुवनेश्वर
30.	रोल आफ लेडी टीचर्स इन दि यूनिवर्सलाइ-	श्रीमती लातिका गुप्ता, प्रिंसिपल

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	एजेंसी/व्यक्ति
	जेशन आफ प्राइमरी एजुकेशन	कलकत्ता गर्ल्स बी० टी० कालेज 6/1, स्विनहो स्ट्रीट, कलकत्ता-19
31.	ए स्टडी आफ दि इंसीडेंस एण्ड फैक्टर्स रेस्पान्सिबुल फार ड्रापिंग आउट आफ चिल्ड्रेन फाम म्यूनिसिपल एण्ड लोकल अथारिटी स्कूल्स इन ग्रेटर बांम्बे एण्ड थाना डिस्ट्रक्ट स्टैंडर्ड्स I टु VII ड्यूरिंग दि ईयर्स 1973-74 टु 1976-77	डा० श्रीमती माधुरी आर० शाह, वाइस चांस्लर एस०एन०डी०टी० यूनिवर्सिटी बम्बई-403020
32.	मैनेजमेंट आफ प्राइमरी स्कूल्स अंडर पंचायती राज इन राजस्थान	प्रो० इकबाल नारायण, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
33.	इंडियन पब्लिक स्कूल्स : ए स्टडी आफ देयर ग्रोथ एण्ड डेवेलपमेंट	डा० आर० बी० माथुर, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
34.	दि स्कूल काम्प्लेक्स	प्रो० जय बी० पी० सिन्हा, ए० एन० एस० इन्स्टीच्यूट आफ सोशल साइंस, पटना
35.	ए स्टडी आफ दि प्राब्लम्स एण्ट पैटर्न आफ फंक्शनिंग आफ सिंगिल टीचर स्कूल्स इन राजस्थान (ज्वाइन्ट प्रोजेक्ट आफ आइ सी एस एस आर एण्ड एन सी ई आर टी)	डा० पी० एल० वर्मा अनुसंधान अधिकारी, प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान बीकानेर
36.	ए स्टडी आफ एफीसिएंसी आफ ए स्कूल सिस्टम	श्री० एम० दुरेस्वामी, एस आई टी यू कौंसिल आफ एजुकेशनल रिसर्च, 95 A, रामकृष्ण मठ रोड, राजा अन्नामलैपुरम मद्रास-600028
37.	ए सोश्योलाजिकल स्टडी आफ स्टूडेंट अनरेस्ट : काजेज एण्ड रेमेडीज	डा० एस० के० श्रीवास्तव सोश्योलाजी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	एजेंसी/व्यक्ति
38.	ऐनालाइजिंग टीचिंग बिहेवियर आफ इन सर्विस एण्ड प्रिसर्विस टीचिंग थ्रू इन्टर-ऐक्शन ऐनालिसिस प्रोसीजर	प्रो० के० पी० पाण्डेय, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
39.	ए साइकोलाजिकल स्टडी आफ वर्क ऐडजस्टमेंट ऐन्ड टीचिंग सक्सेस—प्राइमरी स्कूल टीचर्स	प्रो० एस० नारायण राव, मनो-विज्ञान विभाग, एस० वी० यू० कालेज, श्री० वेंकटेश्वर विश्व-विद्यालय, तिरुपति (आंध्र प्रदेश)
40.	ए स्टडी आफ टीचिंग काम्पेटेंसी आफ सेकंडरी स्कूल टीचर्स	डा० बी० के० पासी, प्रोफेसर और अध्यक्ष, शिक्षा विभाग इन्दौर विश्वविद्यालय, इन्दौर
41.	ए स्टडी आफ दि इफेक्टिवनेस आफ प्रिसर्विस टीचर ट्रेनिंग प्रोग्राम ऐट एलीमेंटरी लेवेल इन राजस्थान	श्री० बी० एल० व्यास, निदेशक राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर
42.	ऐन इनवेस्टीगेशन इन्टू दि कालेजेज आफ बैकवर्डनेस इन गर्ल्स एजुकेशन इन दी स्टेट आफ वेस्ट बंगाल विद स्पेशल रेफरेंश टु दि एज ग्रुप 6–14	श्रीमती शान्ति दत्त, प्रिंसिपल, स्त्री शिक्षा संस्थान, 20 बी०, जजेज कोर्ट रोड, हेस्टिंग्स हाउस, अलीपुर कलकत्ता–27
43.	बिब्लयोग्राफी आफ एजुकेशन आफ वीमेन इन इण्डिया (1850–1975)	श्रीमती माधुरा आर० शाह वाइस चांसलर, एस० एन० डी० टी० वीमेंस यूनीवर्सिटी बम्बई-400020
44.	केस स्टडी आफ शिक्षा निकेतन—ए वर्क ओरिएंटेड रूरल इन्स्टीट्यूशन इन दि डिस्ट्रिक्ट आफ बर्दवान	प्रो० एच० बी० मजुमदार, विद्या भवन, विश्वभारती शांन्ति-निकेतन (प० बंगाल)
45.	ऐन एक्सपेरीमेंट इन ओपेन क्लासरूम (फ्री लर्निंग एनवायरनमेंट)	श्रीमती सुदेश सैन, विद्या भवन उदयपुर, राजस्थान
46.	एजुकेशन फार इन्टेग्रल रूरल डेवेलपमेंट इन रांची डिस्ट्रिक्ट	फादर एम० बी० डी० बोगार्ट एस० जे० जेवियर इन्स्टीच्यूट आफ सोशल सर्विस, रांची

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	एजेंसी/व्यक्ति
47.	इन्नोवेशंस इन लर्निंग मेथडोलाजी टु सप्लीमेंट लेक्चरिंग इन दि फर्स्ट एण्ड सेकंड ईयर आफ बी० एससी० इन फिजिक्स	डा० आर० जी० ताकवाले भौतिक, विभाग, पूना विश्व-विद्यालय, पूना–411007
48.	पैटर्न्स आफ स्टूडेंट पार्टीसिपेशन इन दि यूनिवर्सिटी ऐडमिनिस्ट्रेशन	डा० आर० उपाध्याय, रीडर शिक्षा विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–5
49.	एक्सपेरीमेंटेशन इन मेथड्स फार इम्प्रूविंग इन्स्ट्रक्शंस इन ट्रेनिंग कालेजेज	डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ, 110 करणपुर, देहरादून (उ० प्र०)
50.	वोकेशनलाइजेशन ऐट दि हायर सेकंडरी स्टेज आफ दि 10+2+3 पैटर्न आफ एजुकेशन	डा० मिसेज जे० कोठाइ पिल्लै मदुरै विश्वविद्यालय, मदुरै
51.	इस्टैब्लिशिंग नार्म्स फार स्पीड इन रीडिंग तमिल इन स्टैंडर्ड्स 6 टु 8	प्रो० टी० आर सौन्दराजा राव एजुकेशनल रिसर्च, श्रीरामकृष्ण मिशन विद्यालय, टीचर्स कालेज कोयम्बटूर—641020
52.	कान्स्ट्रक्टिंग ए बैटरी आफ साइकोलाजिकल टेस्ट्स एण्ड इस्टैब्लिशिंग प्रोफाइल नार्म्स	श्रीमती उषा खिरे, ज्ञान प्रबोधिनी मनोवैज्ञानिक अनुसंधान और प्रशिक्षण विभाग, 510 सदाशिव पेठ, पुणे–411030
53.	एजुकेशन इनकम रिलेशनशिप्स : ए केस स्टडी आफ एलुम्नी आफ सेलेक्टेड वेस्ट बंगाल एजुकेशनल इन्स्टीट्यूशन	डा० के० मुकर्जी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग तथा डीन वाणिज्य सकाय, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता (प० बंगाल)
54.	दि सर्वे आफ कवाल टाउन्स विद रिगार्ड टु दि अवेलेबिलिटी एण्ड यूज आफ टीचिंग एड्स इन स्कूल्स	श्री ई० पी० भारद्वाज, अवकाश प्राप्त प्रिंसिपल, बी 339, सेक्टर बी, महानगर, लखनऊ
55.	प्राब्लम्स एस्पिरेशंस वैलूज एण्ड पर्सनैलिटी पैटर्न आफ ट्राइबल स्टूडेंट्स आफ मिर्जापुर	डा० एस० एस० श्रीवास्तव लेक्चरर, काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय, वाराणसी-5

क्रम संख्या	परियोजना का शीर्षक	एजेंसी/इंवेस्टिगेटर
56.	प्राब्लम्स आफ गर्ल्स स्टडीग इन को-एजुकेशनल इन्स्टयूशंस आफ वाराणसी रीजन	डा० कमला राय लेक्चरर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5
57.	रिसर्च इन फिजिक्स एजुकेशन यूजिंग नान फार्मल मेथड्स	श्री एस० एन० सिंघल, भौतिकी विभाग, उदयपुर विश्वविद्यालय उदयपुर (राजस्थान)
58.	डेवेलपमेंट आफ एजुकेशनल प्रोग्राम इन साइंस फार अपर प्राइमरी लेवेल बेस्ड आन एनवाइरनमेंट अप्रोच	श्री बी० पी० जोशी, निदेशक राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, उदयपुर
59.	ए स्टडी आफ दि इफेक्टिवनेस आफ यूजिग एजुकेटिव टायज इन टीचिंग साइंस टु V स्टैंडर्ड ओवर दि ट्रैडीशनल मेथड्स	श्री शंकरायम एस० शास्त्री हसन (आन्ध्र प्रदेश)
60.	आयडेंटिटी फार्मेशन आफ शेड्यूल्ड कास्ट स्टूडेंट्स	डा० मिसेज सुमन चिटनिस टी० आई० एस० एस०, बम्बई
61.	सोशल साइकोलाजिकल प्राब्लम्स आफ दि रूरल स्टूडेंट्स माइग्रेटिंग टु अर्बन फार स्टडीज	डा० सुविमल देव, कलकत्ता
62.	टीचिंग आफ बंगाली इन क्लासेज VII एण्ड VIII इन स्कूल्स इन वेस्ट बंगाल टु दोज हूज मदर टंग इज नाट बेंगाली	डा० सुभाष चटर्जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता
63.	ए स्टडी आफ दि एग्रीकल्चरल एजुकेशन ऐज ए सब्जेक्ट इन दि सेकंडरी/सीनियर सेकंडरी स्कूल्स आफ देलही	श्री डी० के० गुप्ता, गवर्नमेंट को-एजुकेशन टीचर्स ट्रेनिंग इन्स्टीच्यूट दरियागंज, नई दिल्ली
64.	एचीवमेंट आफ ट्राइबल स्टुडेंट्स इन रिलेशन टु देयर इन्टेलिजेंस मोटीवेशन एण्ड पर्सनैलिटी	डा० त्रिभुवन सिंह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

8

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

परिषद् के लिए यह चिंता का विषय बना रहा है कि शिक्षा का मार्ग कैसे प्रशस्त किया जाए और देश के विभिन्न भागों में तथा समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य बनी हुई ऊंच-नीच की खाई को कैसे पाटा जाए। इसी के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारा जाए। जन संचार के माध्यम अब एक ऐसी प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराते हैं जिससे ज्ञान और सूचनाओं को, उस दूरी के बावजूद जो ज्ञान देने और लेने वालों के बीच हो सकती है, अधिक पुरअसर तरीकों से संचरित किया जा सकता है, प्रेषित किया जा

सकता है। भारत को अब उस पुराने सोचने के तरीके को छोड़ना होगा जिसके अनुसार पारम्परिक शिक्षक-केन्द्रित कार्यकलाप में प्रौद्योगिकी को बिठाना होता था। अब एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसके अनुसार विज्ञान के सभी संसाधनों को अधिगम-प्रक्रिया में सुव्यवस्थित रूप से लगाना पड़ेगा और अंततः उन संसाधनों को सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के सुधार के लिए एकजुट हो जाना पड़ेगा।

इस वर्ष के दौरान परिषद् द्वारा प्रायोगिक और विकास के कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने का काम जारी रहा जिसके लिए जन संचार के माध्यमों तथा पारम्परिक कम खर्च वाले शिक्षण-साधनों का उपयोग किया गया। परिषद् के शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र तथा शिक्षण साधन विभाग ने शिक्षण-अधिगम यानी सिखाने और सीखने की प्रक्रिया को प्रभावकारी बनाने वाले खेल-खिलौनों और दूसरे दृश्य-श्रव्य साधनों का उपयोग करने के लिए और शिक्षा को रेडियो तथा टी. वी. का सहारा प्रदान करने के लिए कार्यक्रम हाथ में लिए।

इस वर्ष के दौरान केन्द्र ने निम्नलिखित कार्यक्रमों को हाथ में लिया—

शैक्षिक रेडियो

(i) कक्षा I से III तक के बच्चों को रेडियो और अन्य समर्थित सामग्री की मदद से प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ाने की एक व्यवहार्य परियोजना की तैयारी कर ली गई है। इस परियोजना के प्रथम चरण के एक अंग के रूप में, रेडियो कार्यक्रमों एवं समर्पित सामग्री की रूपरेखा बनाने के लिए माउंट आबू में दस दिनों की और दिल्ली में एक सप्ताह की कार्यगोष्ठियां हुई। वास्तविक प्रसारण कक्षा I के लिए जुलाई 1979 से शुरू होंगे और कक्षा II तथा III के लिए बाद के वर्षों में।

(ii) यूनेस्को की प्रार्थना पर केन्द्र ने एक 3 सप्ताहों वाले भारत-मालदीव के संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। शैक्षिक रेडियो प्रोडक्शन वाले इस कार्यक्रम का उद्देश्य था—भारतीय और मालदीवी प्रतिभागियों को शैक्षिक प्रसारण के प्रस्तुतीकरण और शैली की तकनीकों से परिचित कराना तथा उपकरणों की जानकारी देना।

(iii) प्राइमरी स्कूलों के रेडियो प्रसारण के स्क्रिप्ट लेखकों के लिए बंगलौर में एक प्रशिक्षण कोर्स आयोजित किया गया। विभिन्न रूप शैलियों में लिखी गई स्क्रिप्टों को पहले प्रोड्यूस किया गया फिर प्राइमरी स्कूल के बच्चों की प्रतिक्रिया के प्रकाश में उन्हें संशोधित किया गया।

शैक्षिक दूरदर्शन (टी वी)

(i) शैक्षिक दूरदर्शन के स्क्रिप्ट लेखकों के प्रशिक्षण के लिए केन्द्र ने दो कार्य-गोष्ठियां आयोजित कीं—एक लखनऊ में, दूसरी श्रीनगर में। केन्द्र के कार्य-क्रमों में प्रशिक्षित स्क्रिप्ट लेखकों की एक सूची तैयार करना भी शामिल है ताकि देश के विभिन्न भागों में, जहां शैक्षिक दूरदर्शन के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं या निकट भविष्य में ही प्रसारित होंगे, काम कर रहे शैक्षिक दूरदर्शन के स्क्रिप्ट लेखकों का एक पूल बनाया जा सके।

(ii) दिल्ली नगर निगम की प्रार्थना पर केन्द्र ने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन निगम के स्कूलों के टी वी इस्तेमाल करने वाले 160 प्राइमरी शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के निमित्त किया।

दूर से सीखना/पत्राचार शिक्षा

पत्राचार शिक्षा पर नवम्बर-दिसम्बर 1978 में दो-दो दिनों वाली पांच क्षेत्रीय संगोष्ठियों की एक श्रृंखला का आयोजन भोपाल, दिल्ली, अजमेर, मैसूर और बम्बई में किया गया। इन संगोष्ठियों का उद्देश्य यह था कि दूर से शिक्षा देने की प्रणालियों के विविध पक्षों पर विचार-विमर्श हो सके और उन्हें सुधारने के उपायों पर सोचा जा सके। पत्राचार शिक्षा पर नवम्बर 1978 में जो अंतर्राष्ट्रीय सभा भारत में हुई थी, उसमें भाग लेने वाले कुछ विदेशी विशेषज्ञों ने इन संगोष्ठियों में परामर्श देने की कृपा की।

शैक्षिक खेल-खिलौने

पेरिस में हुई यूनेस्को की बीसवीं सामान्य सभा के अवसर पर प्रदर्शनी के लिए केन्द्र ने कुछ ऐसे खिलौने वहाँ भेजे जो भारतीय बच्चे खेलते आए हैं। खिलौनों के साथ जाने के लिये एक स्लाइड-सह टेप कार्यक्रम, एक विडियो टेप, एक छोटी फिल्म और एक पुस्तिका तैयार की गई।

बच्चों के लिए कम खर्च वाले सीधे सादे खिलौनों और खेल सामग्री तथा खेलों पर एक राष्ट्रीय कार्यगोष्ठी का दिल्ली में आयोजन केन्द्र ने किया। कम खर्च वाली सीधी सादी खेल सामग्री प्रदर्शित की गई और उसके निर्माण और बच्चों को पढ़ाने में उसके इस्तेमाल पर चर्चा हुई।

मल्टी मीडिया पैकेज

विज्ञान के प्राइमरी शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए, केन्द्र द्वारा विकसित

मल्टी मीडिया पैकेज के प्रदर्शन के निमित्त एक चार-दिवसीय कार्यगोष्ठी असम के जोरहट में आयोजित की गई। पश्चिम बंगाल, मिजोरम, नागालैंड, असम, अरुणाचल और मणिपुर के प्राइमरी शिक्षकों के प्रशिक्षण से सम्बन्ध अध्यापक प्रशिक्षक और अन्य अधिकारी इस कार्यगोष्ठी में सम्मिलित हुए। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के शिक्षकों के लिए पोर्ट ब्लेयर में इसी प्रकार के प्रदर्शन शिविरों का आयोजन हुआ।

उत्पादन

केन्द्र ने कई फिल्में निर्मित की हैं जिनके नाम हैं:

टीचिंग आफ न्यूट्रिशन

विज्ञान की पढ़ाई

एजुकेशनल टोयज

सोवियत पपेट शो

इनोवेशंस इन एजुकेशन

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी शिक्षण साधन विभाग अनुसंधान और विकास के कार्यों में, विशेषकर कम खर्च वाले शिक्षण साधनों के निर्माण और विकास में लगा रहा। विभाग द्वारा हाथ में ली गई कुछ महत्वपूर्ण गतिविधियाँ नीचे दी जा रही हैं।

1. अनुसंधान परियोजनाएं

(क) शिक्षण-साधन विभाग के उत्पादों का मूल्यांकन

कक्षा IX और X के लिए विज्ञान विषयों में टेप/स्लाइड प्रणाली जैसे शिक्षण-साधनों के उत्पादन के लिए दो उत्पादन-अभिमुखी कार्यगोष्ठियों का संचालन, इस वर्ष किया गया। इन में तेरह टेपस्लाइड प्रणालियों का विकास किया गया। इन उत्पादों को अंतिम रूप देने के लिए विभाग ने तय किया कि इस सामग्री को प्रमाणिकता, औचित्य और फिल्मस्ट्रिपों में दी गई संकल्पना की दृष्टि से जाँचा जाए। अनुभवी अध्यापकों और रा० शै० अ० और प्र० प० के विषय विशेषज्ञों को अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करने के लिए बुलाया गया। दो फिल्मस्ट्रिपों—'मैग्नेटिक इफेक्ट आफ करेंट' और 'दि बिहेवियर आफ गैसेज' को भी मूल्यांकित किया गया।

(ख) भारत में दृश्य-श्रव्य शिक्षा का स्थान

इस परियोजना का उद्देश्य यह पता लगाना था कि देश में दृश्य-श्रव्य शिक्षा की क्या स्थिति है ताकि देश में स्कूल शिक्षा को सुधारने के लिए विभाग भविष्य के कार्यक्रम

सूत्रबद्ध कर सके। दृश्य-श्रव्य शिक्षा की स्थिति का अर्थ हुआ—बोध, प्रशिक्षण, उत्पादन, उपयोग, उपकरण और निधि के बारे में अध्ययन। दृश्य-श्रव्य शिक्षा के इन पक्षों के बारे में एक विस्तृत प्रश्नावली बनाई गई और उसे महाराष्ट्र तथा उत्तर प्रदेश के सभी अध्यापक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों में भेजा गया।

2. फिल्मों का निर्माण

फिल्मों के निर्माण की दिशा में हुई प्रगति का विवरण नीचे दिया जा रहा है :

माइक्रो टीचिंग पर फिल्म	पटकथा लिख ली गई है। शूटिंग इन्दौर विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में होनी है। जुलाई 1979।
सेल्फ और नान-सेल्फ पर फिल्म	विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के सहयोग से पटकथा विकसित कर ली गई है।
परिवेश पर फिल्म	शूटिंग कर ली गई है। इस फिल्म के फायनल प्रिंट के जून 1979 तक बन जाने की उम्मीद है।
लचीलेपन पर फिल्म	पटकथा पूरी कर ली गई है और शूटिंग चल रही है।
दृश्य-श्रव्य शिक्षण (ग्राफिक) पर फिल्म	पटकथा पूरी कर ली गई है और शूटिंग चल रही है।

3. फिल्मस्ट्रिपें और टेप-सह-स्लाइडें

चार फिल्म स्ट्रिपों के परीक्षण प्रिंट निकालने के अलावा विभाग ने ग्रामीण और शहरी स्कूलों के बच्चों के लिए सांची के स्तूपों पर रंगीन स्लाइडों का ऐक सेट निर्मित किया है जिसके साथ कमेंटरी की टेप भी है। लगभग चालीस रंगीन एनलार्जमेंट बन कर तैयार थे। कुछ अभी बनने हैं।

4. उत्पादन की कार्यगोष्ठियाँ और प्रशिक्षण

(क) ग्रामीण कार्यगोष्ठियां

चूंकि भारत के तीन चौथाई या उससे भी अधिक प्राइमरी स्कूल गाँवों में हैं और संसाधनों की दिक्कत के कारण हर स्कूल को शिक्षक के साधन या उपकरण उपलब्ध करा पाना कठिन है, इसलिए यह सोचा जाता है कि अध्यापकों में ऐसी सामर्थ्य विकसित कर दी जाए कि वे स्थानीय रूप में ही अपने को तैयार कर लें। इस उद्देश्य से, विभाग

ने स्कूल अध्यापकों के लिए कार्यगोष्ठियां आयोजित कीं। इन कार्यगोष्ठियों में दस्तकार या कारीगर, विषय विशेषज्ञ और संचार साधनों के लोगों को बुलाया जाता है ताकि वे सीधे सादे शिक्षण साधन बना सकें। इस प्रकार से विकसित किए गए साधन कम खर्च वाले होते हैं और उन्हें स्थानीय संसाधनों और स्थानीय तकनीकों से बनाया जाता है। वर्ष के दौरान इस प्रकार की दो कार्यगोष्ठियां आयोजित की गईं जिनके विवरण नीचे दिए जा रहे हैं—

(i) महाराष्ट्र के नानदरबार में कम खर्च वाले साधन

महाराष्ट्र के धुलिया जिले के नानदरबार के ग्रामीण प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों के लिए कम खर्च वाली शिक्षण सामग्री के निर्माण के लिए एक कार्यगोष्ठी। यह कार्यगोष्ठी धुलिया जिले के जनजातीय इलाकों के 32 अध्यापकों के लिए आयोजित की गई। यह अक्तूबर 1978 में 11 दिनों तक चली।

(ii) केरल के वेलानाड में कम खर्च वाले साधन

त्रिवेन्द्रम जिले के 35 ग्रामीण प्राइमरी स्कूल शिक्षकों के लिए कम खर्च वाले शिक्षण साधनों पर एक कार्यगोष्ठी, वेलानाड के एक स्वैच्छिक संगठन 'मित्रनिकेतन' में 14 से 23 जनवरी 1979 तक आयोजित की गई। इस कार्यगोष्ठी में कम खर्च वाले कई शिक्षण साधन विकसित किए गए। उनके मूल्यांकन के लिए वेलानाड ग्राम के स्कूली बच्चों को भी शामिल किया गया।

देश भर के विभिन्न अध्यापकों को विविध शिक्षण साधनों के निर्माण के उद्देश्य और तरीके प्रदान करने के लिए, विभाग ने सस्ते साधनों के निर्माण का एक कार्यक्रम शुरू किया है। इसमें इस प्रकार के साधनों के निर्माण की जानकारी दी जाती है—बांस की खपच्चियों और सुतली से तराजू बनाना; धातुओं के सिकुड़ने और फैलने की संकल्पना को समझाने के लिए साइकिल के पहिए की तीलियों और लोहा काटने की पुरानी आरी का प्रयोग; माचिस की तीलियों और साइकिल के वाल्व ट्यूब की मदद से द्वि आयामी ज्यामितीय आकृतियाँ बनाना; बबूल के काँटे और साइकिल के वाल्व ट्यूब की मदद से डिवाइडर बनाना।

(ख) उत्पादन-अभिमुखी कार्यगोष्ठियां

इनमें निम्नलिखित शामिल हैं।

(i) विषयों की पहचान : सामग्री के निर्माण के लिए संकल्पनाओं एवं उप-संकल्प

नाओं की पहचान पर एक दो-दिवसीय कार्यगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें दिल्ली प्रशासन के अध्यापक, और विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के विशेषज्ञों ने भाग लिया। विस्तृत संकल्पनाओं और उप संकल्पनाओं वाले कई विषयों की पहचान की गई ताकि कक्षा IX और X के विज्ञान विषयों से संबद्ध फिल्म स्ट्रिपें और अन्य सामग्रियां बनाई जा सकें।

(ii) **कक्षा IX और X के विज्ञान विषयों पर शिक्षण साधन**

यह कार्यगोष्ठी भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में की गई। विज्ञान विषयों की 8 फिल्मस्ट्रिपों की रूपरेखा को बनाया गया। अनुवर्ती कार्य हो रहा है। चार फिल्मस्ट्रिपों के परीक्षण प्रिंट तैयार हैं। इनमें से दो को रा० शै० अ० और प्र० प० के विशेषज्ञों और कुछ अध्यापकों ने जांच लिया है।

(iii) **भौतिकी, रसायन विज्ञान; जीव विज्ञान और गणित के क्षेत्रों में शिक्षण-साधन**

भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव-विज्ञान और गणित के क्षेत्रों में शिक्षण-साधनों के निर्माण के लिए राज्य विज्ञान शिक्षण संस्थान, इलाहाबाद के सहयोग से एक उत्पादन अभिमुखी कार्यगोष्ठी 15 से 23 दिसम्बर 1978 तक संचालित की गई। इस कार्यगोष्ठी के दौरान सात स्क्रिप्टें विकसित की गईं जो अभी प्रारम्भिक अवस्था में ही हैं।

(iv) **सामाजिक विज्ञान**

इतिहास और भूगोल के क्षेत्रों में सामग्री के निर्माण के लिए राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली के सहयोग से एक उत्पादन अभिमुखी कार्यगोष्ठी 12 दिनों के लिए सितम्बर 1978 में की गई। अनुवर्ती कार्य चल रहा है। कार्यगोष्ठी की रिपोर्ट बना ली गई है।

5. शिक्षण-साधनों का अधिग्रहण, उधार और उपयोग

इस वर्ष के दौरान इस विभाग की केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी को 33 नई फिल्में और मिलीं जिससे यहां की कुल फिल्मों की संख्या 8036 हो गई। 317 सदस्यों की अस्थाई सदस्यता रद्द कर दी गई और 50 नए सदस्य बनाए गए। केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी की कुल सदस्यता 31-3-79 को 3300 थी। हमने देश भर की विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं को 7354 फिल्में और 92 फिल्मस्ट्रिपें उधार में दीं। विभिन्न स्थानीय शैक्षिक संस्थाओं के लाभ के लिए 44 फिल्म शो किए गए।

9

प्रतिभा की खोज

परिषद् का एक महत्वपूर्ण कार्य सेकंडरी तथा हायर सेकंडरी स्तरों पर विभिन्न स्वात्रिक अवस्थाओं में देश में प्रतिभा की खोज और पोषण है। सन् 1964 से 1976 तक रा० शै० अ० और प्र० प० ने राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज की योजना पर कार्य किया ताकि उन छात्रों की पहचान की जा सके जिनमें विज्ञान शिक्षा के प्रति विशिष्ट रुझान है। इस योजना के अंतर्गत, पूरे देश में, छात्रों को बड़ी संख्या में छात्रवृत्तियां दी गईं।

रा० शै० अ० और प्र० प० ने समीक्षा समिति की सिफारिशों के

आधार पर सन् 1977 से इस योजना का कार्यक्षेत्र बढ़ा दिया है। मूल विज्ञानों और सामाजिक विज्ञानों के अलावा अन्य व्यावसायिक कोर्सों जैसे औषध तथा अभियांत्रिकी को भी योजना के घेरे में समेट लिया गया है। संदर्भ वर्ष में राष्ट्रीय स्तर पर तीन परीक्षाएं ली गईं—कक्षा X, XI और XII में हरेक के अंत में।

सन् 1978 में, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में, कक्षा X, XI और XII के अंत में क्रमश: 37464, 8760 और 17831 छात्र बैठे।

इस प्रकार छात्रवृत्ति के लिए चुने गए छात्रों को पीएच० डी० स्तर तक छात्रवृत्ति दी जाएगी, यदि छात्र मूल विज्ञानों, कृषि विज्ञानों और सामाजिक विज्ञानों का छात्र बना रहता है, और एम० डी०/एम० एस/एम० टैक० तक छात्रवृत्ति दी जाएगी यदि रा० शै० अ० और प्र० प० व्यावसायिक कोर्सों के अंतर्गत उनका पुन: समर्थन करे।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में छात्रवृत्ति पाने वालों का असंतुलन ठीक करने के लिए परिषद् ने कई विशिष्ट कदम उठाए हैं ताकि गांव के बच्चे और समाज के कमजोर वर्गों के बच्चे इन परीक्षाओं में बैठने की ओर उन्मुख हो सकें। परिषद् द्वारा उठाए गए कुछ कदम इस प्रकार हैं—

1. जनसंचार माध्यमों के द्वारा देश के सुदूर क्षेत्रों को भी समेटने के लिए प्रचार का तीव्र करना।
2. मूल विज्ञानों तथा सामाजिक विज्ञानों के लिए अलग-अलग साक्षात्कार करना और हर साक्षात्कार-मंडल में राज्य का भी एक प्रतिनिधि रखना।

छात्रवृत्तियों की संख्या तथा राशि का विवरण नीचे दिया जा रहा है :—

क्रम संख्या	परीक्षा	छात्रवृत्ति की संख्या	छात्रवृति की राशि
1	2	3	4
1.	कक्षा X	250	(क) दो वर्ष के लिए 150 रु० प्रति मास + 200 रु० प्रति वर्ष पुस्तक अनुदान। इसके बाद (ख) मूल विज्ञानों तथा सामाजिक विज्ञानों में दूसरी डिगरी तक के लिए, और अभियांत्रिकी तथा औषध में पहली डिगरी तक के लिए, 200 रु० प्रतिमास + 300 रु० प्रति वर्ष पुस्तक अनुदान।

1	2	3	4
2.	कक्षा XI	100	(क) एक वर्ष के लिए 150 रु० प्रति मास +300 रु० प्रति वर्ष पुस्तक अनुदान। इसके बाद (ख) मूल विज्ञानों तथा सामाजिक विज्ञानों में दूसरी डिगरी तक के लिए, और अभियान्त्रिकी तथा औषध में पहली डिगरी तक के लिए 200 रु० प्रति मास +300 रु० प्रति वर्ष पुस्तक अनुदान।
3.	कक्षा XII	150	मूल विज्ञानों तथा सामाजिक विज्ञानों में दूसरी डिगरी तक के लिए, और अभियान्त्रिकी तथा औषध में पहली डिगरी तक के लिए 200 रु० प्रति मास +300 रु० प्रति वर्ष पुस्तक अनुदान।

छात्रवृत्ति पाने वाले छात्रों के लिए नियमित अनुवर्त्ती कार्यक्रम चलाए गए हैं। 1977-78 के दौरान, स्नातक-पूर्व स्तर पर छात्रवृत्ति पाने वाले छात्रों को देश में उच्च शिक्षा के विभिन्न केन्द्रों के 12 ग्रीष्म स्कूलों में तथा अभ्यास-ग्रीष्म स्कूलों में रखा गया। स्नातकोत्तर छात्रों को राष्ट्रीय विज्ञान प्रयोगशालाओं एवं उच्च शिक्षा केन्द्रों में भेजा गया, जहां राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज के इन प्रतिभासम्पन्न छात्रों को उनकी स्वतन्त्र अनुसंधान परियोजनाओं के कार्यान्वयन और प्रदर्शन पर व्यक्तिगत रुचि से ध्यान दिया गया।

10

राज्यों के साथ कार्य

परिषद् अपने कार्यक्रमों को राज्यों/संघ क्षेत्रों के सक्रिय सहयोग से कार्यान्वित करती है। इन राज्यों/संघ क्षेत्रों से घनिष्ठ सम्पर्क कायम रखने में परिषद् के क्षेत्रीय कार्यालय और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय माध्यम का काम करते हैं। ये ही परिषद् के कार्यक्रमों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराते हैं और उस जानकारी को राज्यों/संघ क्षेत्रों में फैलाते हैं।

राज्यों की विभिन्न एजेंसियों के साथ सहयोग करके परिषद् के जो कार्यक्रम चलाए गए, उनका एक संक्षिप्त विवरण यहां दिया जा रहा है।

पाठ्यपुस्तक-मूल्यांकन

मध्यप्रदेश के पाठ्यपुस्तक निगम के साथ सहयोग करके पाठ्यपुस्तक विभाग ने राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का एक कार्यक्रम हाथ में लिया। राज्य की चार अल्प-संख्यक भाषाओं—सिंधी, मराठी, गुजराती और उर्दू—की कुल चालीस पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन बीस मूल्यांककों ने किया। अन्तिम रिपोर्ट मध्य प्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम को दे दी गई है।

इसी प्रकार का एक कार्यक्रम आंध्र प्रदेश में भी किया गया जहां हैदराबाद की राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने एक पाठ्यपुस्तक-मूल्यांकन-कार्यगोष्ठी आयोजित की। इस कार्यगोष्ठी में चालीस पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन हुआ।

हिमाचल प्रदेश के लिए पांडुलिपियों के मूल्यांकन का एक कार्यक्रम किया गया। हिमाचल प्रदेश में कोर्स में लगाने के लिए पाठ्यपुस्तकों की पांडुलिपियों के चुनाव में बोर्ड आफ स्कूल एजुकेशन को परिषद् ने सहायता प्रदान की। 75 मूल्यांककों द्वारा 580 पांडुलिपियों का मूल्यांकन किया गया।

विज्ञान के किट

परिषद् के वर्कशाप विभाग द्वारा निर्मित विज्ञान के किटों की लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। मूलरूप से ये किट यूनिसेफ के सहयोग से विकसित किए गए थे। इस वर्ष के दौरान, विभिन्न राज्यों के प्राइमरी और मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान किटों का निर्माण बहुत बड़ी संख्या में किया गया। यूनिसेफ के एक क्रय-आदेश पर 9018 प्राइमरी स्कूल विज्ञान किट (जिनका कुल मूल्य 18.94 लाख रुपए है) बना कर विभिन्न राज्यों को भेजे गए। इनके अलावा 1623 प्राइमरी स्कूल विज्ञान किट आंध्र प्रदेश, मेघालय, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर तथा केरल को भी उनकी प्रार्थना पर भेजे गए। इन राज्यों को कुछ मिडिल स्कूल विज्ञान किट भी भेजे गए। इन 1623 प्राइमरी स्कूल विज्ञान किटों और मिडिल स्कूल विज्ञान किटों का कुल मूल्य 4.76 लाख रुपए है। केन्द्रीय विद्यालयों को भी विज्ञान किट भेजे गए।

अध्यापक प्रशिक्षण और अभिविन्यास

सम्भाव्य अध्यापकों की सामान्य शिक्षण-योग्यता को विकसित करने वाली माइक्रो-टीचिंग तकनीकों के इस्तेमाल के लिए एक छ: दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम अध्यापक-शिक्षा विभाग द्वारा मैसूर में आयोजित किया गया जिसमें 29 राज्यों/संघ क्षेत्रों के 49 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

संलग्नक

पाठकों से निवेदन है कि कृपया नीचे लिखी सामग्री
को भी यथानिर्दिष्ट स्थल पर जोड़ लें।

पृष्ठ 83 पर ऊपर से 13 पंक्तियों के बाद पढ़ें —

बच्चों के लिए आठवीं राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी

विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों में बच्चों की विज्ञान प्रतिभा और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए परिषद् बच्चों की एक राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित करती रही है। यह महत्वपूर्ण कार्यक्रम नई दिल्ली के तीन मूर्ति भवन में जवाहरलाल नेहरू स्मारक कोष के सहयोग से जवाहरलाल नेहरू जन्म दिवस समारोह के अन्तर्गत आयोजित किया जाता है।

इस वर्ष बच्चों के लिए आठवीं राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन 13 नवम्बर 1978 को तीन मूर्ति भवन में भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी के कर कमलों द्वारा हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र ने की।

अधिकांशत: स्कूली बच्चों द्वारा तैयार की गई 400 से अधिक विज्ञान सामग्री प्रदर्शित की गई। छब्बीस राज्यों/संघ क्षेत्रों, केन्द्रीय विद्यालय संगठन जैसी संस्थाओं, दिल्ली प्रशासन के शिक्षा निदेशालय, नई दिल्ली नगर समिति, दिल्ली नगर निगम और कलकत्ता के बिड़ला औद्योगिक एवं शिल्पविज्ञानी संग्रहालय ने अपनी प्रदर्शसामग्री प्रस्तुत की। लगभग 200 शिक्षकों के साथ लगभग 400 विद्यार्थियों ने इस प्रदर्शनी में भाग लिया।

इस वर्ष की प्रदर्शनी के विषय थे : ग्रामीण विकास के लिए शिल्प विज्ञान; ऊर्जा एवं ईंधन; मनुष्य और मशीन; संचार और यातायात; अन्तरिक्ष विज्ञान; मानव और परिवेश; जनसंख्या ; खाद्य एवं कृषि; पोषण और स्वास्थ्य; तथा विज्ञान और गणित शिक्षण में नवाचार।

इसके अलावा भाग लेने वाले विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लाभ के लिए दो लोकप्रिय भाषण भी हुए।

अब पृष्ठ 101 पर ऊपर से 8 पंक्तियों के बाद पढ़ें —

अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के कार्यक्रम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के सम्बन्ध में हाथ में लिए गए कार्यक्रमों की केन्द्रीय विषय वस्तु उपेक्षित बच्चा और उसकी विशेष आवश्यकताएं तथा समस्याएं थीं। जनवरी से मार्च 1979 तक के इन कार्यक्रमों का विवरण आगे दिया जा रहा है।

शिशुओं के लिए पुस्तकें

रा० शै० अ० और प्र० प० की शिशु माध्यम प्रयोगशाला ने यूनिसेफ की सहायता से 4 से 8 वर्ष के शिशुओं के लिए दस चित्र-कथा-पुस्तकें तैयार कीं। ये पुस्तकें रंग-बिरंगे चित्रों से भरी हुई हैं और इनका उद्देश्य शिशुओं में भाषा का विकास करना और उनमें पढ़ने की रुचि जगाना है। पिछड़े इलाकों के प्राथमिक स्कूलों और बालवाड़ियों में इन पुस्तकों को वितरित किया जा रहा है। इन पुस्तकों को क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनूदित किया जा रहा है।

बालगीत

सौ से ऊपर शिशु गीतों और तुकबन्दियों का एक संग्रह स्कूल-पूर्व और प्राथमिक स्कूलों के इस्तेमाल के लिए प्रकाशित किया गया है। इसकी रचना चलते-फिरते शिशु-गृहों की सहायता से की गई है। इसके चित्र भी चलते-फिरते शिशु-गृहों के बच्चों ने बनाए हैं।

अभिभावकों के लिए पुस्तिकाएं

अभिभावकों और शिक्षकों के लिए दस पुस्तिकाएं रची गई हैं। शिशुओं के मनोरंजन के लिए और उन्हें व्यस्त रखने के लिए किए जाने वाले अधिगम अनुभवों को ये पुस्तिकाएं बताती हैं। सरल हिन्दी में लिखी गई इन पुस्तिकाओं की विषय-वस्तु इस प्रकार है— त्योहार, विज्ञान के अनुभव, खेल और रचनात्मक क्रियाएं, शिशुओं के लिए खिलौनों की कहानियां, खेल, गीत। ये पुस्तकें महिला मंडलों और आंगनवाड़ी के कर्मियों के माध्यम से बांटी जाएंगी।

शिक्षक कार्य गोष्ठियां

शिशु माध्यम प्रयोगशाला ने कम खर्च वाली सीधी सादी खेल सामग्रियों और खेलों पर एक राष्ट्रीय कार्य गोष्ठी आयोजित की जिसने विभिन्न राज्यों में उपलब्ध बेकार सामग्री की सूची तैयार की और यह पता लगाया कि उनको किस प्रकार से शैक्षिक और खेल सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इस कार्य गोष्ठी की दो रिपोर्टें उपलब्ध हैं। एक विस्तृत रिपोर्ट और दूसरी संक्षिप्त। इस राष्ट्रीय कार्य गोष्ठी के बाद इसी प्रकार की दो प्रादेशिक कार्य गोष्ठियां पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक संस्थाओं के शिक्षकों के लिए पंजाब और उड़ीसा में भी आयोजित की गईं।

फिल्में

शिक्षा प्रौद्योगिकी विभाग ने एक फिल्म बनाई है– 'खिलौना'। भारतीय खिलौनों पर एक स्लाइड-कम-टेप भी बनी है।

फिल्म 'कृष्ण—मैजिक चैरियट' जो पूरी कर ली गई है, बच्चों में जिज्ञासा की वृत्ति के विकास की आवश्यकता पर बल देती है।

पश्चिम बंगाल, असम, बिहार, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश के सेकंडरी अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए माइक्रो-टीचिंग में एक क्षेत्रीय प्रशिक्षण कोर्स अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित किया गया जिसमें 63 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

विज्ञान शिक्षा में सुधार

विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत, राज्यों के साथ सहयोग करके विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग ने वर्ष के दौरान उल्लेखनीय कार्य किया। 972 अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों को स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षण के सुधार के लिए उपकरण प्रदान किए गए। कार्यक्रम की यूनिसेफ परियोजना 1, 2 और 3 के अन्तर्गत राज्यों को किताबें छापने के लिए कागज दिया गया।

राज्य स्तर की कई विज्ञान प्रदर्शनियों की व्यवस्था करने में, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग ने मध्य प्रदेश के राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान की मदद की।

'टीचर्स गाइड फार एनवाइरनमेंटल स्टडीज फार क्लासेज I एण्ड II' के हिन्दी संस्करण को भी विकसित किया गया।

प्राथमिक शिक्षा का सुधार

प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास सेल यूनिसेफ की परियोजना 2 और 3 के कार्यक्रमों की जांच-परख और देखरेख 15 राज्यों में करता आ रहा है। समीक्षाधीन वर्ष में इसने इस देखरेख के अलावा तीन राष्ट्रीय गोष्ठियां भी मद्रास, गोहाटी और पटना में आयोजित कीं।

सिक्किम सरकार की प्रार्थना पर, परिषद् की एक पी० सी० डी० सी० टीम (प्रा० पा० वि० से० दल) ने राज्य में प्राथमिक स्तर के लिए एक पाठ्यक्रम विकसित करने में उनकी मदद की।

व्यावसायीकरण

शिक्षा के व्यावसायीकरण के अपने एकक के माध्यम से परिषद् ने राज्यों के साथ सहयोग करना जारी रखा। इसकी एक विस्तृत रिपोर्ट अध्याय 4 में दी गई है।

शिक्षण-साधन

राज्य शिक्षा संस्थान और राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान के लिए कई उत्पादन-

अभिमुखी कार्यगोष्ठियां परिषद् के शिक्षण-साधन विभाग ने विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों में आयोजित कीं। भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और गणित में शिक्षण साधनों को बनाने के लिए, इलाहाबाद के राज्य विज्ञान शिक्षण संस्थान के सहयोग से एक उत्पादन-अभिमुखी कार्यगोष्ठी आयोजित की गई और सात पटकथाएं उनसे सम्बद्ध दृश्य सामग्री के साथ विकसित की गईं।

इतिहास और भूगोल में सामग्रियों के निर्माण के लिए, दिल्ली के राज्य विज्ञान शिक्षण संस्थान के सहयोग से, विभाग ने एक उत्पादन-अभिमुखी सामाजिक विज्ञान की कार्यगोष्ठी भी आयोजित की।

राज्यों की सहायता करने के क्षे० शि० म० के कार्यक्रम

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों ने विभिन्न राज्यों में राज्य शिक्षा विभागों के सहयोग से उनके अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के लाभ के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित किए। राज्य शिक्षा अधिकारियों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्य गोष्ठियों और विचार गोष्ठियों में साधन सम्पन्न व्यक्तियों के तौर पर कार्य करने के लिए स्टाफ के सदस्यों को भी प्रतिनियुक्त किया गया।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के लिए पाठ्यचर्या बनाने और मूर्तिकला का पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए उड़ीसा के बोर्ड आफ़ सेकंडरी एजुकेशन की सहायता भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के शिल्प विज्ञान विभाग ने की।

बिहार, उड़ीसा और असम के राज्यों का अध्यापक-शिक्षा-पाठ्यक्रम बनाने में भुवनेश्वर के क्षे० शि० म० के प्रोफेसर के० सी० पंडा ने सहायता प्रदान की।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

शैक्षिक रेडियो, शैक्षिक टी वी, पत्राचार शिक्षा, माध्यम उपयोग आदि के क्षेत्र में मूल्यांकन-अध्ययन करने में और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों के साथ घनिष्ठ सहयोग करने में, परिषद् के शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र ने अपना कार्य जारी रखा। शैक्षिक प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में राज्यों के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने और बेहतर कार्यक्रम नियोजित करने में राज्यों की सहायता करने के निमित्त ये कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। शै० प्रौ० के० द्वारा आयोजित अध्यापक-प्रशिक्षण और सामग्री-निर्माण के कार्यक्रम ने उल्लेखनीय रूप से उन राज्यों को प्रभावित किया जिन्होंने सहयोग किया।

समीक्षाधीन वर्ष में, शै० प्रौ० के० ने विश्वविद्यालयों को भी सहयोग प्रदान किया। अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी में एक अभिविन्यास कोर्स के माध्यम से शैक्षिक प्रौद्योगिकी के विविध पक्षों में विश्वविद्यालयों के वरिष्ठ शिक्षकों को अभिविन्यस्त किया गया।

अध्यापक-प्रशिक्षण कोर्सों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर कई विश्वविद्यालयों ने विशिष्ट पेपर भी तैयार कराए। शै॰ प्रौ॰ कें॰ ने परिषद् के अन्य विभागों के सहयोग से शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर कई कोर्स भी सुव्यवस्थित तरीके से आयोजित किए। माइक्रो टीचिंग, नियोजन एवं चयन के माध्यम, संचार साधन, कार्यक्रम अनुदेश, दल प्रशिक्षण जैसे विषयों को इन कोर्सों में समेट लिया गया था।

अनवरत शिक्षा के केन्द्र

देश के विभिन्न भागों में फैले हुए शिक्षकों की शैक्षिक जरूरतों को कम खर्च और प्रभावकारी तरीके में पूरा करने के लिए बहुत बड़ी संख्या में अनवरत शिक्षा के केन्द्रों को स्थापित करने की एक नई योजना परिषद् ने प्रारम्भ की है। इन केन्द्रों के कार्यक्रम इस प्रकार होंगे :

1. हर केन्द्र सेकंडरी स्कूल शिक्षकों और प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों को, जोकि उसके अपवाह क्षेत्र में काम करते हैं, अनवरत शिक्षा उपलब्ध कराएगा।
2. शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सामग्री के विकास में लगे हुए परिषद् के विभिन्न घटकों को यह केन्द्र सहायता प्रदान करेगा।
3. पढ़ाई के बीच में ही स्कूल छोड़ देने वाले ग्रामीण बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा जैसे विषयों से सम्बद्ध अन्य अनुमोदित कार्यक्रम भी ये केन्द्र शुरू कर सकते हैं।
4. अनौपचारिक या प्रौढ़ शिक्षा के जानकार व्यक्तियों के प्रशिक्षण का काम भी कोई केन्द्र हाथ में ले सकता है।

इस योजना के अंतर्गत, किसी भी केन्द्र पर होने वाले रु॰ 59,400 के वार्षिक खर्च को परिषद् और राज्य सरकार/संघ क्षेत्र के बीच आधा-आधा बांट दिया जाएगा। लेकिन शुरू में हर केन्द्र को रु॰ 17,000 रा॰ शै॰ अ॰ और प्र॰ प॰ की ही ओर से दिए जाएंगे।

समीक्षाधीन वर्ष में, विभिन्न राज्यों में 39 केन्द्र स्थापित किए गए। अभी तक कुल मिलाकर 90 केन्द्रों की स्थापना इन राज्यों या संघ क्षेत्रों में की जा चुकी है—आंध्र प्रदेश, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, अरुणाचल प्रदेश, असम, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, कर्नाटक, केरल, गुजरात, चण्डीगढ़, तमिलनाडु, दिल्ली, नागालैंड, पांडीचेरी, मणिपुर, मिजोरम, महाराष्ट्र, बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश। इन 90 केन्द्रों में से 50 केन्द्रों ने समीक्षाधीन वर्ष में कार्यक्रम चलाए।

11

परामर्श तथा सूचना सेवाएं

राज्यों, संघ क्षेत्रों व शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही अन्य एजेन्सियों की प्रार्थना पर परिषद् उन्हें परामर्श और सूचना सेवाएं प्रदान करती है। परिषद् के कर्मचारी भी विभिन्न संस्थानों से माँग होने पर, उन्हें अपनी सेवाएं उपलब्ध कराते हैं जो प्राय: इस प्रकार होती हैं — विशेषज्ञ बनकर, सम्पादक मंडल के सदस्य बनकर, शैक्षणिक दलों के सदस्य बनकर, आदि। परिषद् की यह परामर्श सेवा इतनी व्यापक है कि यहाँ इस वर्ष के दौरान किए गए सभी कामों को गिना पाना सम्भव नहीं है, अलबत्ता कुछ प्रमुख कार्यों की जानकारी आगे दी जा रही है।

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग तथा वर्कशॉप विभाग

विज्ञान उपकरणों के निर्माण और सम्बद्ध पक्षों के अध्ययन निमित्त वियतनाम के शिक्षा मंत्रालय के आठ सदस्यों का एक दल, नवम्बर 1978 के पहले सप्ताह में भारत आया। इस दल के नेता डा० त्रान दान क्रोइ थे और दल के साथ पेरिस के यूनेस्को उपकरण प्रभाग के श्री एस० हैकनसन भी थे। परिषद् के विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग तथा वर्कशाप विभाग ने दल को दिल्ली के दो वैज्ञानिक उपकरण निर्माताओं का निर्माण विभाग दिखाया। दल को सी एस आइ ओ और चंडीगढ़ के इंडो-स्विस ट्रेनिंग सेंटर को भी ले जाया गया। विज्ञान उपकरणों के उपयोग का एक नमूना समझने के लिए उन्हें दिल्ली का एक स्कूल भी दिखाया गया।

जेनेवा में होने वाली तृतीय विश्व दूरसंचार प्रदर्शिनी (टेलिकॉम 1979) के अवसर पर आयोजित तीसरी अंतर्राष्ट्रीय इलेक्ट्रानिक युग के युवा प्रतियोगिता के लिए प्राप्त हुई राष्ट्रीय स्तर की प्रविष्टियों की जाँच केंद्रीय शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय के आग्रह पर विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग ने की।

प्राथमिक स्तर पर विज्ञान पढ़ाने के लिए परिवेशीय और स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, त्रिपुरा, और अंडमान निकोबार द्वीप समूह को; विज्ञान में प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम की समीक्षा के लिए पश्चिमी बंगाल को; सेकंडरी अध्ययन के लिए राष्ट्रीय परिषद् की समाकलित विज्ञान पाठ्यपुस्तकें अपनाने के लिए बिहार को; स्कूलों में विज्ञान की पढ़ाई के सुधार के लिए उत्तर-पूर्वी इलाके के राज्यों और संघ क्षेत्रों को; स्कूल दूरदर्शन कार्यक्रम आयोजित करने के लिए दिल्ली प्रशासन को; और बहुत से कार्यक्रमों को करने में दिल्ली शिक्षा निदेशालय, दिल्ली नगर निगम व नई दिल्ली नगर निगम को वि० और ग० शि० विभाग ने परामर्श दिए।

तिब्बती स्कूलों और केन्द्रीय विद्यालयों के लिए शिक्षकों के चयन में और आणविक ऊर्जा विभाग के स्कूलों के पाठ्यक्रम-विकास, प्रशिक्षण और प्रसार गतिविधियों में परिषद् ने अपना परामर्श प्रदान किया।

पोलिटेक्नीक छात्रों के लिए रसायन विज्ञान में टेस्ट आइटमों के बनाने में चंडीगढ़ के टेक्निकल टीचर ट्रेनिंग इंस्टीच्यूट, उत्तरी क्षेत्र को परामर्श प्रदान किया गया।

वर्कशाप विभाग का अध्यक्ष भारतीय मानक संस्थान की शैक्षिक-उपकरण-उप समिति का एक सदस्य है, इस प्रकार परिषद् शैक्षिक-उपकरणों के मानकों के सूत्रीकरण में भाग लेती है। भारतीय मानक संस्थान को जाँच के सामानों के डिजाइन और बढ़ोतरी के लिए परामर्श प्रदान किया गया।

परिषद् के वर्कशाप विभाग ने दिल्ली प्रशासन और सेंट्रल बोर्ड आफ सेकंडरी

एजुकेशन को टेक्निकल विषयों में प्रशिक्षण, व्यवसाय, पाठ्यचर्याओं आदि के बारे में जब भी जैसी जरूरत पड़ी है, परामर्श प्रदान किया है।

समीक्षाधीन वर्ष में दूसरे देशों को भी परिषद् की परामर्श सेवाएं उपलब्ध कराई गई हैं। द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अंतर्गत, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के सूचना सामग्री केन्द्र ने शिक्षण सामग्री और अन्य प्रासंगिक सूचनाएं ट्यूनिसिया, क्यूबा और बेल्जियम को प्रदान कीं।

अजमेर का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय ने राजस्थान के विविध स्कूलों और कालेजों को परामर्श प्रदान करने का काम जारी रखा। महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग ने दिल्ली के राज्य शिक्षा संस्थान, राजस्थान के बोर्ड आफ सेकंडरी एजुकेशन और कुछ स्थानीय स्कूलों को परामर्श सेवाएं प्रदान कीं।

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

सा० वि० एवं मा० शि० वि० ने सेंट्रल बोर्ड आफ सेकंडरी एजुकेशन को हायर सेकंडरी स्तरों पर सामाजिक विज्ञानों एवं भाषाओं के पाठ्यक्रम सुधारने और अंतिम रूप देने में मदद की।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, तिब्बती स्कूल संगठन, आंध्र शिक्षा समिति, दिल्ली के राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली प्रशासन के शिक्षा विभाग, दिल्ली नगर निगम और बम्बई नगर निगम के अध्यापकों का अभिविन्यास करने में सा० वि० एवं मा० शि० वि० ने सहयोग प्रदान किया। विभाग ने गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, जैन स्टडी सर्किल, श्री अरविंद केन्द्र आदि के शैक्षणिक कार्यक्रमों में भी सहयोग दिया।

पुस्तकालय और प्रलेखन एकक

पुस्तकालय और प्रलेखन एकक ने शोधकर्ताओं और परिषद् के शैक्षणिक कर्मचारियों को और केन्द्रीय शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय को सूचनाएं और संदर्भ सेवाएं उपलब्ध कराने का काम जारी रखा। इसने सारे भारत के अनुसंधान कर्मियों को अपनी परामर्श सेवाएं भी प्रदान कीं।

नीति नियोजन और मूल्यांकन एकक

जुलाई 1978 में कोलम्बो में हुई शिक्षा मंत्रियों की क्षेत्रीय गोष्ठी के लिए भारत

की ग्रोर से प्रस्तुत किए गए प्रबंध की रचना इसी एकक ने की थी। पेरिस में ग्रक्टूबर 1978 में हुई यूनेस्को की सामान्य सभा के भारतीय प्रतिनिधि मंडल के वास्ते भी इसी एकक ने वक्तृता तैयार की थी। जुलाई 1979 में जेनेवा में होने वाली शिक्षा की ग्रंतर्राष्टीय गोष्ठी के सैंतीसवें ग्रधिवेशन के लिए भारत की ग्रोर से पढ़े जाने वाले प्रबंध ग्रौर एक प्रश्नावली का निर्माण भी इसी एकक ने किया।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान इस एकक ने पेरिस में ग्रक्टूबर 1978 में हुई यूनेस्को की सामान्य सभा के विचाराधीन विषयों में 1979-80 के यूनेस्को बजट पर, शिक्षा की ग्रंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी के पिछले ग्रधिवेशनों में पारित प्रस्ताव संख्या 68 ग्रौर 69 के कार्यान्वयन पर, ग्राकाश भारती की रिपोर्ट पर ग्रौर भाषाई ग्रल्पसंख्यकों के ग्रायुक्त की रिपोर्ट पर समीक्षा की।

परीक्षा सुधार एकक

ग्रपने परीक्षा सुधार कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में एकक ने निम्नलिखित संगठनों को वर्ष के दौरान परामर्श दिया —

(i)	ग्रसम	समाजोपयोगी उत्पादन कार्य के मूल्यांकन का कार्यक्रम विकसित करने में राज्य को सहायता दी गई।
(ii)	उड़ीसा	बोर्ड को ग्रपने कार्यक्रमों की समीक्षा करने में सुझाव दिए गए।
(iii)	केरल	ग्रत्तिगल जिले में ग्रांतरिक मूल्य निर्धारण की परियोजना की जाँच परख के लिए एक कार्यक्रम विकसित करने में राज्य की सहायता की गई।
(iv)	बिहार	परीक्षा सुधार के कई चरणों वाले एक कार्यक्रम को विकसित करने में बोर्ड की सहायता की गई।
(v)	महाराष्ट्र	लिखित परीक्षाग्रों के सुधार वाली परियोजना को सुझावों ग्रौर प्रशिक्षण के माध्यम से फिर लागू किया गया।

मारीशस के मोका स्थित महात्मा गांधी संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों के एक दल को मूल्यांकन की संकल्पना और तकनीकों में छ: सप्ताह के अभिविन्यास कार्यक्रम की सुविधाएं प्रदान की गईं। दल को मारीशस में परीक्षा सुधार का एक कार्यक्रम विकसित करने में भी सहायता प्रदान की गई।

स्कूल शिक्षा विभाग

अनौपचारिक शिक्षा, पाठ्यक्रम-प्रयोग और कार्यान्वयन तथा समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के क्षेत्रों में विभिन्न राज्य शिक्षा विभागों को विभाग सलाह-मशवरा देने का काम करता रहा। विभाग के अधिकारियों ने विभिन्न राज्यों के दौरे किए और शिक्षा विभागों के राज्य शिक्षा संस्थानों और राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों के अधिकारियों के साथ मिलकर काम किया।

अध्यापक शिक्षा विभाग

माइक्रो टीचिंग, अध्यापक की प्रभावकारिता, अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम विकास आदि, विशेषकर प्राथमिक अध्यापक शिक्षा के क्षेत्रों में अध्यापक शिक्षा विभाग ने परामर्श देने का काम जारी रखा।

अन्य संगठनों को दी गई सेवाएं

1. **सबइंस्पेक्टर आफ पुलिस की भर्ती के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं का विकास** : इस परियोजना को परिषद् ने गृह मंत्रालय के आग्रह पर अपने हाथ में लिया। 18 परीक्षाओं वाली एक माला का विकास किया गया जो कर्मियों के वास्तविक चयन के समय प्रयुक्त होगी।

2. **विभिन्न माध्यमों के लिए चयन की परीक्षाएं** : विभिन्न स्तरों के कर्मचारियों के चयन के लिए विभिन्न सरकारी और अर्द्ध सरकारी संस्थाओं की सहायता करने के उद्देश्य से परिषद् ने मनोवैज्ञानिक परीक्षाएं, उपलब्धि परीक्षाएं और सामान्य ज्ञान परीक्षाएं विकसित कीं। समीक्षाधीन वर्ष में ऐसे चार चयनों में सहायता प्रदान की गई।

   भारत के और बाहर के विशेषज्ञों के परामर्श प्राप्त करने का काम परिषद् करती रही।

12

प्रकाशन

परिषद् का एक महत्वपूर्ण और नियमित कार्य उच्च स्तर और गुणवत्ता वाली पाठ्यपुस्तकों तथा सम्बद्ध शिक्षण सामग्री का प्रकाशन और वितरण है, साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में परिषद् द्वारा किए गए अनुसंधानों एवं प्रयोगों के परिणामों और निष्कर्षों के बारे में जानकारी को छापकर फैलाने का काम भी इसी के साथ है। प्रकाशन विभाग के माध्यम से परिषद् शिक्षा के क्षेत्र में एक व्यापक श्रेणी के प्रकाशनों को छापती और वितरित करती है। प्रकाशन इस प्रकार के हैं : स्कूलों के लिए पाठ्य-पुस्तकें, अभ्यास पुस्तिकाएं, शिक्षक-

संदर्शिकाएं, पूरक पठन सामग्री, अनुसंधान प्रबंध और प्रतिवेदन, शैक्षिक सर्वेक्षण, शिक्षण सामग्री, शैक्षिक पत्र-पत्रिकाएं, पैम्फलेट और विवरणिकाएं।

इस वर्ष के दौरान प्रकाशन गतिविधि का केन्द्र नई शिक्षा प्रणाली के लिए बनी नई पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन और वितरण ही रहा। इस वर्ष प्रथम संस्करण वाली अंग्रेजी/हिन्दी की 62 पाठ्यपुस्तकें और उर्दू की 26 नई पाठ्यपुस्तकें अर्थात् कुल मिलाकर 88 नई पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की गईं। साथ ही 66 पाठ्यपुस्तकों का पुनर्मुद्रण, 17 अनुसंधान और विकासात्मक पुस्तकों का प्रकाशन, और परिषद् की पत्रिकाओं के 39 अंकों का प्रकाशन भी हुआ।

परिषद् द्वारा लिए गए एक पूर्व निर्णय के अनुसार ये सभी पुस्तकें परिषद् के प्रकाशन विभाग द्वारा ही प्रकाशित की गईं। अलबत्ता कुछ निजी प्रकाशकों को पिछले वर्ष परिषद् की कुछ पाठ्यपुस्तकें छापने और वितरित करने के लिए दी गई थीं। उन्हें 1978-79 के दौरान उन्हीं पुस्तकों को पुनर्मुद्रित करके वितरण करने का अधिकार दिया गया। इस प्रकार इस वर्ष के दौरान निजी प्रकाशकों ने 45 पाठ्यपुस्तकों के पुनर्मुद्रण छाप कर वितरित किए। समीक्षाधीन वर्ष में जापानी प्रकाशक मैसर्स तीकोकू शोइन एण्ड कम्पनी ने रा० शै० अ० और प्र० प० की पाठ्यपुस्तक 'भारत विकास की ओर' का द्वितीय जापानी संस्करण प्रकाशित किया। इस पुस्तक का पहला जापानी संस्करण भी इसी प्रकाशक ने पहले छापा था, जिसकी रायल्टी 7 प्रतिशत के हिसाब से मिली थी। इस नए जापानी संस्करण की रायल्टी 10 प्रतिशत की दर से प्रकाशक देंगे।

रा० शै० अ० और प्र० प० की सहायक पुस्तक 'इकबाल : जिंदगी, शख्सियत और शायरी' (लेखक श्री जगन्नाथ आजाद) को पंजाब सरकार का उर्दू साहित्य पुरस्कार मिला है।

रा० शै० अ० और प्र० प० के प्रकाशनों का राष्ट्रीय वितरक है—केन्द्रीय सूचना और प्रसारण मंत्रालय का दिल्ली स्थित प्रकाशन विभाग। यह इस वर्ष भी परिषद् के प्रकाशनों की बिक्री और वितरण का काम उत्तरी, पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों में अपने सेल्स एम्पोरियमों (नई दिल्ली, बम्बई और कलकत्ता में) के माध्यम से करता रहा। दक्षिणी क्षेत्र में पुस्तकों की बिक्री और वितरण का काम परिषद् का प्रकाशन विभाग स्वयं ही देखता रहा। परिषद् की पत्रिकाओं की बिक्री और वितरण का काम भी परिषद् के प्रकाशन विभाग के ही पास रहा।

प्रकाशित पुस्तकों की वर्गीकृत सूची इस प्रकार है :

(1) प्रथम संस्करण वाली नई पाठ्यपुस्तकें	62+उर्दू की 26=88 पाठ्यपुस्तकें
(2) पुनर्मुद्रित पाठ्यपुस्तकें	66

(3)	अभ्यास पुस्तिकाएं	12
(4)	सहायक पुस्तकें	3
(5)	अनुसंधान प्रबंध व विकासात्मक सामग्री/प्रतिवेदन	17
(6)	पत्रिकाओं के अंक	39
(7)	निजी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकें	45

परिषद् ने भारत में हुए निम्नलिखित पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में भाग लिया :

(1) बंगलोर में हुआ राष्ट्रीय पुस्तक मेला।

(2) नई दिल्ली के तीन मूर्ति भवन में हुई राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी।

नई दिल्ली के नेशनल बुक ट्रस्ट के माध्यम से रा० शै० अ० और प्र० प० के चुने हुए प्रकाशनों को भेजकर 1978-79 वर्ष के दौरान परिषद् ने निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में भी भाग लिया :

(1) सेंट्रल यूनियन तोरीनो, रोम द्वारा अक्टूबर-नवम्बर 1978 में आयोजित स्कूली पुस्तकों का उत्सव।

(2) सिंगापुर में 26 अगस्त से 4 सितम्बर 1978 तक आयोजित 10वां पुस्तक उत्सव और पुस्तक मेला।

(3) घाना (ऐक्रा) में नवम्बर 1978 में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी।

(4) तीसवां फ्रेंकफर्ट पुस्तक मेला, 1978।

(5) 11वां अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, सोफिया 1978।

(6) 11वां अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, काहिरा।

(7) अंतर्राष्ट्रीय बाल पुस्तक प्रदर्शनी, अंकारा।

(8) ढाका और चिटगांव में भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी।

(9) मारीशस, कीनिया और तंजानिया में पुस्तक प्रदर्शनियां।

(10) स्विटजरलैंड में बाल पुस्तक प्रदर्शनी।

वर्ष के दौरान निम्नलिखित राज्य सरकारों/राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तक एजेंसियों को रा० शै० अ० और प्र० प० की अनेक पाठ्यपुस्तकें अनुकूलित कर अपना लेने की अनुमति दी गई :

(1) गुजरात सेकंडरी शिक्षा बोर्ड, गुजरात।

(2) राज्य शिक्षा संस्थान, पूना, महाराष्ट्र।

(3) राज्य शिक्षा संस्थान, गुड़गांव, हरियाणा।

(4) स्कूल शिक्षा बोर्ड, हिमाचल प्रदेश।

(5) मध्य प्रदेश बोर्ड आफ सैकंडरी एजुकेशन, भोपाल।

वर्ष के दौरान रा० शै० अ० और प्र० प० के प्रकाशनों की रु० 84,67,264.93 की बिक्री हुई। निजी प्रकाशकों से रु० 7,76,720.28 की रायल्टी प्राप्त हुई। साथ ही, 'भारत विकास की ओर' के जापानी संस्करण के निमित्त मेसर्स तीकोकू शोइन एंड कम्पनी से $ 4869.10 की रकम बतौर रायल्टी प्राप्त हुई।

वर्ष के दौरान प्रकाशित हुई पुस्तकों की विस्तृत सूची परिशिष्ठ छः में दी गई है।

पत्रिकाएं

रा० शै० अ० और प्र० प० की प्रकाशनिक गतिविधियों में पत्रिकाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ये प्राथमिक स्कूल अध्यापक से लेकर अनुसंधानकर्ताओं तक के लिए पाठ्यसामग्री जुटाती हैं। हिन्दी तथा अंग्रेजी में एक साथ प्रकाशित 'प्राइमरी शिक्षक'/'प्राइमरी टीचर' अध्यापकों तथा प्रशासकों को केन्द्रीय स्तर पर निर्णित होने वाली शैक्षिक नीतियों के बारे में अधिकारिक सूचनाओं को प्रसारित करता है। इसका उद्देश्य कक्षा में सीधे उपयोग के लिए सार्थक तथा प्रासंगिक सामग्री देना है। "इंडियन एजुकेशनल रिव्यू" शिक्षा अनुसंधानों के प्रचार के लिए तथा अनुसंधानकर्ताओं, विद्वानों, अध्यापकों तथा शिक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य व्यक्तियों को अनुभवों के विनिमय के लिए माध्यम मुहैया करता है। "दि जनरल आफ इण्डियन एजुकेशन" वर्तमान शिक्षा दृष्टियों पर विचार-विमर्श के द्वारा शिक्षा में मौलिक तथा समीक्षात्मक वैचारिकता को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों तथा अनुसंधान-कर्ताओं को मंच प्रदान करता है। यह एक द्वैमासिक प्रकाशन है।

'स्कूल साइंस' विज्ञान शिक्षा का एक त्रैमासिक पत्र है जो अध्यापकों तथा छात्रों को विज्ञान शिक्षा के विभिन्न पहलुओं, इनकी समस्याओं, संभावनाओं तथा निजी अनुभवों पर विचार-विमर्श के लिए एक खुले मंच का कार्य करता है।

इनके अतिरिक्त परिषद् "एन० सी० ई० आर० टी० न्यूज लैटर" नामक अपना मुखपत्र भी प्रकाशित करती है जिसमें परिषद् की गतिविधियों से संबंधित समाचार, रिपोर्टें, और सूचनात्मक लेख छपते हैं।

13

अंतर्राष्ट्रीय सहायता और कार्यक्रम

अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क को बढ़ावा देने वाली और शिक्षा के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सहायता का इस्तेमाल करने वाली देश की संस्थाओं में परिषद् का स्थान प्रमुख है। इस वर्ष के दौरान इसने द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों में और निम्नलिखित संस्थाओं के साथ सहयोग करने में पर्याप्त हिस्सा लिया : यूनेस्को/एपीड, यूनिसेफ, यू० एन० डी० पी०, ब्रिटिश कौंसिल, कामनवेल्थ, आई० टी० ई० सी०/टी०सी०एस०।

यूनेस्को/एपीड

यूनेस्को के कार्यकलाप में हम दो प्रकार से हिस्सा लेते रहे हैं : (i) यूनेस्को के कार्यक्रमों में सीधे भाग लेकर, और (ii) यूनेस्को के कार्यकलाप में एपीड (एशियन प्रोग्राम फार एजुकेशनल इनोवेशन एण्ड डेवेलपमैंट:– विकास के लिए शैक्षिक नवाचार का एशियाई कार्यक्रम) माध्यम से भाग लेकर। यूनेस्को की गतिविधियों में सीधे भाग लेने में शामिल है—विविध कार्यगोष्ठियों, विचारगोष्ठियों, अन्तरंग प्रशिक्षण कार्यक्रमों और अध्ययन यात्राओं आदि में विशेषज्ञों को भेजना या बुलाना। वर्ष के दौरान परिषद् ने यूनेस्को के तत्वावधान में हुई निम्नलिखित क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों में भाग लिया।

1. रीजनल वर्कशाप आन सिस्टम्स एप्रोच फार एजुकेशन (बैंकाक)।
2. मीटिंग आफ रीजनल एक्सपर्ट्स फार रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इन लिटरेसी (दिल्ली)।
3. मीटिंग आन पालिसी स्टडीज इन ट्रेनिंग आफ एजुकेशनल पर्सोनेल (बैंकाक)।
4. इण्टरकण्ट्री मोबाइल ट्रेनिंग प्रोग्राम इन पापुलेशन एजुकेशन (इण्डोनेशिया, फिलीपाइन द्वीपसमूह और बैंकाक)।
5. स्टडी आफ डिसेंट्रलाइज्ड एरिया प्लानिंग एण्ड एजुकेशनल रिसर्च एण्ड डेवेलपमेंट (फिलीपाइन द्वीपसमूह, थाइलैंड और मलेशिया)।

अध्ययन-यात्रा और फेलोशिप कार्यक्रमों के अन्तर्गत परिषद् ने अफगानिस्तान, भूटान, इण्डोनेशिया, मालदीव द्वीप, मारीशस, थाईलैंड और वियतनाम से पाठ्यक्रम विकास, साइंस किट, शैक्षणिक सामग्री, अध्यापक शिक्षा, जनसंख्या वृद्धि शिक्षा आदि के क्षेत्रों में काम कर रहे 22 विशेषज्ञों को बुलाया। इन विशेषज्ञों के साथ ही परिषद् में दो विज्ञान प्रशिक्षक भी थाइलैंड से आए।

परिषद् एपीड के संयुक्त केन्द्र के रूप में भी कार्य करती है और इस प्रकार इस क्षेत्र में एपीड के कार्यकलाप की तैयारी, विकास और कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से लगी हुई है। वर्ष के दौरान, एपीड द्वारा प्रवर्तित निम्नलिखित महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और राष्ट्रीय सभाओं में परिषद् ने भाग लिया—

(i) टेक्निकल वर्किंग ग्रुप मीटिंग आन आल्टर्नेटिव स्ट्रक्चर लिंकिंग फार्मल एण्ड नान फार्मल एजुकेशन विद एम्फेसिस आन यूनिवर्सलाइजेशन आफ एजुकेशन (थाइलैंड)।

(ii) टेक्निकल वर्किंग ग्रुप मीटिंग आन सेलेक्शन, मेनटेनेंस, एण्ड रिपेयर्स आफ साइंस इक्विपमेंट (मलेशिया)।

(iii) सेकंड रीजनल वर्कशाप आन प्यूपिल्स एवैलुएशन विद पर्टिक्यूलर रेफरेंस

टु मारल एजुकेशन इन एशिया (जापान)।

(iv) स्टडी ग्रुप मीटिंग आन डेवेलपमेंट आफ करीक्यूलम मैटीरियल टीचर एजुकेशन मैटीरियल एण्ड साइंस इंस्ट्रक्शनल मैटीरियल (थाइलैंड)।

(v) स्टडी ग्रुप मीटिंग आन यूज आफ न्यू एजुकेशनल टेक्नीक्स फार प्रिपेयरिंग टीचर्स विद रेफरेंस टु यूनिवर्सलाइजेशन आफ एजुकेशन (थाइलैंड)।

(vi) सब-रीजनल वर्कशाप इन एजुकेशनल टेक्नोलाजी विद स्पेशल रेफरेंस टु डेवेलपमेंट आफ लो-कास्ट एजुकेशनल मैटीरियल्स (नेपाल)।

(vii) रीजनल वर्कशाप एण्ड सेमीनार आन कारेस्पौंडेंस एजुकेशन (आस्ट्रेलिया)।

(viii) स्पेशल टास्क फोर्स मीटिंग फार दि सिक्स्थ रीजनल कन्सल्टेशन मीटिंग (थाइलैंड)।

(ix) एक्सचेंज आफ की पर्सन्स इन ओपेन लर्निंग सिस्टम विद कोरिया।

एपीड के कार्यक्रम के अन्तर्गत परिषद् ने दो राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किए

(i) उदयपुर में पाठ्यक्रम विकास पर एक कार्यगोष्ठी।

(ii) दिल्ली में शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर एक राष्ट्रीय कार्यगोष्ठी।

एपीड के द्वितीय चक्र में, भारत उन सात देशों में से एक है, जिन्होंने विशिष्ट क्षेत्रों मे प्रशिक्षण के लिए अटैचमेंट/इंटर्नशिप कार्यक्रम से लाभ उठाया है। 1978 के दौरान, एपीड के आठ संगुवत केन्द्रों में कुल 17 प्रतिभागी आए। इनमें से 5 प्रशिक्षकों को जो बांगला देश, मलेशिया, और थाइलैंड मे आए थे, पाठ्यक्रम विकास विज्ञान और गणित में शिक्षण सामग्री का विकास, तथा दृश्य-श्रव्य सामग्री के निर्माण में प्रशिक्षण के लिए परिषद् ने अपने यहां बुलाया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, परिषद् के दो प्रशिक्षकों को विज्ञान एवं गणित में पाठ्यक्रम विकास तथा शैक्षिक नवाचार के आधार रूप में प्रलेखन व सूचनाएं पर प्रशिक्षण सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

वर्ष के दौरान परिषद् ने यूनेस्को/एपीड के साथ नीचे लिखे तीन अनुबंध किए—

(i) एशिया में सेकंडरी स्कूल जीव विज्ञान शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, विशेषकर, इन संदर्भों में—मानवीय परिस्थिति-विज्ञान, परिवेश-अध्ययन, ग्रामीण समुदाय का स्वास्थ्य, सफाई-विज्ञान, पोषण, कौशल-विकास, प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल और संरक्षण।

(ii) जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा की आधार भूमि का सर्वेक्षण।

(iii) जीव विज्ञान के विशेष संदर्भ में प्रयोगशाला विधियों और स्कूल-विज्ञान के उपकरणों के रख-रखाव पर पश्चिमी एशियाई देशों की एक उप-क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी।

वर्ष के दौरान एपीड के राष्ट्रीय विकास दल (भारत) का एक अलग सचिवालय परिषद् में स्थापित किया गया। देश में एपीड के कार्यकलापों का समन्वय और कार्यान्वयन करने में सचिवालय राष्ट्रीय विकास दल की सहायता करता है।

यूनिसेफ

यूनिसेफ की सहायता से निम्नलिखित परियोजनाओं को लागू करने का काम वर्ष के दौरान होता रहा—

विज्ञान शिक्षा का कार्यक्रम

अनवरत शिक्षा की यह परियोजना 1970-71 में शुरू हुई थी। यूनिसेफ की सहायता से पाठ्यक्रम और शिक्षण-प्रशिक्षण सामग्री के विकास, प्राइमरी स्कूलों को विज्ञान किटों की आपूर्ति और शिक्षकों तथा अन्य शैक्षिक कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए इस परियोजना का विस्तार किया गया है। प्रयोगशाला के उपकरणों, कार्यशाला के औजारों और पुस्तकालय की पुस्तकों की आपूर्ति द्वारा प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों का स्तर ऊंचा करना भी इस परियोजना में शामिल है।

वर्ष के दौरान विभिन्न राज्यों को 8999 प्राथमिक विज्ञान किटों का आवंटन हुआ। इस प्रकार परियोजना के अंतर्गत अब कुल मिलाकर 47,571 प्राथमिक स्कूल आ गए हैं। लगभग 13,500 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। 149 अध्यापक प्रशिक्षण स्कूलों को उपकरण प्रदान किए जा चुके हैं।

इस परियोजना ने कितना प्रभावित और उत्प्रेरित किया है, इसका पता इस तथ्य से लग जाता है कि 11 राज्यों और 5 संघ क्षेत्रों में सभी प्राथमिक स्कूलों में यह कार्यक्रम चलाया गया है और विभिन्न राज्यों ने अपने खर्च से लगभग 65,000 किटों की व्यवस्था की है।

इस परियोजना के प्रसार के रूप में सन् 1975 में पांच क्षेत्रीय पोषण शिक्षा केन्द्र स्थापित किए गए थे जिनका उद्देश्य था प्राथमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त पोषण, स्वास्थ्य और परिवेशीय स्वच्छता में शिक्षण सामग्री और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विकास। इन कार्यक्रमों को कई चुने हुए स्कूलों में परखा जा चुका है। अब इनको विज्ञान के पाठ्यक्रम का एक हिस्सा मानकर राज्यों को दिया जा रहा है।

पिछले वर्ष से इस परियोजना का एक और नया पक्ष भी उभरा है। वह यह कि प्राथमिक स्तर पर पर्यावरणीय विज्ञान पढ़ाने के लिए स्थानीय संसाधनों का विकास किया

जा रहा है ताकि महंगे किटों से छुट्टी पाई जा सके। क्षेत्रीय स्तर की कार्यगोष्ठियों की एक शृंखला का आयोजन करके, प्राथमिक अध्यापकों के लिए एक संदर्शिका विकसित की गई है। 22 राज्यों को इसे अपनाने और अपने पाठ्यक्रम के अनुरूप इसे क्षेत्रीय भाषाओं में अनूदित करने के लिए सहायता दी जा रही है।

विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन पूरा किया जा चुका है और उसकी एक रिपोर्ट भी बना ली गई है।

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीकरण

इस परियोजना के अन्तर्गत 15 राज्यों में काम होता रहा है। प्राथमिक पाठ्यक्रम नवीकरण कार्यक्रम में 450 स्कूल शामिल हैं और राज्यों के 45 अध्यापक प्रशिक्षण स्कूल, राज्य शिक्षा संस्थान और राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का सक्रिय सहयोग मिल रहा है। कक्षा I, II और III के लिए शिक्षण सामग्री स्कूलों में परखी जा रही है। प्राथमिक स्तर के लिए पैकेज कार्यक्रम को पूरा करने का काम सन्तोषजनक गति से चल रहा है।

विभिन्न राज्यों में हुए काम का लेखा-जोखा लेने के लिए, अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए और भविष्य की रूपरेखा बनाने के लिए तीन क्षेत्रीय सभाएं की गई।

प्राथमिक स्तर के लिए न्यूनतम-अधिगम-सांतत्यक बनाने के लिए एक राष्ट्रीय स्तर की सभा आयोजित की गई। एक कार्यकारी दल ने राज्यों को अपने लिए न्यूनतम-अधिगम सांतत्यक का कार्यक्रम बनाने के वास्ते मार्गदर्शी रेखाएं विकसित कीं।

प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम

यूनिसेफ संहायता प्राप्त परियोजना 'प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम' को लागू करने का काम परिषद् ने शुरू कर दिया है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य स्कूल जाना छोड़ चुके बच्चों के लिए, उनके परिवेश की विशिष्ट समस्याओं पर आधारित अधिगम-प्रसंगों (सामग्री) का संग्रह करना होगा। इस परियोजना में यह मानकर चला गया है कि सार्वजनिक प्रारम्भिक शिक्षा के लक्ष्य को अंशकालिक तथा पूर्णकालिक शिक्षा द्वारा नए औपचारिक तथा अनौपचारिक मिले-जुले रूप द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इस परियोजना के प्रमुख केन्द्र बिन्दु होंगे—सुविधा वंचित वर्गों के छात्र, लड़कियाँ और विशेषरूप से अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और पिछड़े वर्गों के छात्र।

हानि में रहने वाले इन छात्रों की पृष्ठभूमि और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अधिगम/शिक्षण की उस प्रणाली को अपनाया गया है जिसमें 'माडयूलों' की सहायता से

शिक्षा दी या ली जाती है। विकास कार्यक्रमों के आस-पास चुने गए अधिगम-प्रसंगों के ये माड्यूल बालक के जीवन और उनकी आवश्यकताओं से सम्बद्ध होंगे, और उनकी विषय सामग्री कभी एक विशिष्ठ विषय से और कभी अनेक विषयों से सम्बन्धित पाठ्यचर्या का अंग बनेगी। गांवों और प्रखण्डों में जाकर समस्याओं की पहचान की जाएगी और समस्याओं को उप समस्याओं के रूप में बांटा जाएगा। इन उप समस्याओं पर आधारित स्वतः पूर्ण, स्वयं अधिगम माड्यूल विकसित किये जाएंगे जो स्वतन्त्र शिक्षण इकाइयों के रूप में प्रयुक्त होंगे।

इस परियोजना का मुख्य जोर प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया का विकेन्द्रीकरण है। समस्या-आधारित अधिगम सामग्री के उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, उत्पादन एवं प्रशिक्षण विधि को प्रारम्भिक अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाओं में लागू किया जाएगा। प्रशिक्षक ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर सर्वेक्षण करेंगे, छात्रों की तलाश करेंगे और उनकी आवश्यकताओं का पता लगाएंगे तथा उनके आधार पर सम्बन्धमूलक अधिगम सामग्री तैयार करेंगे।

रा० शै० अ० और प्र० प० की केन्द्रीय परियोजना टीम ने अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए उत्पादन एवं प्रशिक्षण विधि के कार्यक्रमों को संयोजित करने वाले राज्य के कर्मियों के प्रशिक्षण के निमित्त दो कार्यगोष्ठियां करली हैं। परियोजना के एक हिस्से के रूप में, 20 अध्यापक-प्रशिक्षण कैप्सूल और 60 सम्बन्धमूलक अधिगम प्रसंग स्कूल के बाहर के 9 से 14 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए विकसित कर लिए गए हैं।

सामुदायिक शिक्षा में विकास कार्य और प्रतिभागिता

15 राज्यों में स्थापित 30 केन्द्रों में इस परियोजना का, समुदाय के विभिन्न वर्गों विशेषकर, स्कूल छोड़ चुके लोगों, माताओं और प्रौढ़ों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम बनाने का काम चलता रहा। इस परियोजना के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के कई नमूनों का विकास हो रहा है जिन्हें विभिन्न राज्य अपना सकते हैं।

शिशु माध्यम प्रयोगशाला

बहुत छोटे शिशुओं के लिए शिक्षा और मनोरंजन की खेल सामग्रियों के विकास का काम इस परियोजना के माध्यम से हो रहा है जो रास्ते और प्रभावी शैक्षिक माध्यमों की तलाश में रहती है।

कर्नाटक, गुजरात, तमिलनाडु और बिहार में उपलब्ध खिलौनों और खेल सामग्रियों का अध्ययन किया जा चुका है और राज्यों की सहायता से वहां की क्षेत्रीय भाषाओं में

शिक्षकों के लिए संदर्शिकाएं तैयार की गई हैं।

सस्ते और सीधे सादे खेल साधनों पर एक राष्ट्रीय कार्यगोष्ठी का आयोजन अक्टूबर 1978 में हो चुका है जिसमें ऐसे खेल साधनों का प्रदर्शन भी किया गया था।

खिलौनों और खेलने के सामानों में से तीन सौ वस्तुएं चुनकर प्रदर्शन के लिए बीसवीं सामान्य सभा के अवसर पर यूनेस्को के पेरिस कार्यालय को भेजी गईं।

बच्चों के लिए दस सचित्र पुस्तकों की रचना की गई जिसमें छः छप चुकी हैं और बाकी छप रही हैं।

'कृष्ण—मैजिक चैरियट' नाम की एक फिल्म पूरी की जा चुकी है।

यू एन डी पी

यू एन डी पी के फेलोशिप कार्यक्रम के अंतर्गत, परिषद् ने दो अफगान प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था, इस वर्ष की। उनके प्रशिक्षण का क्षेत्र था – गणित और विज्ञान की पढ़ाई तथा विज्ञान और पोषण में शिक्षण सामग्री का निर्माण।

फेलोशिप, विशेषज्ञता, परामर्श और उपकरणों के रूप में यू एन डी पी की सहायता इस वर्ष शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र को मिलती रही। केन्द्र के दो सदस्यों को शैक्षिक टी॰ वी॰ और शैक्षिक रेडियो में प्रशिक्षण पाने के लिए विदेश भेजा गया। शैक्षिक टी वी पर एक विशेषज्ञ की सेवाएं भी केन्द्र को उपलब्ध कराई गईं। साथ ही, पत्राचार शिक्षा में पांच परामर्शदाताओं की सेवाएं जुटाई गईं। इन परामर्शों का उपयोग इन चीजों में हुआ — पत्राचार शिक्षा के लेखकों के लिए संदर्शिकाओं का निर्माण, पाठ-लेखन पर देश के विभिन्न संस्थानों में विचार गोष्ठियों/परिसंवादों का आयोजन, पत्राचार शिक्षा का आयोजन और और प्रबंध, फिल्म एनीएशन में एक प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन, तथा इसके लिए एक संदर्शिका का निर्माण। कैमरा, विडियो टेप रेकार्डर्स जैसे उपकरण भी केन्द्र को प्राप्त हुए।

ब्रिटिश काउंसिल

ब्रिटिश काउंसिल के सहयोग से तीन परियोजनाएं लागू की जा रही हैं। वे हैं

(i) **नेशनल प्रोजेक्ट फार ट्रेनिंग आफ इन सर्विस टीचर एजुकेशन प्रर्सोनेल इन एनवाइरनमेंटल स्टडीज** : मिस्टर आर. एफ. मार्गन, सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण और परिवेश अध्ययन के परामर्शदाता तथा मिस्टर आर.ए. मैंशी, दृश्य-श्रव्य सामग्री के उत्पादन में विशेषज्ञ — इन दो विद्वानों की सेवाएं प्राप्त की गईं। इनकी सेवाओं का उपयोग, बच्चों के परिवेश में उनके कार्य-कलाप और उन पर आधारित अधिगम सामग्री और पाठ्यक्रम वस्तु तत्व

का विकास के लिए किया गया । चार क्षेत्रीय कार्यगोष्ठियों का आयोजन— मिर्जा (असम), कोयम्बतूर (तमिलनाडु), पुणे (महाराष्ट्र) और श्रीनगर (जम्मू एवं कश्मीर) में किया गया। विचार गोष्ठी में 90 विशेषज्ञों ने भाग लिया । आठ रिपोर्टें तैयार करने में कार्यगोष्ठियों से बड़ी मदद मिली ।

(ii) **परीक्षा - सुधार परियोजना:** दो विचार गोष्ठियाँ — (क) जन परीक्षाओं के प्रबंध पर और (ख) परीक्षा में अनुसंधान पर की गई। इनके लिए हैम्पशायर के एसोसिएशन इक्जामिनेशन बोर्ड के डा. पी. डी. नील और मैनचेस्टर के ज्वाइन्ट मैट्रिकुलेशन बोर्ड के डा० जी. एम. फौरेस्ट की सेवाएं प्राप्त की गईं ।

(iii) **ए प्रोग्राम फार दि डेवेलपमेंट आफ ब्रिटिश सपोर्ट फार टीचिंग आफ इंग्लिश इन इंडिया:** सामग्री-उत्पादन के क्षेत्र में किसी रेजिडेंट विशेषज्ञ की सेवाएं प्राप्त करने से प्रस्ताव को अंतिम रूप दिया गया और इंग्लिश भाषा, शिक्षा शास्त्र और व्यावहारिक भाषा विज्ञान पर पत्रिकाओं और पुस्तकों के लिए एक अनुदान प्राप्त किया गया ।

परिषद् ने ब्रिटिश काउंसिल टेक्निकल को-आपरेशन ऐंड ट्रेनिंग प्रोग्राम के अंतर्गत शैक्षिक प्रौद्योगिकी, विज्ञान, गणित व्यावसायिक शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्रों में उच्च प्रशिक्षण के लिए अनेक विद्वानों के नाम प्रवर्तित किए ।

कामनवेल्थ कार्यक्रम

कामनवेल्थ कार्यक्रमों के अन्तर्गत आयोजित दो सभाओं में परिषद् ने इस वर्ष भाग लिया —

(i) कामनवेल्थ इन सर्विस टीचर एजुकेशन कांफ्रेंस इन कोलम्बो, और

(ii) वर्कशाप आन टीचिंग एबाउट दि कामनवेल्थ इन नैरोबी ऐंड घाना ।

आइ टी ई सी / टी सी एस कार्यक्रम

भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (आई टी ई सी) के अन्तर्गत, परिषद् ने अफगानिस्तान के 30 शिक्षकों के एक दल को एक महीने का प्रशिक्षण दिलवाया। इस प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें शिक्षा की नई प्रवृत्तियों, पाठ्यक्रम-विकास और विकासशील देशों में अध्यापक शिक्षा से अवगत कराया गया । प्रशिक्षार्थियों ने दिल्ली और बम्बई की अनेक शिक्षा संस्थाएं भी देखीं ।

कोलम्बो योजना की तकनीकी सहयोग योजना (टी सी एस) के अन्तर्गत नेपाल

के एक प्रशिक्षक को बुलाकर नौ महीने का प्रशिक्षण दिया गया।

द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रम

द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में भारत सरकार की ओर से परिषद् ही यह जिम्मेदारी संभालती है। वर्ष के दौरान परिषद् ने दो व्यक्तियों को यू० एस० एस० आर० और यूगोस्लाविया की शिक्षा प्रणालियों के अध्ययन निमित्त प्रतिनियुक्त किया। परिषद् ने निम्नलिखित बारह देशों को पाठ्यपुस्तकें, सहायक पूरक पुस्तकें, शिक्षाशास्त्र की पुस्तकें, प्रणाली विज्ञान की पुस्तकें, शोध प्रबन्ध, शिक्षाप्रद फिल्में और फिल्मस्ट्रिपें भेजीं : अफगानिस्तान, बल्गेरिया, चेकोस्लोवाकिया, फ्रांस, फेडेरल रिपब्लिक आफ जर्मनी, हंगरी, मेक्सिको, पोलैंड, सीरिया, ए० आर० ई० और यू० ए० ई० तथा यूगोस्लाविया। इसके साथ ही द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा बनाने के लिए परिषद् के एक विशेषज्ञ वियतनाम और थाईलैंड की यात्रा पर भारतीय शिष्ट मंडल के सदस्य की हैसियत से गए।

अन्य कार्यक्रम

परिषद् के शैक्षिक कार्यक्रमों और गतिविधियों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं से अनेक अतिथि परिषद् में आए। ये अतिथि मुख्यकर कोरिया, मलेशिया, मारीशस, नार्वे, अमरीका, फीजी और तंजानिया जैसे देशों से आए। परिषद् ने भी अपने अनेक शिक्षाविदों को विविध अंतर्राष्ट्रीय बैठकों और समितियों में भाग लेने के निमित्त भेजा, जैसे कि एकीकृत विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय समिति (नीदरलैंड्स), एशिया में नैतिक शिक्षा पर क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी (जापान), मानवीय अधिकारों के शिक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस (आस्ट्रेलिया), एशिया में नैतिक शिक्षा के संयुक्त अध्ययन के लिए एक कार्यगोष्ठी (जापान), मीटिंग आफ इंडो-अमेरिकन ज्वाइंट मीडिया वर्किंग ग्रुप आन फिल्म्स एंड ब्राडकास्टिंग इन यू० एस० ए० ऐंड एशियन सेमीनार आफ एजुकेशन टेक्नोलाजी (जापान)।

विदेशों में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में परिषद् के कर्मचारियों द्वारा भाग लेने का विवरण परिशिष्ट च में मिलेगा।

14

आय और व्यय

परिषद् ने 1978-79 वर्ष में भारत सरकार से अनुदान के रूप में रु० 5,97,29,897.00 प्राप्त किए। इसी के साथ ही, अपने प्रकाशनों की बिक्री से परिषद् को रु० 1,01,29,557.00 की और विविध आय के रूप में रु० 74,25,917.00 की प्राप्ति भी हुई। इसके अलावा सरकार द्वारा 1977-78 में दिए गए अनुदान में बच रही रु० 28 93,103.00 की रकम भी 1978-79 के खाते में आ गई।

ऊपर बताई गई निधियों में से परिषद् ने रु० 4,93,39,394.00 'गैर योजना' के अंतर्गत और रु० 2,18,17,211.00 'योजना' के अंतर्गत खर्च किए। इसके अतिरिक्त रु० 32,61,856.00 भी विशिष्ट अनुदानों में से खर्च किए गए।

परिषद् के 1978-79 वर्ष के आय-व्यय का अनंतिम विवरण

आय			भुगतान		
आद्य शेष	रु०	37,13,998.00	**गैर-योजना व्यय**		
भारत सरकार तथा अन्य माध्यमों से प्राप्त अनुदान			(क) वेतन और भत्ते तथा कार्यक्रम	रु०	4,93,39,394.00
			(ख) ऋण और अग्रिम	रु०	17,85,433.00
(क) भारत सरकार से मुख्य अनुदान	रु०	5,97,29,897.00	**योजना व्यय**		
(ख) भारत सरकार व अन्य माध्यमों से प्राप्त विशिष्ट अनुदान	रु०	23,74,338.00	(क) वेतन और भत्ते तथा कार्यक्रम	रु०	2,18,17,211.00
			(ख) विशिष्ट अनुदानों में से व्यय	रु०	32,61,856.00
आय					
(क) प्रकाशनों की बिक्री से आय	रु०	1,01,29,557.00	भविष्य निधि और अनिवार्य जमा लेखा	रु०	51,96,246.00
(ख) अन्य आय	रु०	74,25,917.00			
भविष्य निधि और अनिवार्य जमा लेखा	रु०	58,00,087.00	जमा, अग्रिम, उचंत और प्रेषित धन	रु०	3,04,49,961.00
जमा, अग्रिम, उचंत, और प्रेषित धन	रु०	3,01,28,492.00	अंत शेष	रु०	74,52,185.00
	रु०	11,93,02,286.00		रु०	11,93,02,286.00

परिशिष्ट

परिशिष्ट क

व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को 1978-79 के दौरान परिषद् द्वारा दिए गए अनुदान

क्रम संख्या	व्यावसायिक शैक्षिक संगठन का नाम	अनुदान की रकम	टिप्पणी
1	2	3	4
1.	इंग्लिश लैंग्वेज टीचर्स एसोसिएशन आफ इंडिया, मद्रास-28	रु० 5,000.00	
2.	एसोसिएशन फार इम्प्रूवमेंट आफ मैथेमेटिक्स टीचिंग, कलकत्ता-19	रु० 3,500.00	
3.	दि इंस्टीट्यूशन आफ इंजीनियर्स (इंडिया), कलकत्ता	रु० 2,000.00	
4.	एसोसिएशन आफ ज्योग्राफी टीचर्स आफ इंडिया, मद्रास	रु० 3,500.00	
5.	इंडियन एसोसिएशन आफ प्रिस्कूल एजुकेशन, कोयम्बतूर	रु० 6,500.00	(पत्रिका प्रकाशन के लिए रु० 2,500/- वार्षिक गोष्ठी के लिए रु० 4,000/-)
6.	श्री विवेकानंद विद्या परिषद्, नेल्लूर-2	रु० 3,000.00	
7.	बंगीय विज्ञान परिषद्, कलकत्ता	रु० 3,000.00	
8.	दि इलाहाबाद ज्योग्रफिकल सोसाइटी (रजि०) इलाहाबाद	रु० 2,000.00	
9.	आल इंडिया साइंस टीचर्स एसोसिएशन, लोदी इस्टेट, नई दिल्ली	रु० 3,250.00	
10.	इंडियन एसोसिएशन फार प्रोग्राम्ड लर्निंग, सूरत	रु० 5,000.00	

1	2	3	4
11.	एसोसिएशन ग्राफ मैथेमेटिक्स टीचर्स ग्राफ इंडिया, मद्रास	रु० 6,500.00	
12.	भारतीय शिक्षा मंडल, नई दिल्ली	रु० 5,000.00	
13.	ग्राल इंडिया फेडरेशन ग्राफ एजुकेशनल एसोसिएशन, नई दिल्ली	रु० 5,000.00	
14.	इंडियन फिजिक्स एसोसिएशन, बम्बई	रु० 8,600.00	वास्तव में केवल रु० 7,600/- ही दिए गए। शेष राशि पिछले वर्ष के ग्रनुदान में समायोजित।
15.	ग्राल इंडिया एसोसिएशन ग्रान मेंटल रिटार्डेशन, दिल्ली-52	रु० 3,500.00	
16.	एसोसिएशन फार इम्प्रूवमेंट ग्राफ मैथेमेटिक्स टीचिंग, कलकत्ता-19	रु० 3,500.00	
17.	इंडियन एसोसिएशन ग्राफ टीचर एजुकेटर्स, इलाहाबाद	रु० 7,000.00	वास्तव में केवल रु० 4,200/- ही दिए गए। शेष राशि पिछले वर्ष के ग्रनुदान में समायोजित।

परिशिष्ट-ख

परिषद् के क्षेत्र सलाहकार

1. श्री डी० सी० उप्रेती
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०)
कन्नाचल
नवग्रह मार्ग
गोहाटी-781003

2. डा० एम० हरिदास
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०)
गीतांजलि
टी० सी० नं० 15/1090
जगथी
त्रिवेन्द्रम-14

3. डा० के० वी० राव
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०)
3-6/147-2, हिमायत नगर
हैदराबाद-500029

4. श्री हरेन्द्र गुप्त
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०)
बी-47, प्रभु मार्ग, तिलक नगर
जयपुर-302004

5. श्री एम० के० गुप्त
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०)
ई-1/66, अरेरा कालोनी
भोपाल-462014

6. श्री प्रभाकर सिंह
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०)
555/ई—ममफोर्डगंज
इलाहाबाद-211002

7. श्री एस० के० गुप्त
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०)
119, बुधेश्वरी कालोनी,
भुवनेश्वर-751016

8. श्री एस० आर० राव
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और प्र० प०)
714, नाइंथ क्रास
वेस्ट आफ कॉर्ड रोड
राजाजी नगर
बंगलौर-560010

9. श्री बी० पी० मिश्र
क्षेत्र सलाहकार रा० शै० अ० और
प्र० प०)
1-बी, चन्द्र कालोनी
अहमदाबाद-380006

10. श्री डब्ल्यू० ए० एफ० होपर
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और
प्र० प०)
नं० 32, हिन्दी प्रचार सभा स्ट्रीट
टी० नगर, मद्रास-600017

11. श्री एन० एल० गजवाणी
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और
प्र० प०)
285/10, कोरे गांव पार्क
(बुंद गार्डन के पास)
पूना-411001

12. डा० एस० पी० शर्मा
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और
प्र० प०)
रोड नं०-2
राजेन्द्र नगर
पटना-800016

13. श्री सी० भट्टाचार्य
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और
प्र० प०)
पी-23, सी० आई० टी० रोड (एल
वी० स्कीम)
कलकत्ता-700014

14. डा० एम० आर० चिनाना
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और
प्र० प०)
मकान नं० 23, सैक्टर-8 (ए)
चण्डीगढ़-160018

15. डा० एस० प्रसाद
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और
प्र० प०)
निजाम मंजिल
शेरे कश्मीर कालोनी
सैक्टर-2
रामपुरा
छतबल
डा० करन नगर
श्रीनगर-190010

16. श्री ए० सी० पचौरी
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और
प्र० प०)
द्वारा—राज्य शिक्षा संस्थान
मणिपुर सरकार
इंफाल-795001

17. डा० एम० एन० सिंह
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और
प्र० प०)
कामाजी रोड
डा० लैतुमख्रा
शिलॉङ-793003

18. श्री आर० बी० बैनर्जी
क्षेत्र सलाहकार (रा० शै० अ० और
प्र० प०)
पी० जी० होस्टल,
रा० शि० संस्थान कैम्पस
नई दिल्ली-110016

परिशिष्ट-ग

समितियों की संरचना

ग-1 परिषद्

(1-4-78 से 30-9-78 तक)

(i)	मंत्री, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय अध्यक्ष—(पदेन)	1.	डा० प्रताप चंद्र चन्द्र केन्द्रीय मंत्री शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली
(ii)	अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग—(पदेन)	2.	प्रो० सतीशचन्द्र अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुर शाह जफर मार्ग नई दिल्ली
(iii)	सचिव, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय—(पदेन)	3.	श्री पी० सभानायगम सचिव, भारत सरकार शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली
(iv)	भारत सरकार द्वारा नामजद चार विश्वविद्यालयों के उपकुलपति, प्रत्येक क्षेत्र से एक (1-4-78 से 30-9-78 तक)	4.	डा० सी० डी० एस० देवानेसन उपकुलपति नार्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी शिलॉङ-793001

5. प्रो० आर० सी० मेहरोत्रा
उपकुलपति
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

6. प्रो० के० सच्चिदानन्द मूर्ति
उपकुलपति
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय
तिरुपति-517502 (आन्ध्र प्रदेश)

7. श्री डी० ए० दभोलकर
उपकुलपति
पूना विश्वविद्यालय
गणेशखिंड, पूना (महाराष्ट्र)

(v) राज्य/विधानांगों वाले संघ-राज्य क्षेत्र के प्रतिनिधि जो वहां के शिक्षामंत्री (या उसके प्रतिनिधि) होंगे और दिल्ली के मामले में मुख्य कार्यकारी पार्षद (अथवा उसके प्रतिनिधि) होंगे।

8. शिक्षामंत्री
आंध्र प्रदेश
हैदराबाद

9. शिक्षामंत्री
असम
शिलॉङ

10. शिक्षामंत्री
बिहार
पटना

11. शिक्षामंत्री
गुजरात
अहमदाबाद

12. शिक्षामंत्री
हरियाणा
चण्डीगढ़

13. शिक्षामंत्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला

14. उपशिक्षामंत्री
जम्मू तथा कश्मीर
श्रीनगर

15. शिक्षामंत्री
केरल
त्रिवेन्द्रम

16. शिक्षामंत्री
मध्य प्रदेश
भोपाल

17. शिक्षामंत्री
महाराष्ट्र
बम्बई

18. शिक्षामंत्री
मणिपुर
इम्फाल

19. शिक्षामंत्री
मेघालय
शिलॉङ

20. शिक्षामंत्री
कर्नाटक
बंगलौर

21. शिक्षामंत्री
नागालैंड
कोहिमा

22. शिक्षामंत्री
उड़ीसा
भुवनेश्वर

23. शिक्षामंत्री
राजस्थान
जयपुर

24. शिक्षामंत्री
पंजाब
चंडीगढ़

25. शिक्षामंत्री
तमिलनाडु
मद्रास

26. शिक्षामंत्री
त्रिपुरा सरकार
अगरतला

27. शिक्षामंत्री
सिक्किम

28. शिक्षामंत्री
उत्तर प्रदेश
लखनऊ

29. शिक्षामंत्री
पश्चिम बंगाल
कलकत्ता

30. मुख्य कार्यकारी पार्षद
दिल्ली प्रशासन
दिल्ली

31. शिक्षामंत्री
गोआ, दमन और दीव की सरकार
पणजी (गोआ)

32. शिक्षामन्त्री
मिजोरम
ऐजल

33. शिक्षामन्त्री
पांडीचेरी सरकार
पांडीचेरी-1

(vi) कार्यकारी समिति के सभी सदस्य जो ऊपर शामिल नहीं हैं।

34. डा० शिव कुमार मिश्र
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग
नई दिल्ली-110016

35. प्रो० एम० वी० माथुर
निदेशक
नेशनल स्टाफ कालेज फार एजुकेशनल प्लानर्स एन्ड एडमिनिस्ट्रेटर्स
नई दिल्ली-110016

36. प्रो० सी० एन० आर० राव
इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस
बंगलौर

37. श्रीमती अनुताई बाघ
संचालिका
ग्राम बाल शिक्षा केन्द्र
विकासवाड़ी-कोसबाड़ हिल
तालुका-दहानू, जिला-थाना
(वाया-दहानू रोड स्टेशन, पश्चिमी रेलवे), महाराष्ट्र-401703

38. मास्टर ए० ए० कैफी
आर/ओ मालेरट्टा, कोकर मस्जिद
पो० आ० एस० आर० गंज
श्रीनगर-2 (जम्मू व कश्मीर)

39. डा० ए० एन० बोस
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली-110016

40. प्रो० बी० एस० पारख
अध्यक्ष, सा० वि० एवं मा० शि० वि०
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और

प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली-110016

41. प्रो० आर० सी० दास, डीन
(अकैडेमिक) और अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

42. डा० के० पी० नायक
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भोपाल (म० प्र०)

43. श्रीमती जे० अंजनि दयानन्द
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय,
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

44. श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन
वित्तीय सलाहकार
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, और शिक्षा एवं
समाज कल्याण मंत्रालय
कमरा नं० 109 सी, शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(vii) ऐसे अन्य व्यक्ति जिन्हें भारत सरकार समय-समय पर नामजद करे। इनकी संख्या बारह से अधिक नहीं होगी और इनमें से कम-से-कम 4 स्कूल अध्यापक होंगे।
(1-4-78 से 30-9-78 तक)

45. श्री जगदीश मिश्र
जनरल सेक्रेटरी
अखिल भारतीय प्राथमिक स्कूल
अध्यापक संघ
प्रदर्शनी मार्ग
पटना

46. श्री जे० एस० सीतामणि
हैडमास्टर

सेंट पैट्रिक्स मिडिल स्कूल
मैलूर, टूटिकोरिन-2
जिला-तिरुनेल वेली (तमिलनाडु)

47. श्रीमती सईदा बेगम
अध्यापिका
गवर्नमेन्ट गर्ल्स हाई स्कूल
पम्पोर, जिला-अनन्तनाग
(जम्मू व कश्मीर)

48. श्री ए० एन० ठाकर
प्रधानाचार्य
ठाकर्स हाई स्कूल
एलिसब्रिज
अहमदाबाद-380006 (गुजरात)

49. महानिदेशक
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
कृषि भवन, नई दिल्ली

50. महानिदेशक, रोजगार और प्रशिक्षण
(प्रशिक्षण पक्ष)
श्रम मंत्रालय (डी० जी० ई० टी०)
श्रम शक्ति भवन
नई दिल्ली-1

51. डा० माल्कम आदिशेषैया
उपकुलपति, मद्रास विश्वविद्यालय
मद्रास-600005

52. प्रो० ए० पी० जम्बूलिंगम
प्रिंसिपल, टैक्नीकल टीचर्स ट्रेनिंग
इंस्टीच्यूट, अडयार,
मद्रास-600020

53. प्रो० सी० एस० झा
निदेशक
इण्डियन इंस्टीच्यूट आफ टैक्नोलोजी
खड़गपुर

54. डा० (श्रीमती) एस० के० संधु
निदेशक
केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो
(स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय)
टैम्पुल लेन, कोटला रोड
नई दिल्ली

55. श्री पी० आर० चौहान
आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
नेहरू हाउस
बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली

56. प्रो० तापस मजूमदार
अध्यक्ष
जाकिर हुसैन सेन्टर फार एजुकेशनल
स्टडीज,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

57. श्री वी० आर० द्रवीड़
सचिव
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली-110016
(1-4-78 से 10-8-78 तक)

श्री विनोद कुमार पंडित
सचिव
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली-110016
(11-8-78 से 31-3-79 तक)
(सचिव)

(1-10-78 से 31-3-79 तक)

(i)	मंत्री, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय अध्यक्ष—(पदेन)	1.	डा० प्रताप चंद्र चन्द्र केन्द्रीय मंत्री शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली
(ii)	अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग—(पदेन)	2.	प्रो० सतीशचन्द्र अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुर शाह जफर मार्ग नई दिल्ली
(iii)	सचिव, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय—(पदेन)	3.	श्री पी० सभानायगम सचिव, भारत सरकार शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली
(iv)	भारत सरकार द्वारा दो वर्षों के लिए नामजद चार विश्वविद्यालयों के उपकुलपति, प्रत्येक क्षेत्र से एक (1-10-78 से)	4.	डा० एस० के० मुखर्जी उपकुलपति कलकत्ता विश्वविद्यालय कलकत्ता
		5.	श्री एस० एस० वडेयर उपकुलपति कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ (कर्नाटक)
		6.	ईश्वर भाई जे० पटेल उपकुलपति गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

7. डा० ए० एम० खुसरो
उपकुलपति
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

(v) राज्य/विधानांगों वाले संघ-राज्य क्षेत्र के प्रतिनिधि जो वहां के शिक्षा-मंत्री (या उसके प्रतिनिधि) होंगे और दिल्ली के मामले में मुख्य कार्य-कारी पार्षद (अथवा उसके प्रति-निधि) होंगे।

8. शिक्षामंत्री
आंध्र प्रदेश
हैदराबाद

9. शिक्षामंत्री
असम
शिलॉङ

10. शिक्षामंत्री
बिहार
पटना

11. शिक्षामंत्री
गुजरात
अहमदाबाद

12. शिक्षामंत्री
हरियाणा
चंडीगढ़

13. शिक्षामंत्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला

14. शिक्षामंत्री
जम्मू तथा कश्मीर
श्रीनगर

15. शिक्षामंत्री
केरल
त्रिवेन्द्रम

16. शिक्षामंत्री
मध्य प्रदेश
भोपाल

17. शिक्षामंत्री
महाराष्ट्र
बम्बई
18. शिक्षामंत्री
मणिपुर
इम्फाल
19. शिक्षामंत्री
मेघालय
शिलॉङ
20. शिक्षामंत्री
कर्नाटक
बंगलौर
21. शिक्षामंत्री
नागालैंड
कोहिमा
22. शिक्षामंत्री
उड़ीसा
भुवनेश्वर
23. शिक्षामंत्री
राजस्थान
जयपुर
24. शिक्षामंत्री
पंजाब
चंडीगढ़
25. शिक्षामंत्री
तमिलनाडु
मद्रास
26. शिक्षामंत्री
त्रिपुरा सरकार
अगरतला
27. शिक्षामंत्री
सिक्किम
गंगटोक

28. शिक्षामंत्री
उत्तर प्रदेश
लखनऊ

29. शिक्षामंत्री
पश्चिम बंगाल
कलकत्ता

30. मुख्य कार्यकारी पार्षद
दिल्ली प्रशासन
दिल्ली

31. शिक्षामंत्री
गोआ, दमन और दीव सरकार
पणजी (गोआ)

32. शिक्षामंत्री
मिजोरम
ऐजल

33. शिक्षामंत्री
पांडीचेरी सरकार
पांडीचेरी-1

(vi) कार्यकारी समिति के सभी सदस्य जो ऊपर शामिल नहीं हैं।

34. राज्य मंत्री
शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

35. उप शिक्षामंत्री
शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार
नई दिल्ली

36. निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

37. प्रो० एम० वी० माथुर
निदेशक
नेशनल स्टाफ कालेज फार एजुकेशनल
प्लानर्स एंड एडमिनिस्ट्रेटर्स
नई दिल्ली

38. प्रो० सी० एन० आर० राव
इंडियन इंस्टीच्यूट आफ साइंस
बंगलौर

39. श्रीमती अनुताई बाघ
संचालिका
ग्राम बाल शिक्षा केन्द्र
विकासवाड़ी-कोसबाड़ हिल
तालुका-दहानू, जिला-थाना
(वाया-दहानू रोड स्टेशन, पश्चिमी
रेलवे), महाराष्ट्र

40. मास्टर ए० ए० कैफी
मुगल बाग
बगवानपुरा लाल बाजार
श्रीनगर (जम्मू एवं कश्मीर)

41. प्रो० ए० एन० बोस
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली-110016

42. प्रो० बी० एस० पारख
अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं
मानविकी शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली-110016

43. प्रो० आर० सी० दास, डीन
(अकैडेमिक) और अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

44. डा० के० पी० नायक
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भोपाल (म० प्र०)

45. श्रीमती जे० अंजनि दयानंद
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
नई दिल्ली

46. श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन
वित्तीय सलाहकार
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, और शिक्षा एवं
समाज कल्याण मन्त्रालय
कमरा नं० 109 सी, शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(vii) ऐसे अन्य व्यक्ति जिन्हें भारत सरकार समय-समय पर नामजद करे। इनकी संख्या 12 से अधिक नहीं होगी और इनमें से कम-से-कम 4 स्कूल अध्यापक होंगे। (1-10-78 से)

47. श्री गोपालकृष्ण सैनी
हेडमास्टर, राजकीय प्राथमिक
विद्यालय, मुखलियाना,
होशियारपुर (पंजाब)

48. श्रीमती कमला दुबे
हेडमिस्ट्रेस, बालिका विद्यालय
मोहननगर, सागर (म० प्र०)

49. श्री नैनीमाधव बरुआ
प्रिंसिपल, राजकीय हायर सेकेंडरी
स्कूल
तेजपुर
दारंग (असम)

50. सिस्टर राशेल
हेडमिस्ट्रस
माउंट कार्मेल हाई स्कूल (गर्ल्स)
कंजीकुजी
कोट्टयम (केरल)

51. अध्यक्ष
सेंट्रल बोर्ड आफ सेकंडरी
एजुकेशन
नई दिल्ली

52. आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
नई दिल्ली

53. निदेशक
केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो
(स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय)
नई दिल्ली

54. उप महानिदेशक, (कृषि शिक्षा)
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
कृषि भवन
नई दिल्ली

55. प्रशिक्षण निदेशक
डी० जी० ई० टी०
श्रम मंत्रालय
नई दिल्ली-1

56. प्रमुख (शिक्षा)
योजना आयोग
नई दिल्ली

57. श्री टी० के० वैद्यनाथन
प्रिंसिपल, टैक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग
इंस्टीच्यूट
चण्डीगढ़

58. डा॰ ए॰ के॰ डे
निदेशक
इंडियन इंस्टीच्यूट आफ टैक्नोलौजी
बम्बई

विशेष आमन्त्रित

59. सेक्रेट्री
कौंसिल आफ इण्डियन स्कूल सर्टि-फिकेट इक्जामिनेशन, नई दिल्ली

60. विनोद कुमार पंडित
सचिव
रा॰ शै॰ अ॰ और प्र॰ प॰ (सचिव)

ग-2 कार्यकारी समिति

(i) परिषद् का अध्यक्ष जो कार्यकारी समिति का पदेन अध्यक्ष होगा।

1. डा॰ प्रताप चंद्र चन्द्र
केन्द्रीय मंत्री
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(ii) (अ) शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय में राज्यमंत्री जो कार्यकारी समिति का पदेन उपाध्यक्ष होगा।

2. श्रीमती रेणुका देवी बड़काटकी
राज्य मंत्री
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली

(आ) शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय में उपमंत्री–अध्यक्ष रा॰ शै॰ अ॰ और प्र॰ प॰ द्वारा मनोनीत

3. ——————————

(इ) परिषद् के निदेशक

4. प्रो॰ शिव कुमार मित्र
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

(iii) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष (पदेन सदस्य)

5. प्रो॰ सतीशचन्द्र
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली

(iv) रा० शै० अ० और प्र० प० के अध्यक्ष द्वारा नामजद चार शिक्षाविद जो स्कूल शिक्षा में विशेष रुचि रखते हों, तथा जिनमें से दो स्कूल अध्यापक होंगे ।	6. प्रो० एम० वी० माथुर निदेशक नेशनल स्टाफ कालेज फार एजुकेशनल प्लानर्स एंड ऐडमिनिस्ट्रेटर्स नई दिल्ली
	7. प्रो० सी० एन० आर० राव इंडियन इंस्टीच्यूट आफ साइंस, मल्लेश्वरम, बंगलौर-560012
	8. श्रीमती अनुताई वाघ संचालिका ग्राम बाल शिक्षा केन्द्र, विकास बाड़ी-कोसबाड़ हिल, तालुका दहानू जिला-थाना (वाया-दहानू रोड स्टेशन, पश्चिमी रेलवे) महाराष्ट्र-401703
	9. श्री ए० ए० कैफी मुगल बाग वगवान पुरा, लाल बाजार श्रीनगर (जम्मू एवं कश्मीर)-190011
(v) परिषद् के संयुक्त निदेशक	10. डा० ए० एन० बोस संयुक्त निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली
(vi) रा० शै० अ० और प्र० प० के अध्यक्ष द्वारा नामजद परिषद् की संकाय के तीन सदस्य जिनमें से कम से कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के स्तर के होंगे ।	11. प्रो० बी० एस० पारख अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली

12. प्रो० ग्रार० सी० दास
डीन (शैक्षणिक) ग्रौर ग्रध्यक्ष
ग्रध्यापक शिक्षा विभाग
रा० शै० ग्र० ग्रौर प्र० प०
नई दिल्ली

13. डा० के० पी० नायक
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
मैसूर

(vii) शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय का प्रतिनिधि
ग्रौर

14. श्रीमती जे० ग्रंजनि दयानन्द
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(viii) वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि जो परिषद् का वित्त सलाहकार होगा

15. श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन
वित्त सलाहकार,
रा० शै० ग्र० ग्रौर प्र० प०
कमरा नं० 109 'सी', शास्त्री भवन
नई दिल्ली

16. श्री वी० ग्रार० द्रवीड़
सचिव
(1-4-78 से 10-8-78 तक)

श्री विनोद कुमार पंडित
सचिव
(11-8-78 से ग्राज तक)
राष्ट्रीय शैक्षिक ग्रनुसंधान ग्रौर प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली सचिव

ग-3 संस्थापन समिति

(i) निदेशक, रा० शै० अ० और प्र० प०	1. डा० शिव कुमार मित्र निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली अध्यक्ष
(ii) संयुक्त निदेशक, रा० शै० अ० और प्र० प०	2. डा० ए० एन० बोस संयुक्त निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली
(iii) अध्यक्ष द्वारा नामजद शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि	3. श्रीमती जे० अंजनि दयानन्द संयुक्त सचिव शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली
(iv) अध्यक्ष द्वारा नामजद चार शिक्षाविद, जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक होगा	4. प्रो० एम० एस० सोढा भौतिकी विभाग भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान हौज खास नई दिल्ली-110029
	5. प्रो० (कु०) मालती बोलर निदेशक इंस्टीच्यूट आफ एप्लाइड मैन पावर रिसर्च, इंद्रप्रस्थ एस्टेट, रिंग रोड नई दिल्ली-110002
	6. डा० अमरीक सिंह उप कुलपति पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला (पंजाब)

7. प्रो० एस० मन्जूर आलम
भूगोल विभाग
उस्मानिया विश्वविद्यालय
हैदराबाद-500007 (आं० प्र०)

(v) अध्यक्ष द्वारा नामजद क्षे० शि० म० का प्रतिनिधि

8. श्री एस० एन० साहा
प्रधानाचार्य
क्षे० शि० म०
अजमेर

(vi) अध्यक्ष द्वारा नामजद रा० शि० सं० दिल्ली का एक प्रतिनिधि

9. डा० आर० सी० दास
डीन (शैक्षणिक) तथा अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

(vii) परिषद् के नियमित शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक कर्मचारी वर्ग में से एक-एक (कुल दो) प्रतिनिधि

10. प्रो० आर० पी० सिंह
पत्रिका प्रकोष्ठ
रा० शै० अ० और प्र० प०

11. श्री के० एम० जॉर्ज
अधीक्षक, भर्ती अनुभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

(viii) वित्तीय सलाहकार, रा० शै० अ० और प्र० प०

12. श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन
वित्तीय सलाहकार (परिषद्)
कमरा नं० 109 'सी', शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(ix) सचिव, रा० शै० अ० और प्र० प०

13. श्री वी० आर० द्रवीड़
सचिव
(1-4-78 से 10-8-78 तक)
श्री विनोद कुमार पण्डित
(11-8-78 से आज तक)
सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (सदस्य संयोजक)

ग-4 वित्त समिति

1. प्रो० शिव कुमार मिश्र (अध्यक्ष)
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

2. श्रीमती जे० अंजनि दयानन्द
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय
नई दिल्ली

3. प्रो० एस० वी० माथुर
निदेशक
नेशनल स्टाफ कालेज फार एजुकेशनल
प्लानर्स एण्ड एडमिनिस्ट्रेटर्स
नई दिल्ली

4. प्रो० सी० एन० आर० राव
इंडियन इंस्टीच्यूट आफ साइंस
मल्लेश्वरम
बंगलौर-560012

5. श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन
वित्त सलाहकार
शिक्षा और समाज कल्याण मन्त्रालय
और रा० शै० अ० और प्र० प०
कमरा नं० 109 'सी', शास्त्री भवन
नई दिल्ली

6. श्री वी० आर० द्रवीड़
सचिव
(1-4-78 से 10-8-78 तक)
श्री विनोद कुमार पण्डित
सचिव
(11-8-78 से आज तक)
रा० शै० अ० और प्र० प० (संयोजक)

ग-5 भवन तथा निर्माण समिति

1. निदेशक, रा० शै० अ० और प्र० प०
(पदेन)

2. संयुक्त निदेशक
रा० शै० अ० और प्र० प० (पदेन)

3. मुख्य इंजीनियर, केन्द्रीय लो० नि०
विभाग अथवा उसके द्वारा
मनोनीत व्यक्ति

1. प्रो० शिव कुमार मिश्र (अध्यक्ष)
निदेशक, रा० शै० अ० और प्र० प०

2. डा० ए० एन० बोस
संयुक्त निदेशक, रा० शै० अ० और
प्र० प०

3. श्री एन० लक्ष्मैया
सुपरिटेंडिंग सर्वेयर आफ वर्क्स (फूड)
सी० पी० डब्ल्यू० डी०, इन्द्रप्रस्थ भवन,
इन्द्रप्रस्थ इस्टेट,
नई दिल्ली

4. वित्त मंत्रालय (वर्क्स) का एक प्रतिनिधि	4. श्री मेहरसिंह सहायक वित्त सलाहकार वित्त मंत्रालय (वर्क्स) निर्माण भवन, (III मंजिल) नई दिल्ली
5. परिषद् का परामर्शी वास्तुक	5. श्री के० एम० सक्सेना ज्येष्ठ वास्तुक (सी)—I के० लो० नि० विभाग, निर्माण भवन नई दिल्ली
6. परिषद् का वित्त सलाहकार अथवा उसके द्वारा मनोनीत व्यक्ति	6. श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन वित्त सलाहकार, रा० शै० अ० और प्र० प०, कमरा नं० 109 'सी' शास्त्री भवन, नई दिल्ली
7. शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा मनोनीत व्यक्ति	7. श्रीमती जे० अंजनि दयानंद संयुक्त सचिव, शिक्षा एवं स० क० मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
8. प्रसिद्ध सिविल इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	8. प्रो० एच० यू० बिजलानी भवन तथा नगर विकास निगम जामनगर हाउस, नई दिल्ली
9. प्रसिद्ध बिजली इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	9. श्री आई० सी० सांगेर अतिरिक्त मुख्य इंजीनियर (डी) दिल्ली विद्युत प्रदाय संस्थान लिंक हाउस नई दिल्ली
10. समिति द्वारा मनोनीत कार्यकारी समिति का सदस्य	10. प्रो० एम० वी० माथुर निदेशक नेशनल स्टाफ कालेज फार एजुकेशनल प्लानर्स एण्ड ऐडमिनिस्ट्रेटर्स नई दिल्ली

11. सचिव, रा० शै० अ० और प्र० प०
(सदस्य सचिव)

11. श्री वी० आर० द्रवीड़
सचिव, रा० शै० अ० और प्र० प०
(1-4-78 से 10-8-78 तक)
श्री विनोद कुमार पंडित
(11-8-78 से आज तक)
सचिव रा० शै० अ० और प्र० प०

ग–6 कार्यक्रम सलाहकार समिति

1. प्रो० शिव कुमार मित्र
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. प्रो० ए० एन० बोस
संयुक्त निदेशक
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली (उपाध्यक्ष)

3. डा० एस० वी० अदावाल
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
शिक्षा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

4. प्रो० आर० के० यादव
ओल्ड डी॰।, काशी हिन्दू विश्व-
विद्यालय,
वाराणसी-221005

5. डा० एन० वेदमणि मैनुएल
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
शिक्षा विभाग
केरल विश्वविद्यालय
दाईकाड, त्रिवेन्द्रम-14

6. डा० ए० डब्ल्यू० ओक
अनुसंधान विभाग
प्रेमकुंवर बाई बिट्ठलदास दामोदर
ठाकरसी
महिला शिक्षा महाविद्यालय
1, नाथीबाई ठाकरसी मार्ग,
बम्बई-10

7. प्रो० (कु०) फिलोमिना एण्ड्रू
महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय
शिक्षा विभाग
पटना विश्वविद्यालय (परिसर)
पटना-400004

8. निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
आलिया स्कूल कम्पाउण्ड
हैदराबाद-500002 (आं प्र०)

9. वाइस प्रिंसिपल इंचार्ज
राज्य शिक्षा संस्थान
डाकघर-बानीपुर
जिला-24 परगना (प० बंगाल)

10. प्रिंसिपल, राज्य शिक्षा संस्थान
इलाहाबाद (उ० प्र०)

11. निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान
रायखड, अहमदाबाद-380001

12. निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय
श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)

13. अध्यक्ष, स्कूल शिक्षा विभाग,
रा० शै० अ० और प्र० प०

14. प्रो० बाकर मेहदी
स्कूल शिक्षा विभाग,
रा० शै० अ० और प्र० प०

15. अध्यक्ष
विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

16. प्रो० बी० गांगूली
विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

17. अध्यक्ष
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी
शिक्षा विभाग,
रा० शै० अ० और प्र० प०

18. प्रो० अनिल विद्यालंकार
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी
शिक्षा विभाग,
रा० शै० अ० और प्र० प०

19. अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

20. प्रो० पी० एन० दवे
अध्यापक शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

21. अध्यक्ष
शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा
आधार विभाग,
रा० शै० अ० और प्र० प०

22. प्रो० पेरीन एच० मेहता (श्रीमती)
शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा
आधार विभाग,
रा० शै० अ० और प्र० प०

23. अध्यक्ष
पाठ्यपुस्तक विभाग,
रा० शै० अ० और प्र० प०

24. डा० के० जी० रस्तोगी
प्रोफेसर, अनौपचारिक शिक्षा
पाठ्यपुस्तक विभाग,
रा० शै० अ० और प्र० प०

25. अध्यक्ष
शिक्षण साधन विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

26. डा० नलिनी नंदचहल
रीडर
शिक्षण साधन विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

27. अध्यक्ष
प्रकाशन विभाग,
रा० शै० अ० और प्र० प०

28. कुमारी के० वाडिया
संपादक
प्रकाशन विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

29. अध्यक्ष
वर्कशाप विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

30. श्री आर० के० गुप्ता
रीडर, वर्कशाप विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०

31. प्रधानाचार्य
क्षे० शि० म०, अजमेर

32. प्रो० एन० वैद्या
क्षे० शि० म०, अजमेर

33. प्रधानाचार्य
क्षे० शि० म०, भोपाल

34. प्रो० एस० एन० त्रिपाठी
क्षे० शि० म०, भोपाल

35. प्रधानाचार्य
क्षे० शि० म०, भुवनेश्वर

36. प्रो० (श्रीमती) जी० आर० घोष
क्षे० शि० म०, भुवनेश्वर

37. प्रधानाचार्य
क्षे० शि० म०, मैसूर

38. प्रो० ए० के० शर्मा
क्षे० शि० म०, मैसूर

39. प्रधानाचार्य
शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र
रा० शै० अ० और प्र० प०

40. प्रो० (श्रीमती) स्नेहलता शुक्ल
शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र
रा० शै० अ० और प्र० प०

परिशिष्ट घ

वर्ष 1978-79 के दौरान समितयों द्वारा लिए गए मुख्य निर्णय

घ-1 कार्यकारी समिति

1.1 ईश्वर भाई पटेल समिति की रिपोर्ट पर विचार किया गया और निम्नलिखित संशोधनों के बाद उसे स्वीकार लिया गया :

(क) समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का मूल्यांकन सतत आंतरिक मूल्यमापन द्वारा किया जाना चाहिए न कि बाहरी मूल्यांकन द्वारा क्योंकि बाहरी मूल्यांकन न तो व्यवहार्य है न वांछनीय।

(ख) शिक्षण समय में की गई कटौती को कक्षा I, II और III में प्रथम चरण की स्थिति में जाँचना चाहिए। समिति ने यह भी इच्छा प्रकट की कि कम खर्चीली शिक्षण सामग्री का एक पैकेज रा. शै. अ. और प्र. प. द्वारा बनाया जाना चाहिए जो कि अध्यापकों, विशेषकर एक ही अध्यापक वाले स्कूलों में, के काम आएगा।

1.2 व्यवसायीकरण के विशेष संदर्भ में हायर सेकंडरी शिक्षा पर समीक्षा समिति की रिपोर्ट पर विचार किया गया और निम्नलिखित संशोधनों के बाद उसे स्वीकार लिया गया :

(क) व्यावसायिक कोर्सों में कुल साप्ताहिक घंटों में थ्योरी और प्रैक्टिस के बीच समय का विभाजन 20 प्रतिशत और 50 प्रतिशत का होना चाहिए।

(ख) किसी व्यावसायिक कोर्स की अवधि आवश्यक रूप से दो वर्षों तक चले ही, यह जरूरी नहीं है। बल्कि, यह कोर्स की प्रकृति पर निर्भर करेगा कि उसे कितना समय चाहिए।

(ग) आदिशेषैया समिति ने स्कूलों के तीन माडल सुझाए :

(i) वे जिनमें सामान्य शिक्षा की पढ़ाई होती है,

(ii) वे जिनमें केवल व्यावसायिकृत शिक्षा की पढ़ाई होती है,

(iii) वे जिनमें दोनों प्रकार की पढ़ाई होती है ।

छठी योजना के लिए आदिशेषैया समिति ने सिफारिश की कि तीसरे माडल के लिए सामान्य झुकाव होना चाहिए । फिर भी कार्यकारी समिति ने सिफारिश की कि इसे राज्य सरकारों पर छोड़ देना चाहिए ।

1.3 भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में एम. एससी. एड. (जीवविज्ञान) कोर्स शुरू करने की अनुमति दी गई ।

1.4 हैदराबाद के एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कालेज आफ इन्डिया की "स्ट्रेटेजिक आब्जेक्टिव्ज ऐंड आर्गेनाइजेशन डिजाइन फार एन. सी. ई. आर. टी" पर तैयार की गई रिपोर्ट पर विचार करते हुए, रा. शै. अ. और प्र. प. के अध्यक्ष ने एक छोटी समिति इस रिपोर्ट पर विस्तार से विचार करने और अपनी सिफारिशों को विचार-विमर्श के लिए आगे प्रस्तुत करने के वास्ते बनाई । परिणामस्वरूप रिपोर्ट के दो प्रमुख पक्षों पर विचार हुआ और निम्नलिखित निर्णय लिए गए :

(क) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय की भूमिका

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों को अध्यापक शिक्षा के केन्द्रों के रूप में विकसित होना चाहिए और प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के क्षेत्र में देश के सम्मुख जो महत्वपूर्ण कार्य हैं, उनके कार्यान्वियन में महाविद्यालय के संसाधनों का उपयोग किया जाना चाहिए । इसके लिए अपेक्षित है कि प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों का दर्जा ऊंचा कर दिया जाए । क्षेत्रीय महाविद्यालयों को चाहिए कि इन संस्थानों के विकास के लिए अपनी भूमिका अदा करें । पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को बनाए रखने के लिए और इनमें समन्वय करने के लिए राष्ट्रीय स्तर होना चाहिए और इसलिए यह कार्य क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों को नही सौंपा जाना चाहिए जैसा कि समितियों ने कहा है ।

(ख) पाठ्यपुस्तक-नीति

किसी नए माध्यम (एजेंसी) द्वारा स्कूली पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन और वितरण के लिए एक अलग काम की स्थापना के प्रस्ताव पर विचार हुआ । यह निर्णय लिया गया कि इसके लिए किसी अलग सोसायटी की जरूरत नहीं है । इस काम को परिषद् से अलग कर दिया जाना चाहिए और रा. शै. अ. और

प्र. प. के अंतर्गत ही एक स्वायत्त एकक की स्थापना कर इसे करवाया जाना चाहिए।

1.5 बी. एससी. स्तर की परीक्षा के स्थगन को मंजूरी देते हुए, समिति ने राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के बहुत से छात्रों द्वारा ड्राप आउट किए जाने पर चिंता व्यक्त की। समिति को बताया गया कि हर विद्यार्थी की प्रगति को व्यक्तिगत स्तर पर देखने के लिए एक प्रोफेसर को नियुक्त किया गया है।

घ-2 वित्त समिति

2.1 सहायक सचिव, अधीक्षकों, विशेष सहायकों/गोपनीय सहायकों के पदों को विवेक-संगत बनाने के लिए विचार किया गया और निर्णय हुआ कि एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कालेज की रिपोर्ट के आधार पर प्रस्तावित तरीके को मान लिया जाए, अर्थात् सचिवालय के सभी अनुभागों पर एक अनुभाग अधिकारी और शैक्षणिक विभागों पर एक अधीक्षक होना चाहिए। फिर भी, उस विभाग में जहाँ ड्राइंग और डिस्बर्सिंग की शक्तियाँ अनुभाग अधिकारी को दी गई हैं या भविष्य में दी जाएंगी, उस विभाग पर भी एक अनुभाग अधिकारी होगा। एतदर्थ, अनुभाग अधिकारियों के आठ पदों को स्वीकृति मिल गई और इसके ठीक नीचे की श्रेणी के इतने ही पदों को समाप्त कर दिया गया। समिति ने इस प्रस्ताव पर भी स्वीकृति दे दी कि विशेष सहायक ग्रेड I के 6 पदों को अब सहायक कार्यक्रम समन्वयक का पद दे दिया जाए।

2.2 वित्त समिति के एक पूर्व निर्णय के अनुसार, डिप्टी वित्तीय सलाहकार ने एक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय का मुआयना क्षे. शि. म. में प्रशासन अधिकारी के कार्यभार को जानने के लिए किया ताकि इस श्रेणी के अधिकारियों के वेतन-मान को विवेकसंगत किया जा सके। सिफारिश के अनुसार समिति ने स्वीकृति दी कि चूंकि प्रशासन अधिकारी का कार्यभार और उत्तरदायित्व अपनी प्रकृति में कहीं अधिक महत्व वाला है, इसलिए प्रशासन अधिकारी को अवर सचिव के समकक्ष होना चाहिए जिसका वेतनमान है रु० 1200 से 1600 यह पद रा. शै. अ. और प्र. प. के अवर सचिव के साथ अन्तर-परिवर्तनीय होगा। कार्य की विशिष्ट प्रकृति को देखते हुए समिति इस बात को भी मान गई कि प्रशासन अधिकारी को बिना भाड़े का आवास भी मिलना चाहिए।

2.3 राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अतिथि गृह की संशोधित टैरिफदरों को पहली फरवरी 1979 से लागू करने को भी समिति ने अपनी स्वीकृति दे दी।

2.4 हर क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में रु० 840 से 1300 के वेतन मान में एक-एक लेखा अधिकारी के पद के सृजन को भी समिति ने स्वीकृति दी।

2.5 हर क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में रु. 425 से 800 के वेतन मान में एक-एक सुरक्षा अधिकारी के पद के सृजन को भी समिति ने स्वीकृति दी।

2.6 समिति ने निम्नलिखित पदों के सृजन की स्वीकृति दी :

(i) नियमित आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के पुस्तकालय के लिए पुस्तकाध्यक्ष (प्रलेखन) का एक पद।

(ii) 28 फरवरी 1978 तक के लिए एकाउंटेंट के दो पदों का अधीक्षकों के पदों में परिवर्तन।

(iii) पत्रिका प्रकोष्ठ के लिए सहायक सम्पादक (अंग्रेजी) का एक पद।

(iv) भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के क्षे॰ शि. म. के लिए चौकीदारों के पद।

(v) मैसूर के क्षे. शि. म. के लिए अटेंडेंट।

(vi) अजमेर, भोपाल और भुवनेश्वर के क्षे. शि. म. के लिए सफाई वाला।

(vii) मैसूर के क्षे. शि. म. के लिए क्लीनरों के पद।

(viii) अजमेर, भुवनेश्वर और मैसूर के क्षे. शि. म. के लिए मालियों के पद।

(ix) जयपुर के क्षेत्रीय सलाहकार के लिए एक ड्राइवर।

(x) चौकसी कर्मचारियों/चौकीदारों के तेइस पद।

(xi) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में नए पुस्तकालय भवन के लिए चार फराश और दस सफाई वाला के पद।

(xii) शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के लिए, उच्च श्रेणी लिपिक का एक पद, लाइब्रेरी अटैंडेंट का एक पद और सफाई वाला का एक पद।

(xiii) पत्रिका प्रकोष्ठ के लिए सहायक बिजनेस मैनेजर का एक पद।

(xiv) अजमेर के क्षे. शि. म. में चौकीदार के चार पद।

घ-3 स्थापना समिति

3.1 शिक्षण साधन विभाग और शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र में तकनीकी पदों के लिए भर्ती के नियमों को सटिप्पण स्वीकृति मिल गई। समिति ने महसूस किया कि

प्रयोगशाला तकनीशियन के लिए विज्ञान और मनोविज्ञान में अलग-अलग वांछनीय योग्यताएं होनी चाहिए।

3.2 विभिन्न तकनीकी पदों के सम्बन्ध में अनियमितताओं के बारे में सिफारिशों को मान लिया गया। समिति ने सिफारिश की है कि जहाँ कहीं भी सरकारी निर्देशों के अनुसार सेलेक्शन ग्रेड उपलब्ध हैं, वहाँ सेलेक्शन ग्रेड के तरीकों को विकल्प रूप में मान लिया जाए।

परिशिष्ट ङ

परिषद् द्वारा 1978-79 की अवधि में सहायता-प्रदत्त वाह्य अनुसंधान परियोजनाएं

क्रम संख्या	संस्था का नाम	अनुसंधान परियोजना	दी गई अनुदान राशि
1	2	3	4
1.	एम० एस० यूनिवर्सिटी आफ बड़ौदा बड़ौदा (गुजरात)	प्राब्लम्स आफ एजुकेशन आफ दि वीकर सेक्शन आफ दि सोसाइटी	रु० 15 000.00
2.	रजिस्ट्रार यूनिवर्सिटी आफ इन्दौर इन्दौर (म०प्र०)	ए स्टडी आफ टीचिंग कम्पेटेंसी आफ सेकंडरी स्कूल टीचर्स	रु० 8,000.00
3.	श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी तिरुपति (आंध्र प्रदेश)	ए साइकोलोजिकल स्टडी आफ वर्क एडजस्टमेंट एण्ड टीचिंग एक्सेस	रु० 6,000.00
4.	एस०जी० यूनिवर्सिटी, सूरत (गुजरात)	डेवेलपिंग ऐन इफेक्टिव माडल आफ नान फार्मल एजुकेशन फार रूरल डेवेलपमेंट	रु० 10,000.00
5.	जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी नई दिल्ली	साइकोलोजिकल डेवेलपमेंट ऐंड लर्निंग इन यंग चिल्ड्रेन इन पावर्टी ऐंड इफेक्ट्स आफ इंटवेंशन्स	रु० 15,000.00
6.	यूनिवर्सिटी आफ पूना	इन्नोवेशंस इन लर्निंग मेथडोलाजी टु सप्लिमेंट	रु० 3,000.00

1	2	3		4
		लेक्चरिंग इन दि फर्स्ट एण्ड सेकंड ईयर श्राफ बी० एस-सी० इन फीजिक्स		
7.	सी० सी० कालेज श्राफ एजुकेशन, बम्बई	टु स्टडी दि इफैक्ट्स श्राफ व्वायज श्रान दि टीचिंग, लर्निंग प्रोसेस एटसेट्रा	रु०	1,500.00
8.	कलकत्ता यूनिवर्सिटी	सर्वे श्राफ एरिया स्किल्स इन सम सेलेक्टेड डिस्ट्रिक्ट श्राफ वेस्ट बेंगाल	रु०	5,000.00
9.	रजिस्ट्रार, जामिया मिल्लिया इस्लामिया	डेवलपिंग इंस्ट्रक्शनल स्ट्रेटेजीज फार टीचिंग हिन्दी एज ए सेकंड लैंग्वेज टु दि उर्दू मीडियम स्टूडेंट्स श्राफ दिल्ली	रु०	1,800.00
10.	राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर	ए स्टडी श्राफ दि इफेक्टिवनेस श्राफ प्रिसर्विस टीचिंग ट्रनिंग प्रोग्राम ऐट एलीमेंटरी लेवेल इन राजस्थान	रु०	2,350.00
11.	राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर	ए स्टडी श्राफ दि इफेक्टिवनेस श्राफ सम मेजर्स श्रडेप्टेड फार इन्क्रीजिंग एनरोलमेंट एण्ड श्रटेंडेंस इन प्राइमरी स्कूल्स इन राजस्थान	रु०	2,565.00
12.	रिसर्च सेंटर इन रूरल एजुकेशन, गोकर्ण (कर्नाटक)	एलीमेंटरी नान फार्मल एजुकेशन फार नान एनरोल्ड ऐंड ड्राप श्राउट चिल्ड्रेन बिलो दि एज श्राफ 14	रु०	4,500.00
13.	इंस्टीच्यूट श्राफ हिस्टॉरिकल स्टडीज एंड रिसर्च जयपुर	डायग्नोसिस श्राफ लैंग्वेज एरर एंड ए प्रोग्राम श्राफ रेमेडियल टीचिंग इन संस्कृत	रु०	6,000.00

1	2	3		4
14.	कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़	एजुकेशनल प्राब्लम्स आफ शेड्यूल्ड कास्ट्स	रु०	379.00
15.	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी	पैटर्न आफ स्टुडेंट्स पार्टिसिपेशन इन दि यूनिवर्सिटी ऐडमिनिस्ट्रेशन	रु०	9,000.00
16.	ए० एन० एस० इन्स्टीच्यूट आफ सोशल स्टडीज, पटना	दि स्कूल काम्प्लेक्स	रु०	6,000.00
17.	नर्दर्न ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी शिलाँङ	ए स्टडी आफ दि इफेक्ट आफ माइक्रो टीचिंग अपान जेनेरल टीचिंग काम्पेटेंस एंड टीचर एटीच्यूड आफ बी० एड० ट्रेनीज इन शिलाँङ	रु०	2,000.00
18.	जेवियर इंस्टीच्यूट आफ सोशल सर्विस, रांची	एजुकेशन फार इंटेग्रल रूरल डेवेलपमेंट इन रांची डिस्ट्रिक्ट	रु०	9,000.00
19.	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	स्टडी आफ दि प्राब्लम्स आफ बुक ट्रेड इन इंडिया	रु०	4,473.17
20.	पंजाबी विश्वविद्यालय, चंडीगढ़	आइडेंटीफिकेशन सेलेक्शन क्राइटेरिया फार नेशनल टैलेंट —ऐन एक्सप्लोरेटरी स्टडी	रु०	6,000.00
21.	पटना विश्वविद्यालय, पटना	ए स्टडी आफ एजुकेशनल बैकवर्डनेस आफ दि शेड्यूल्ड कास्ट्स स्टूडेंट्स एंड ए नीड ओरिएंटेड प्लान फार देयर डेवेलपमेंट	रु०	10,000.00
22.	कैलकटा गर्ल्स बी० टी० कालेज कलकत्ता	रोल आफ लेडी टीचर्स इन दि यूनिवर्सलाइजेशन आफ प्राइमरी एजुकेशन	रु०	6,200.00

1	2	3	4
23.	रामनाथन, सस्तानगर, कर्मणा त्रिवेन्द्रम	ऐन इनवेस्टीगेटिव स्टडी आफ ट्रेनिंग कालेजेज आफ दि कन्ट्री एंड सजेशन्स फार रिफार्म्स	रु० 284.00
24.	विद्याभवन, उदयपुर (राजस्थान)	एन एक्सपेरीमेंट इन ओपेन क्लासरूम फ्री लर्निंग एनवाइरनमेंट	रु० 10,000.00
25.	डी० एस० एन० कालेज, उन्नाव (उ०प्र०)	प्रोग्रैम्ड लर्निंग एज फंक्शन आफ एँक्जाइटी अंडर डिफेरेंट मोटीवेशनल कंडीशंस	रु० 5,000.00
26.	बाल कुंज, दिल्ली	ओरिएंटेशन प्रोग्राम्स, वर्किंग होलीडेज प्रोजेक्ट्स एंड एवैलुएशन मीट्स फार प्रोमोटिंग एजुकेशन एमंग दि अण्डर प्रिविलेज्ड क्लासेज	रु० 3,158,91 + 670.00 = 3,828.91
27.	इंडियन इंस्टीच्यूट आफ टेक्नोलाजी कानपुर	चिल्ड्रेन जजमेंट आफ पर्सनल हैपीनेस	रु० 9,000.00
28.	इंडियन एसोसिएशन फार एक्स्ट्रा करीक्यूलर साइंटिफिक एक्टीविटीज कलकत्ता-9	इनवेस्टीगेशन आन नान फार्मल साइंस एजुकेशन एण्ड डेवेलपमेंट आफ इन-एक्सपेंसिव रिसोर्स मैटीरियल	रु० 10,000.00
29.	श्री अरविन्द केन्द्र, नई दिल्ली	टु आर्गेनाइज वर्कशाप इंट्रोड्यूसिंग सोशल, मारल एण्ड स्पिरिचुअल वैल्यू इन स्कूल करीक्यूलम	रु० 27,700.00
30.	ईस्टर्न इंडिया सेंटर फार मास कम्यूनिकेशन स्टडीज, निक्को हाउस, कलकत्ता	मास कापीइंग इन सेकंडरी स्कूल्स फाइनल एक्जामिनेशन	रु० 500.00

1	2	3	4
31.	गांधी शांति प्रतिष्ठान दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली	ओरिएंटेशन कैम्प फार टीचर्स अण्डर टीचिंग गांधी टु स्कूल्स	रु० 14,610.00
32.	एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कालेज आफ इंडिया, हैदराबाद	पालिसी आफ नान डेटेंशन इन आन्ध्र प्रदेश—ऐन एजुकेशन रिसर्च	रु० 8,000.00
33.	मदुरै विश्वविद्यालय, मदुरै-21	वोकेशनलाईजेशन आफ दि हायर सेकेंडरी स्टेज आफ दि 10+2+3 पैटर्न आफ एजुकेशन	रु० 8,006.00
34.	गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली	डाक्युमेंटेड केस हिस्ट्री आफ दि सेवाग्राम एक्सपेरीमेंट्स	रु० 9,000.00
35.	डी० ए० वी० (पी जी) कालेज देहरादून	एक्सपेरीमेंटेशन इन मैथड्स फार इम्प्रूविंग इंस्ट्रक्शन्स इन ट्रेनिंग कालेजेज	रु० 5,000.00
36.	कलकत्ता विश्वविद्यालय कलकत्ता	इफेक्ट्स आफ सोशियो-इकोनोमिक बैकग्राउण्ड आन एकेडेमिक ऐटेनमेंट	रु० 3,500.00
37.	श्री एल० पी० भारद्वाज रिटायर्ड प्रिंसिपल, लखनऊ (उ०प्र०)	दि सर्वे आफ कैंबाल टाउन विद रिगार्ड टु दि एवेलेबिलिटी एंड यूज आफ टीचिंग एड्स इन स्कूल्स	रु० 2,500.00
38.	ज्ञान प्रबोधिनी, पूना	कांस्ट्रक्शन आफ बैटरी आफ साइकोलोजिकल टेस्ट्स	रु० 15,000.00
39.	वनस्थली विद्यापीठ कालेज आफ एजुकेशन, राजस्थान	दि डाइग्नोसिस आफ लैंग्वेजेज एरर एंड ए प्रोग्राम आफ रेमेडियल टीचिंग हिन्दी	रु० 10,000.00

1	2	3		4
40.	गवर्नमेंट टीचर्स ट्रेनिंग इन्स्टीच्यूट, हसन	ए स्टडी श्राफ दि इफेक्टिवनेस श्राफ यूजिंग एजुकेटिव टायज इन टीचिंग साइंस टु II क्लास श्रोवर दि ट्रेडिशनल मेथड्स	रु०	1,000.00
41.	दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली	डिटर्मिनेशन श्राफ कम्यूनिकेबिलिटी इन दि न्यू हिन्दी पोइट्री फ्राम दि प्वाइंट श्राफ व्यू श्राफ इट्स टीचिंग इन दि श्रपर सेकेण्डरी एण्ड श्रंडर ग्रेजुएट क्लासेज	रु०	5,000.00
42.	राजस्थान एकेडेमी श्राफ एजुकेशन, साइंस एंड कल्चर, उदयपुर	डेवेलपमेंट श्राफ एजुकेशनल प्रोग्राम इन साइंस फार श्रपर प्राइमरी लेवेल बेस्ड श्रान एनवाइरनमेंटल एप्रोच	रु०	5,000.00
43.	श्री रामकृष्ण मिशन विद्या टीचर्स कालेज कोयम्बतूर	इस्टैब्लिशिंग नार्म्स फार स्पीड इन रीडिंग तमिल इन स्टैंडर्ड 6 टु 8	रु०	5,000.00
44.	विश्व भारती शांति निकेतन (पश्चिम बंगाल)	केस स्टडी श्राफ शिक्षा निकेतन—ए वर्क श्रोरिएंटेड रूरल इंस्टीट्यूट इन दि डिस्ट्रिक्ट श्राफ बर्दवान	रु०	5,000.00
45.	टाटा इंस्टीच्यूट श्राफ सोशल साइंसेज, बम्बई-88	श्राइडेंटिटी फार्मेशन श्राफ शेड्यूल्ड कास्ट स्टूडेंट्स	रु०	6,000.00
46.	उदयपुर विश्वविद्यालय उदयपुर	रिसर्च इन फिजिक्स एजुकेशन यूजिंग नान-फार्मल मेथड्स	रु०	3,000.00
		कुल	रु०	3,05,690.08

परिशिष्ट च

अंतर्राष्ट्रीय/आदान-प्रदान के कार्यक्रमों में भागीदारी

(क) द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रम

1. भारतीय-यूगोस्लाव सांस्कृतिक आदान-प्रदान के 1976-78 के कार्यक्रम के अंतर्गत, यूगोस्लाविया के शैक्षिक तंत्र का विशेषकर सेकंडरी स्कूल पाठ्यक्रम की विविधता के संदर्भ में, अध्ययन करने के लिए, भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रवक्ता श्री आइ० डी० गुप्त 10 दिनों के लिए यूगोस्लाविया की यात्रा पर 17 अप्रैल, 1978 को गए।

2. भारतीय-रूसी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के 1976-78 के कार्यक्रम के अंतर्गत, रूस की सेकंडरी शिक्षा का अध्ययन करने के लिए, शिक्षा के व्यावसायीकरण एकक के अध्यक्ष प्रो० सी० वी० गोविंदा राव, दो सप्ताह की यात्रा पर 25 सितम्बर, 1978 को गए।

3. वियतनाम और थाईलैंड के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा बनाने के लिए, भारत सरकार के शिष्ट मंडल के एक सदस्य के रूप में, वियतनाम और थाईलैंड की 17 दिनों की यात्रा पर 11 दिसम्बर 1978 को, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के संयुक्त निदेशक प्रो० अतीन्द्र नाथ बोस गए।

(ख) उच्च प्रशिक्षण के लिए विदेशों में परिषद् के अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति

1. ब्रितानी सरकार के तकनीकी सहयोग प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूल-पूर्व शिक्षा के क्षेत्र में अल्पकालिक प्रशिक्षण के लिए, तीन महीनों के वास्ते 12-4-1978 को कुमारी इन्दिरा मलानी (रीडर, शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग) को यू० के० के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

2. ब्रितानी सरकार के तकनीकी सहयोग प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत, मूल्यांकन के क्षेत्र में अल्पकालिक प्रशिक्षण के लिए, चार महीनों के वास्ते 4-1-1979 को

श्री श्रोम प्रकाश गुप्त (लेक्चरर, परीक्षा सुधार एकक) को यू० के० के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

3. ब्रितानी सरकार के तकनीकी सहयोग प्रशिक्षण कार्यक्रम के श्रतर्गत, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अल्पकालिक प्रशिक्षण के लिए, तीन महीनों के वास्ते 3-1-79 को डा० जगदीश सिंह (रीडर, शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र) को यू० के० लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

4. "श्रनौपचारिक शिक्षा में रेडियो प्रोडक्शन" में प्रशिक्षण कोर्स तैयार करने के लिए डा० (कुमारी) श्राई० जी० सुमित्रा (रीडर, शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र) को यू० के० के लिए 26 श्रप्रैल 1978 से 28 जुलाई 1978 तक प्रतिनियुक्त किया गया।

5. यूनेस्को/यू० एन० डी० पी० फेलोशिप कार्यक्रम के श्रंतर्गत साउथ कैरोलिन में एक इंटर्नशिप कार्यक्रम के लिए, 6-12-1978 से 29-4-1979 तक श्री श्रार० श्रार० शर्मा (रीडर, शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र) को श्रमरीका के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

(ग) श्रंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/कार्यगोष्ठियों/सम्मेलनों में भाग लेने के लिए परिषद् के श्रधिकारियों की विदेशों में प्रतिनियुक्ति

1. नीदरलैंड्स के निजमेगन विश्वविद्यालय में हुए एकीकृत विज्ञान के श्रंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए, विज्ञान श्रौर गणित शिक्षा विभाग के जीवविज्ञान के प्रोफेसर डा० बी० गांगुली 28 मार्च से 7 श्रप्रैल 1978 तक के लिए वहां गए।

2. सियोल, कोरिया में बच्चों की पुस्तकों के लेखकों एवं सम्पादकों के लिए हुई यूनेस्को की क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी में भाग लेने के लिए, प्रकाशन विभाग के श्रध्यक्ष श्री जयपाल नाँगिया 24 से 29 श्रप्रैल 1978 तक के लिए वहां गए।

3. पत्राचार शिक्षा की श्रंतर्राष्ट्रीय परिषद् द्वारा नई दिल्ली में 8 से 15 नवम्बर 1978 तक श्रायोजित विश्व सम्मेलन में श्रध्यापक शिक्षा विभाग के रीडर श्री श्रार० के० गुप्त ने भाग लिया।

4. एशिया में शिक्षा के लिए यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा नेपाल में 7 से 21 नवम्बर 1978 तक श्रायोजित कम खर्च वाली शैक्षिक सामग्री के विकास के विशेष संदर्भ में शैक्षिक प्रौद्योगिकी में उप क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी में भाग लेने के लिए डा० (श्रीमती) श्रार० मुरलीधरन श्रौर श्री दिलीप बख्शी (शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के रीडर) को प्रतिनियुक्त किया गया।

5. प्रो० बी गांगुली (वि० और ग० शि० वि० में जीवविज्ञान के प्रोफेसर), प्रो० ए० के० शर्मा (मैसूर के क्षे० शि० म० के विज्ञान के अध्यक्ष) और प्रो० जे० एस० राजपूत (भोपाल के क्षे० शि० म० के प्रिंसिपल) को 'एसीड' द्वारा आयोजित पाठ्यक्रमीय सामग्री, अध्यापक शिक्षा की सामग्री और विज्ञान की अनुदेशीय सामग्री के विकास पर एक स्टडी ग्रुप में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

6. 'एपीड' की कार्य योजना के अनुसार यूनेस्को ने केन्द्रीय व्यक्तियों के खुले अधिगम प्रणालियों में प्रशिक्षण के निमित्त, स्टडी ग्रुपों को स्वीकृति दे दी है। इस कार्य-कलाप के अंतर्गत 18 से 25 सितम्बर 1978 तक श्री आर० के० गुप्त (अध्यापक शिक्षा विभाग में रीडर) को कोरिया के लिए प्रतिनियुक्त किया गया और कोरिया के मिस्टर इम० इन० जी को परिषद् में प्रशिक्षित किया गया। इसके बाद ये दोनों अधिकारी 28 व 29 सितम्बर 1978 को अपने अनुभवों के संश्लेषण के लिए बैंकाक के यूनेस्को कार्यालय में मिले।

7. यूनेस्को के विशेष तकनीकी सहयोग कार्यक्रम के अंतर्गत, श्री ज्ञानेश्वर दत्त ढल (विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग में लेक्चरर) को विज्ञान शिक्षा केन्द्र, फिलीपीन्स विश्वविद्यालय, क्यूजियोन सिटी के लिए 1 से 30 अक्तूबर 1978 तक प्रतिनियुक्त किया गया।

8. 'एसीड' और यूनेस्को के आस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय आयोग के संयुक्त तत्वावधान में पत्राचार शिक्षा पर आस्ट्रेलिया में आयोजित एपीड क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी और संगोष्ठी में भाग लेने के लिए 17 से 30 सितम्बर 1978 तक के लिए डा० श्रीमती कमला अरोड़ा (अध्यापक शिक्षा विभाग में रीडर) को प्रतिनियुक्त किया गया।

9. यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक के सेवाकालीन शिक्षक कार्यक्रम—सिस्टम्स एप्रोज फार एजुकेशन—पर हुई यूनेस्को की क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी में 20 नवम्बर से 2 दिसम्बर 1978 तक भाग लेने के लिए, प्रो० सी० के० बासु (शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग के अध्यक्ष) और प्रो० के० सी० पंडा (भुवनेश्वर के क्षे० शि० म० के शिक्षा प्रोफेसर) को प्रतिनियुक्ति किया गया।

10. जापान के राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान द्वारा 12 सितम्बर से 10 अक्तूबर 1978 तक छात्र मूल्यांकन (एशिया में नैतिक शिक्षा के विशेष संदर्भ में) पर आयोजित द्वितीय क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी में भाग लेने के लिए, स्कूल शिक्षा विभाग के लेक्चरर डा० वी० आर० गोयल को प्रतिनियुक्त किया गया।

11. अफ्रीकी सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम के सहयोग से कामनवेल्थ सचिवालय द्वारा नैरोबी विश्वविद्यालय में 20 अगस्त से 1 सितम्बर 1978 तक कामनवेल्थ

के बारे में पढ़ाने के लिए आयोजित एक कार्यगोष्ठी में सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के रीडर श्री अर्जुन देव ने भाग लिया।

12. यूनेस्को द्वारा आयोजित जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा में अंतरदेशीय सचल प्रशिक्षण कार्यक्रम में 11 से 28 सितम्बर 1978 तक भाग लेने के लिए सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो० बी० एस० पारख और वरिष्ठ परियोजना एसोशिएट श्री एस० पी० चावला को प्रतिनियुक्त किया गया। कार्यक्रम के दौरान दोनों अधिकारी पहले तो इंडोनेशिया और फिलीपीन्स गए फिर वहां का अध्ययन समाप्त कर 24 से 28 सितम्बर 1978 तक के लिए बैंकाक गए।

13. एशिया में शिक्षा के लिए यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक द्वारा आयोजित जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा के लिए प्रलेखन और सूचना सेवाओं में इंटर्नशिप कार्यक्रम में भाग लेने के लिए 13 नवम्बर से 8 दिसम्बर 1978 तक के लिए श्री ए० के० मुकर्जी, पुस्तकाध्यक्ष (प्रलेखन), पुस्तकालय और प्रलेखन एकक को प्रतिनियुक्त किया गया। यह कार्यक्रम यूनेस्को की जनसंख्या वृद्धि शिक्षा कार्यक्रम सेवा द्वारा बैंकाक में आयोजित किया गया। श्री मुकर्जी ने 'एस्कैप' द्वारा आयोजित योजना के क्षेत्र में सूचना और प्रलेखन पर एक और संगोष्ठी में भी, प्रेक्षक की हैसियत से 20-21 नवम्बर 1978 को भाग लिया। यह यूनेस्को इन्टर्नशिप कार्यक्रम का ही एक भाग था।

14. कोलम्बो (श्रीलंका) में 23 अक्तूबर से 3 नवम्बर 1978 तक हुई, एशिया के लिए कामनवेल्थ क्षेत्रीय सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यगोष्ठी में श्री के० सी० दास (भुवनेश्वर के क्षे० शि० म० के बहुउद्देशीय निदर्शन स्कूल की हेडमास्टर) के प्रतिनियुक्त किया गया।

15. दिल्ली में 19 से 25 सितम्बर 1978 तक हुई साक्षरता में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए क्षेत्रीय विशेषज्ञों की यूनेस्को द्वारा आयोजित बैठक में रा० शै० अ० और प्र० प० के संयुक्त निदेशक श्री ए० एन० बोस ने भाग लिया। इस बैठक में अफगानिस्तान, इंडोनेशिया, ईरान, थाईलैंड, नेपाल, पाकिस्तान, पापुआ न्यू गिनी, फिलीपीन्स, बर्मा, बांग्ला देश, भारत, लाओस और वियतनाम के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

16. वियना, आस्ट्रिया में मानव अधिकारों के लिए शिक्षण पर हुई अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में 12 से 16 सितम्बर 1978 तक भाग लेने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो० डी० एस० रावत को प्रतिनियुक्त किया गया।

17. 'एसीड' द्वारा बैंकाक में 2 से 14 अक्तूबर 1978 तक आयोजित औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा को जोड़ने वाली वैकल्पिक संरचनाओं पर शिक्षा के

सार्वजनीकरण पर विशेष बल देते हुए तकनीकी कार्यकारी दल की बैठक में भाग लेने के लिए पाठ्यपुस्तक विभाग की अध्यक्षा श्रीमती आदर्श खन्ना को प्रतिनियुक्त किया गया।

18. 'एपीड' की कार्य योजना के अनुसार, 'एसीड' द्वारा आयोजित विज्ञान के उपकरणों के चुनाव, रख रखाव और मरम्मत पर तकनीकी कार्यकारी दल की पेनांग, मलेशिया में 2 से 11 नवम्बर 1978 तक हुई बैठक में भाग लेने के लिए श्री एस० बी० सिंह (अजमेर के क्षे० शि० म० में भौतिकी के रीडर) और श्री ए० पी० वर्मा (वर्कशाप विभाग के स्टोर आफिसर) को प्रतिनियुक्त किया गया।

19. एशिया और ओसनिया में शिक्षा के लिए यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा प्रवर्तित शैक्षिक कर्मचारियों के प्रशिक्षण के नीति अध्ययन पर 3 से 6 जनवरी 1979 तक हुई बैठक में परिषद् के रीडर श्री एन० के० सान्याल ने भाग लिया। यह बैठक बैंकाक में हुई थी। इसमें श्री सान्याल ने एक प्रबंध भी पढ़ा जिसका शीर्षक था—"प्रिपेरेशन आफ एजुकेशनल पर्सोनेल विद स्पेशल रेफरेंस टु यूनिवर्सलाइजेशन आफ एजुकेशन बोथ ऐट दि अर्ली स्कूल लेवेल्स एण्ड इन दि फंक्शनल एजुकेशन फार आउट आफ स्कूल यूथ्स एण्ड ऐडल्ट्स।"

20. शिक्षा के प्रथम स्तर पर विज्ञान पढ़ाने के लिए कम खर्च वाले शिक्षण साधनों के विकास पर हुई क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी में भाग लेने के लिए वर्कशाप विभाग के अध्यक्ष श्री प्रशांत भट्टाचार्य को प्रतिनियुक्त किया गया। यह कार्यगोष्ठी 18 जनवरी से 17 फरवरी 1979 तक टोक्यो (जापान) में हुई थी और इसे 'एसीड' के सहयोग से जापान के राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान ने आयोजित किया था। कार्यगोष्ठी का कार्य फरवरी 1979 तक पूरा कर देने के लिए भी श्री भट्टाचार्य ने सहायता की।

21. एशिया और ओसनिया में शिक्षा के लिए यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय बैंकाक में 4 से 29 दिसम्बर 1978 तक हुए 'एपीड' के इन्टर्नशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सहायक पुस्काध्यक्ष श्री हेमशंकर शर्मा को प्रतिनियुक्त किया गया। यह कार्यक्रम शैक्षिक नवाचार के लिए प्रलेखन और सूचना की आधारभूत सहायता पर किया गया था।

22. जापान के राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान द्वारा टोक्यो में 2 से 31 मार्च, 1979 तक आयोजित एशिया में नैतिक शिक्षा के संयुक्त अध्ययन के लिए हुई क्षेत्रीय कार्यगोष्ठी में भाग लेने के लिए प्रो० अनिल विद्यालंकार (सा० वि० एवं मा० शि० वि०) और श्री सी० शेषाद्रि (मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में शिक्षा के रीडर) को प्रतिनियुक्त किया गया।

23. फिल्मों और प्रसारण पर भारतीय-अमरीकी संयुक्त जन माध्यम कार्यकारी दल की चार्ल्सटन में 22 से 24 फरवरी, 1979 तक हुई दूसरी बैठक में भाग लेने के लिए शिक्षण साधन विभाग के अध्यक्ष प्रो० एस० एम० चौधरी को प्रतिनियुक्त किया गया।

24. टोक्यो, जापान में 21 से 30 मार्च 1979 तक शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर हुई पहली एशियाई संगोष्ठी में शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र की प्रिंसिपल प्रो० श्रीमती विजया मुले ने भाग लिया।

25. 'एपीड' की छठी क्षेत्रीय परामर्श बैठक के सम्बन्ध में स्पेशल टास्क फोर्स की बैठक में, जो बैंकाक में 26 से 31 मार्च 1979 तक हुई, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के निदेशक डा० शिव कुमार मित्र ने भाग लिया।

26. यूनिसेफ-सहायता-प्राप्त परियोजना—'प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण'—के सम्बन्ध में फिलीपीन्स, थाईलैंड और मलेशिया में विकेन्द्रीकृत क्षेत्र नियोजन और शैक्षिक संसाधन विकास का अध्ययन करने के लिए भेजे गए शिष्टमंडल के सदस्यों के रूप में रा० शै० अ० और प्र० प० के संयुक्त निदेशक प्रो० अतीन्द्रनाथ बोस और पाठ्यपुस्तक विभाग की अध्यक्षा श्रीमती आदर्श खन्ना 21 मई से 11 जून 1978 तक के लिए प्रतिनियुक्ति पर गए।

27. टोक्यो और क्योटो में 22 से 30 जुलाई 1978 तक स्कूल-पूर्व शिक्षा पर हुए एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग में रीडर कुमारी इन्दिरा मलानी गईं।

28. एशिया और ओसनिया में शिक्षा के लिए यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक और थाईलैंड में 4 से 12 सितम्बर 1978 तक यूनेस्को द्वारा आयोजित स्कूल-पूर्व उम्र के बच्चों की शिक्षा के नए अभिगमों पर विशेषज्ञों की क्षेत्रीय बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग की रीडर डा० श्रीमती यू० बेवली ने किया।

29. "विज्ञान-शिक्षकों और गणित-शिक्षकों के बीच सहयोग" पर बीलफील्ड, पश्चिम जर्मनी में हुए सम्मेलन में विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के गणित-प्रोफेसर डा० मनमोहनसिंह अरोड़ा ने 17 से 23 सितम्बर 1978 के मध्य भाग लिया। इस सम्मेलन का प्रवर्तन सी० टी० एस०/आई० सी० एम० आई०, यूनेस्को ने किया था।

(घ) विशेष नियोजनों पर विदेश गए परिषद् के अधिकारी

1. शैक्षिक नियोजन के अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, पेरिस और यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक के संयुक्त संचालन में, शैक्षिक मूल्यांकन पर एशियाई

क्षेत्रीय प्रशिक्षण कोर्स में पढ़ाने के लिए रा० शै० अ० और प्र० प० के निदेशक डा० शिव कुमार मित्र 29-8-78 से 13-10-78 तक के लिए बैंकाक गए।

2. स्कूल-पूर्व शिक्षा में यूनेस्को परामर्शदाता के रूप में शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग की रीडर डा० श्रीमती आर० मुरलीधरन को माल्टा में एक महीने के लिए अगस्त 1978 में प्रतिनियुक्त किया गया। किंडरगार्टेन सहायकों के रूप में 71 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया।

3. विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग में गणित के प्रोफेसर डा० मनमोहन सिंह अरोड़ा गणित के विशेषज्ञ के रूप में यूनेस्को के एक नियोजन पर 1-1-1979 से एक महीने के लिए मनामा, बहरीन गए।

परिशिष्ट छ

1978-79 में परिषद् के प्रकाशन

(वि० का अर्थ विशेष सीरीज और पु० का पुनर्मुद्रण है)

(क) पाठ्यपुस्तकें

(i) अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकें

1. लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-I (वि०) क्लास I (पु०)
2. लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-II (वि०) क्लास II (पु०)
3. लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-III (वि०) क्लास III (पु०)
4. इंग्लिश रीडर-I (वि०) क्लास IV (पु०)
5. इंग्लिश रीडर-II क्लास V (पु०)
6. इंग्लिश रीडर III (वि०) क्लास VI (पु०)
7. इंग्लिश रीडर IV क्लास VII (पु०)
8. इंग्लिश रीडर V (वि०) क्लास VIII (पु०)
9. ए कोर्स इन रिटेन इंग्लिश क्लास XII
10. सिक्स वन ऐक्ट प्लेज क्लास XI (पु०)
11. इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर II क्लास XI
12. आन टाप आफ दि वर्ल्ड क्लास XII
13. डियर टु आल दि म्यूजेज क्लास XII
14. इंग्लिश रीडर पार्ट II (पु०) (कोर) क्लास XI

(ii) अंग्रेजी की अभ्यास-पुस्तिकाएं

1. वर्क बुक टु लेट आस लर्न इंग्लिश बुक I क्लास I (पु०)
2. वर्कबुक टु लेट अस लर्न इंग्लिश बुक II क्लास II (पु०)

3. वर्कबुक टु लेट अस लर्न इंग्लिश बुक III क्लास III (पु०)
4. वर्कबुक टु इंग्लिश रीडर I क्लास IV (पु०)
5. वर्कबुक टु इंगलिश रीडर बुक II क्लास V (पु०)
6. वर्कबुक टु इंगलिश रीडर III क्लास VI (पु०)

(iii) हिन्दी की पाठ्यपुस्तकें

1. बाल-भारती भाग I (संशोधित संस्करण) कक्षा I
2. अरुण भारती प्रवेशिका कक्षा I (अरुणाचल प्रदेश के लिए)
3. बाल-भारती भाग I कक्षा I (पु०)
4. बाल-भारती भाग II कक्षा II
5. आओ पढ़ें और समझें—मेरी तीसरी पुस्तक कक्षा III (पु०)
6. आओ पढ़ें और खोजें—मेरी पांचवी पुस्तक कक्षा V (पु०)
7. राष्ट्र भारती भाग III कक्षा VIII (पु०)
8. काव्य भारती कक्षा XI (पु०)
9. गद्य भारती कक्षा XI (पु०)
10. निबंध भारती कक्षा XI (पु०)
11. साहित्य शास्त्र परिचय कक्षा XI-XII
12. रंगिणी (संस्कृत) कक्षा XI-XII (पु०)
13. आख्यानिका (संस्कृत) कक्षा XII
14. आख्यानिका (संस्कृत) कक्षा XII (पु०)
15. हिन्दी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास कक्षा XII
16. कथा भारती कक्षा XII (पु०)
17. संस्कृत भाषा और साहित्य का इतिहास कक्षा XII
18. विविधा कक्षा XII (पु०)

(iv) हिन्दी की अभ्यास पुस्तिकाएं

1. बाल भारती भाग II की अभ्यास पुस्तिका कक्षा II
2. बाल भारती भाग II की अभ्यास पुस्तिका कक्षा II (पु०)

3. आओ पढ़ें और समझें की अभ्यास पुस्तिका कक्षा III (पु०)

4. आओ पढ़ें और सीखें की अभ्यास पुस्तिका कक्षा IV (पु०)

5. आओ पढ़ें और खोजें की अभ्यास पुस्तिका कक्षा V (पु०)

(v) गणित की पाठ्यपुस्तकें

1. मैथमेटिक्स फार प्राइमरी स्कूल बुक I क्लास I
2. इनसाइट इंटु मैथेमेटिक्स बुक II क्लास II (पु०)
3. इनसाइट इंटु मैथेमेटिक्स बुक III क्लास III (पु०)
4. इनसाइट इंटु मैथेमेटिक्स बुक IV क्लास IV (पु०)
5. इनासाइट इंटु मैथेमेटिक्स बुक V क्लास V (पु०)
6. मैथेमेटिक्स बुक II पार्ट I क्लास VII
7. गणित भाग II अनुभाग I कक्षा VII
8. मैथेमेटिक्स बुक II पार्ट II क्लास VII
9. मैथेमेटिक्स बुक II पार्ट I क्लास VII (पु०)
10. ज्योमेट्री पार्ट III क्लास VIII (पु०)
11. अरिथमेटिक अल्जेब्रा बुक III क्लास VIII (पु०)
12. मैथेमेटिक्स पार्ट II क्लास X (पु०)
13. गणित भाग II कक्षा X (पु०)
14. मैथेमेटिक्स बुक I क्लास XI
15. गणित पुस्तक I कक्षा XI
16. गणित भाग II क्लास XI (पु०)
17. मैथेमेटिक्स बुक III क्लास XII
18. गणित पुस्तक III कक्षा XII
19. मैथेमेटिक्स बुक IV क्लास XII
20. गणित पुस्तक IV कक्षा XII
21. मैथेमेटिक्स पार्ट II क्लास XI (पु०)

(vi) **विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें**

1. लर्निंग साइंस थ्रू एनवायरनमेंट क्लास IV
2. पर्यावरण से विज्ञान सीखना कक्षा IV
3. साइंस इज डूइंग क्लास V (पु०)
4. लर्निंग साइंस पार्ट I क्लास VI (पु०)
5. लर्निंग साइंस पार्ट II क्लास VII
6. आओ विज्ञान सीखें भाग II कक्षा VII
7. लर्निंग साइंस पार्ट II क्लास VII (पु०)
8. फिजिक्स पार्ट III क्लास VIII (पु०)
9. बायोलोजी पार्ट III क्लास VIII (पु०)
10. केमिस्ट्री पार्ट II क्लास VIII (पु०)
11. रसायन विज्ञान कक्षा IX-X (पु०)
12. केमिस्ट्री क्लास IX-X (पु०)
13. भौतिकी कक्षा IX-X (पु०)
14. फिजिक्स क्लास IX-X (पु०)
15. बायोलोजी पार्ट I वालूम II क्लास XI-XII
16. रसायन विज्ञान भाग II अनुभाग I कक्षा XI-XII
17. बायोलोजी पार्ट II वालूम II क्लास XI-XII
18. फिजिक्स पार्ट II वालूम I क्लास XII
19. बायोलोजी पार्ट II वालूम I क्लास XII
20. जीवविज्ञान भाग II अनुभाग I कक्षा XII
21. केमिस्ट्री पार्ट II वालूम I क्लास XII
22. फिजिक्स पार्ट II वालूम II क्लास XII
23. केमिस्ट्री पार्ट II वालूम II क्लास XII
24. रसायन विज्ञान भाग II खंड II अनुभाग I कक्षा XII
25. जीवविज्ञान भाग II खंड II अनुभाग I कक्षा XII
26. जीवविज्ञान भाग II खंड II अनुभाग II कक्षा XII
27. रसायन विज्ञान भाग II खंड II अनुभाग II कक्षा XII

28. फिजिक्स पार्ट II वाल्यूम II क्लास XII

29. भौतिकी भाग II अनुभाग I कक्षा XII

30. भौतिकी भाग II अनुभाग II कक्षा XII

(vii) **सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकें**

1. अवर कंट्री इंडिया बुक II क्लास IV (पु०)
2. हमारा देश भारत भाग II कक्षा IV (पु०)
3. शासन और संविधान कक्षा VII (पु०)
4. आस्ट्रेलिया एण्ड अमेरिका क्लास VII (पु०)
5. मेडीवल इंडिया क्लास VII (पु०)
6. माडर्न इंडिया क्लास VIII (पु०)
7. आधुनिक भारत कक्षा VIII (पु०)
8. यूरोप एण्ड इंडिया क्लास VIII (पु०)
9. स्टोरी आफ सिविलिजेशन (हिस्ट्री) पार्ट I क्लास IX
10. सभ्यता की कहानी (इतिहास) भाग I कक्षा IX
11. जेनेरल ज्योग्राफी आफ दि वर्ल्ड पार्ट II क्लास X
12. विश्व का सामान्य भूगोल भाग II कक्षा X
13. स्टोरी आफ सिविलिजेशन पार्ट II क्लास X
14. सभ्यता की कहानी भाग II खंड I कक्षा X
15. सभ्यता की कहानी भाग II खंड II कक्षा X
16. विश्व का सामान्य भूगोल भाग II कक्षा X (पु०)
17. ह्यूमन एण्ड एकोनोमिक ज्योग्राफी क्लास XII
18. मानव एवं आर्थिक भूगोल कक्षा XII
19. भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास कक्षा XI (पु०)
20. पोलिटिकल सिस्टम क्लास XI (पु०)
21. राजनीतिक व्यवस्था कक्षा XI (पु०)
22. भारत का भूगोल भाग I कक्षा XI (पु०)
23. ज्योग्राफी आफ इंडिया पार्ट I क्लास XI (पु०)

24. एवोल्यूशन आफ इंडियन एकोनोमी क्लास XI (पु०)
25. मेडीवल इंडिया पार्ट I क्लास XI (पु०)
26. मध्यकालीन भारत भाग I कक्षा XI (पु०)
27. इंडियन कांस्टीट्यूशन एण्ड दि गवर्नमेंट क्लास XII
28. मेडीवल इंडिया बुक II क्लास XII
29. मध्यकालीन भारत भाग II कक्षा XII
30. नेशनल एकाउंटिंग इन इंडिया क्लास XII
31. राष्ट्रीय लेखा पद्धति (अर्थशास्त्र) कक्षा XII
32. इंडियन कांस्टीट्यूशन एण्ड दि गवर्नमेंट क्लास XII (पु०)
33. इंडियन डेमोक्रैसी ऐट वर्क क्लास XII
34. भारत में लोकतन्त्र कक्षा XII
35. नेशनल ऐकाउन्टिंग इन इंडिया क्लास XII (पु०)
36. इंट्रोडक्शन टु इकोनोमिक थ्योरी क्लास XII
37. आर्थिक सिद्धांत का परिचय कक्षा XII
38. ज्योग्राफी आफ इंडिया पार्ट II क्लास XII
39. भारत का सामान्य भूगोल भाग II कक्षा XII
40. भारतीय संविधान और शासन कक्षा XII (पु०)
41. मध्यकालीन भारत भाग II कक्षा XII (पु०)
42. माडर्न इंडिया क्लास XII
43. आधुनिक भारत कक्षा XII
44. नेशनल ऐकाउन्टिंग इन इंडिया क्लास XII (पु०)

(viii) उर्दू में पाठ्यपुस्तकें/सहायक पुस्तकें

1. हम और हमारा देश क्लास III
2. माहौल के जरिए साइंस की तालीम क्लास III
3. हिसाब क्लास VI
4. साइंस सीखना पार्ट I क्लास VI
5. रियाजी क्लास VII
6. रियाजी क्लास IX

7. कीमिया क्लास IX

8. हयातियात क्लास IX

9. दुनिया का आम जुगराफिया क्लास IX

10. इन्सानी समाज की तारीक क्लास IX

11. हम और हमारी हुकूमत क्लास IX

12. कीमिया क्लास XI

13. तब्बियात क्लास XI

14. जुगराफिया की तबई बुनियाद क्लास XI

15. जुगराफिया के अमली काम की किताब क्लास XI

16. इब्तिदाई शुमारियात क्लास XI

17. अहदे गुस्ता का हिन्दोस्तान पार्ट I क्लास XI

18. इन्सानी और माहशी जुगराफिया क्लास XI

19. समाज शिनासी क्लास XI

20. जुगराफिया में मैदानी व तजर्बागाही तकनीक क्लास XI

21. हिन्दोस्तानी मईशत का इर्तिका क्लास XI

22. सियासी निजाम क्लास XI

23. हयातियात क्लास XI-XII पार्ट I वालूम I

24. अहदे गुस्ता का हिन्दोस्तान पार्ट II क्लास XI-XII

25. हयातियात पार्ट I वालूम II क्लास XII

26. तब्बियात पार्ट II वालूम I क्लास XII

27. इकबाल ; जिन्दगी, शख्सियत और शायरी

(ix) **सहायक पुस्तकें**

1. **बर्ड माइग्रेशन**

2. **दि फाइट अगेंस्ट डिजीजेज**

(ख) अनुसंधान ग्रन्थ और अन्य प्रकाशन

1. गाइडेंस सर्विसेज इन स्कूल्स
2. प्लेवे ऐक्टिविटीज
3. आयडिंटिफिकेशन आफ गिफ्टेड चिल्ड्रेन
4. गाइडेंस इन स्कूल्स
5. न्यू एजूकेशन पैटर्न
6. मैथड्स आफ टीचिंग होम साइंस
7. इफेक्टिव यूज आफ स्कूल करीक्यूलम
8. टीचर एजुकेशन करीक्यूलम
9. ऐनुअल रिपोर्ट 1977-78
10. वार्षिक रिपोर्ट 1977-78
11. रिफार्मिंग इक्जामिनेशन
12. मोबाइल टीम वर्कशाप इन करीक्यूलम डेवेलपमेंट
13. एरिक—सेकंड रिपोर्ट
14. करीक्यूलम इन ट्रांजैक्शन
15. अक्यूपेशनल लिटरेचर— ऐन ऐनोटेटेड बिब्लियोग्राफी-1978
16. इज इंटेलिजेंट इनहेरिटेड ?
17. डाक्यूमेंट्स आन स्कूल मारल एण्ड स्पिरिचुअल वैल्यूज इन एजुकेशन

(ग) पत्रिकाएं

1.	एन० सी० ई० आर० टी० न्यूजलेटर	अप्रैल 1978, मई 1978, जून 1978, जुलाई 1978, अगस्त 1978, सितम्बर 1978, नवम्बर 1978, दिसम्बर 1978, जनवरी 1979, मार्च 1979
2.	इंडियन एजुकेशनल रिव्यू	जनवरी 1978, अप्रैल 1978, जुलाई 1978, अक्तूबर 1978, जनवरी 1979
3.	स्कूल साइंस	मार्च 1978, जून 1978, सितम्बर 1978, दिसम्बर 1978 (प्रेस में), मार्च 1979 (प्रेस में)

4.	प्राइमरी टीचर	जनवरी 1978, अप्रैल 1978, जुलाई 1978, अक्तूबर 1978, जनवरी 1979, अप्रैल 1979 (प्रेस में)
5.	प्राइमरी शिक्षक	जनवरी 1978, अप्रैल 1978, जुलाई 1978, अक्तूबर 1978, जनवरी 1979, अप्रैल 1979 (प्रेस में)
6.	जर्नल आफ इंडियन एजूकेशन	जनवरी 1978, मार्च 1978, मई 1978, जुलाई 1978, सितम्बर 1978, नवम्बर 1978, जनवरी 1979 (प्रेस में)

1978-79 के दौरान निजी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों का कक्षानुसार विवरण

क्रम संख्या	कक्षा	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम
1.	III	वि एण्ड अवर कंट्री पार्ट I	फ्रैंक ब्रदर्स एण्ड कंपनी, दिल्ली
2.	III	हम और हमारा देश भाग I	फ्रैंक ब्रदर्स एण्ड कंपनी, दिल्ली
3.	III	लर्निंग साइंस थ्रू एनवाइरनमेंट	मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, नई दिल्ली
4.	III	पर्यावरण से विज्ञान सीखना	मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, नई दिल्ली
5.	VI	मैथेमेटिक्स	मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, नई दिल्ली
6.	VI	गणित	मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, नई दिल्ली
7.	VI	भारती भाग I	ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली
8.	VI	लैंड्स एण्ड प्यूपुल्स	आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली
9.	VI	देश और निवासी	आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली
10.	VI	हिस्ट्री एण्ड सिविक्स	आक्सफोर्ड एण्ड आई० बी० एच० पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली
11.	VI	इतिहास और नागरिक शास्त्र	आक्सफोर्ड एण्ड आई० बी० एच० पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली
12.	VI	संक्षिप्त रामायण	राजपाल एण्ड संस, दिल्ली
13.	VII	अवर कांस्टीट्यूशन एण्ड दि गवर्नमेन्ट	फ्रैंक ब्रदर्स एण्ड कंपनी, दिल्ली
14.	IX	वि एण्ड अवर गवर्नमेंट	आक्सफोर्ड एण्ड आई० बी० एच० पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली
15.	IX	हम और हमारा शासन	एस० चांद एण्ड कंपनी, नई दिल्ली

क्रम संख्या	कक्षा	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम
16.	IX	मैथेमैटिक्स	एस० चांद एण्ड कंपनी, नई दिल्ली
17.	IX	गणित	एस० चांद एण्ड कंपनी, नई दिल्ली
18.	IX	जेनेरल ज्योग्राफी आफ दि वर्ल्ड वालूम I एण्ड वालूम II	ऐलाइड पब्लिशर्स प्रा० लि०, नई दिल्ली
19.	IX	विश्व का सामान्य भूगोल, भाग I और भाग II	ऐलाइड पब्लिशर्स प्रा० लि०, नई दिल्ली
20.	IX	लाइफ साइंसेज	गोवर्संस, नई दिल्ली
21.	IX	जीव विज्ञान	गोवर्संस, नई दिल्ली
22.	XI	इंग्लिश टेक्स्टबुक (कोर)	फ्रैंक ब्रदर्स एण्ड कंपनी, दिल्ली
23.	XI	इंग्लिश सप्लीमेंटरी (कोर)	फ्रैंक ब्रदर्स एण्ड कंपनी, दिल्ली
24.	XI	फिजिक्स	आर्नोल्ड हीनमैन पब्लिशर्स प्रा० लि० नई दिल्ली
25.	XI	भौतिकी	गुरदास कपूर एण्ड संस प्रा० लि० दिल्ली
26.	XI	केमिस्ट्री	आर्नोल्ड हीनमैन पब्लिशर्स प्रा० लि० नई दिल्ली
27.	XI	रसायन विज्ञान भाग I व II	गुरदास कपूर एण्ड संस प्रा० लि० दिल्ली
28.	XI	अण्डरस्टैंडिंग सोसाइटी	महावीर बुक डिपो, दिल्ली
29.	XI	समाज को समझने की ओर	ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली
30.	XI	बायोलोजी	वाइली ईस्टर्न, नई दिल्ली
31.	XI	जीवविज्ञान भाग I व II	हेमकुंट प्रेस, नई दिल्ली
32.	XI	एलीमेंटरी स्टैटिस्टिक्स वालूम I एण्ड वालूम II	ऐलाइड पब्लिशर्स प्रा० लि०, नई दिल्ली
33.	XI	प्रारम्भिक सांख्यिकी भाग I और भाग II	ऐलाइड पब्लिशर्स प्रा० लि०, नई दिल्ली

क्रम संख्या	कक्षा	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम
34.	XI	फील्ड वर्क मैनुअल फार ज्योग्राफी	आक्सफोर्ड एण्ड आई० बी० एच० पब्लि० कं० नई दिल्ली
35.	XI	भूगोल का क्षेत्र कार्य	चिल्ड्रेन बुक हाउस, नई दिल्ली
36.	XI	फिजिकल बेसिस आफ ज्योग्राफी	पीताम्बर बुक डिपो, नई दिल्ली
37.	XI	भूगोल के भौतिक आधार भाग I व भाग II	पीताम्बर बुक डिपो, नई दिल्ली
38.	XI	ज्योग्राफी वर्क बुक	नीता प्रकाशन, नई दिल्ली
39.	XI	भूगोल की अभ्यास पुस्तिका	नीता प्रकाशन, नई दिल्ली
40.	XI	साइंस एण्ड सोसाइटी	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
41.	XI	हिन्दी प्रतिनिधि एकांकी	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
42.	XI	काव्य तरंगिणी	महावीर बुक डिपो, दिल्ली
43.	XI	हिन्दी प्रतिनिधि कहानियां	शिक्षा भारती, दिल्ली
44.	XI	पारिजात	चिल्ड्रेन बुक हाउस, नई दिल्ली
45.	XI	चयनिका	गोयल ब्रदर्स प्रकाशन, नई दिल्ली